Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीआनन्द-हेम-जैन-ग्रन्थमाला-ग्रन्थाङ्कः ५

वादिदेवसूरिपट्टालङ्कारश्रीरत्नप्रभसूरिविरचितंउपदेशमाला दोघट्टीवृत्तितः समुध्धृतं

श्रीजम्बूस्वामिचरितम् (प्राकृतं)

संशोधकः—आगमोद्धारकआचार्यश्रीआनन्दसागरसूरीश्वरशिष्य-आ. श्रीहेमसागरसूरिः

मुद्रयिताः—पादलिप्तपुरे श्रीबहादुरसिंहजी-मुद्रणालये अमरचन्द्र-बेचरदास.

प्रकाशकः—देवचन्द्रात्मजधनजीभाई झवेरी, मीरझा स्ट्रीट, मुम्बापुरी, नं. ३

सं. २०१३ पण्यम् १-८-० प्रथमावृत्तिः. प्रतयः २५०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनन्तलब्धिनिधानाय श्रीगौतमगणधराय नमः ।

॥ सिरिजंबूसामिचरियं ॥

इह भरहे मगहाविसय–भूसणो पुट्ठलट्ठगोट्ठगणो। अवितहनामो गामो, सुगामो आसि सुपसिद्धो ॥ १ ॥
तत्थासि तत्थवाणी अज्जवं अज्जवंति रट्ठउडो। रेवइ देवी दिन्नत्ति, रेवई नाम से भज्जा ॥ २ ॥
पढमो पुत्तो तीसे, भवदत्तो भवभयत्तचित्तो सो(जो)। अवरो उण भवदेवो त्ति, भावओ देवपूयरओ ॥ ३ ॥
सुट्ठियसूरिसमीवे, देसणापेऊसवरिससित्ततणू। भवदत्तो पव्वइओ, कयाइ नवजोव्वणत्थो वि ॥ ४ ॥
तत्थ य गच्छे एगो, साहू सूरीण वंदणं दाउं। विन्नवइ जामि सन्नायगाण वंदावणत्थमहं ॥ ५ ॥

अत्थि कणिट्ठो बंधू–उद्धुरपडिबंधबंधुरो धणियं। मइ दिट्ठे पव्वज्जं, पडिवज्जिस्सइ स सज्जो वि ॥६॥ गीयत्थे निग्गंथे, साहू सूरीहिं अप्पियसहाए। स विसज्जिओ समाणो गंतूण पुणागओ अइरा ॥ ७ ॥ पयपणउ पहुणो, विन्नवेइ वरिओ स तो न पव्यइओ। हसिऊण भवदत्तेण तो स एवमुवालद्धो ॥ ८ ॥ तुह बंधुस्स सुबद्धो, पडिबंधो साहु साहु निव्वडिओ। वरिओ विवाहिओ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वा थिरनेहो किं न पव्वयइ ॥ ९ ॥ भणियमणेण सिणिद्धो, लहुभाया तुह वि अत्थि भवदेवो। पेक्खिस्सामो पत्ते, तुममि तं पव्वइस्संतं ॥ १० ॥ भणियं भवदत्तेणं, जइ विहरिस्संति तत्थ भयवं तो। किंबहु वज्जरिएणं, तमिक्खसे दिक्खियं चेव ॥११॥ अह विहरंतो सूरीहिं, सह गओ सो कयाइ मगहाए। सन्नायगाण वंदावणत्थमणुजाणिओ गुरुणा ॥ १२ ॥ पत्तो सुगामगामे, भवदेवो सो तया य परिणीओ। नवपरिणीयाए नागिलाए मुहमंडणं कुणइ ॥१३॥ भवदत्तं दट्ठूणं, तुट्ठा माया पिया नाईओ। अइभूरिभत्तिभरनिब्भरा य पाए पणिवयंति ॥ १४ ॥ मुणिणा वि धम्मलाभं, दाउं सव्वेसिं तेसिं आपुट्ठं। सीलव्वयाण णावाह साहणं धम्मनिव्वहणं ॥ १५ ॥ आपुच्छिया य ते तेण, जामि वीवाहवाउला तुब्भे। पडिलाभयंति तो कप्पणिज्जभोज्जेहिं भवदत्तं ॥ १६ ॥ नववहुमुहमंडणवावडोवि पणमित्तुमेमि एसो त्ति। भणिऊणमेइ पणमेइ, मुणिवरं झत्ति भवदेवो ॥ १७ ॥ पत्तं पाणिंमि समप्पिऊणमेयस्स सो मुणी चलिओ। नियए उवस्सए सव्वनाइअणुगम्ममाणपहो ॥ १८ ॥ चलिओ महिलावग्गो, पढमं कइ-वयपयाइं अणुलग्गो। पुरिससमूहो पच्छा, पणमिय पणमिय पडिनियत्तो ॥ १९ ॥ भवदेवो वि समीहेइ, भाउणा भासिओ नियत्तेउं। असमत्थियमुहमंडणसमत्थण(उं)त्थं नववहूए ॥ २० ॥ विविहपएसे दंसेइ, रमिय चिरं वयमिओ नियत्तंता। जइ कहवि करेइ करे, पत्तं तत्तो नियत्तामि ॥ २१ ॥ सुणमाणो वयणाइं, तस्स मुणी गुरुसगासमल्लीणो। भणियं मुणीहिं अणुओ, किमज्ज दिक्खिस्सए एसो ॥ २२ ॥ मंडिय ढिक्किय सिंगारियं गओ जं तए सहाणीओ। भणियं भवदत्तेणं, किमन्नहा होइ मुणि-वाणो ॥ २३ ॥ सूरीहिं पुच्छिओ वच्छ! अवितहं इय किमाह तुह भाया। उवरोहेणं तेणवि, भणियं जं भणइ भाया मे ॥२४॥ पडिवज्जिय पव्वज्जो, सज्जो जाओ जई सलज्जाए। धरइ नवं पवज्जं, तणुणा हियएण पुण भज्जं ॥ २५ ॥ परियाय पारियायप्प-सूणमालाए सह वहंतो तं। धरइ वराओ एगत्थ, पंचगव्वं च मइरं च ॥ २६ ॥ तणए चिरायमाणे, जणयाई जोइऊण जणनि-वहो। घरमागओ वियाणइ, भवदेवो दिक्खिओ नूणं ॥ २७ ॥ चिरपालियपव्वज्जो, काले काऊणमणसणसमाहिं। भवदत्तो,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुहचित्तो, सोहम्मे सुरवरो जाओ ॥ २८ ॥ अवरो वि महपिया सा, अहंपि तीसे पियो त्ति घोसिंतो । स गओ सुग्गामम[१]व-सेउबंधणो नीरपूरोव्व ॥ २९ ॥ मह विरहदहणदाहेण, दीणदेहा हहा वराई सा । कह नायव्वा उव्वाह–कालमुक्का नवे पेम्मे ॥ ३० ॥ इय चिंतितो चेइयहरस्स चिट्ठइ दुवारदेसे जा । ता गामाउ एगा, उवागया इत्थिया तत्थ ॥ ३१ ॥ पूओवगरणपडलगपाणीए बंभणीए अणुसारिया । साहु त्ति वंदिओ पुच्छिओ य दोहि वि सुहविहारं ॥ ३२ ॥ पुच्छियमिमेण मे कहसु, साविगे ! अज्जंवंति रट्ठउडो । जीवेइ रेवई तह ताण वहू नागिला सा य ॥ ३३ ॥ चिंतियमेयाए कयाइ, होज्ज एसो स जेण ऊढाहं । पुच्छामि ताव एयं किं तेहिं पओयणं तुज्झ ॥ ३४ ॥ अयमाह अहं अज्जव–रेवइ अंगुब्भवो नणु कणिट्ठो । भवदेवो नामेणं, परिणीया नागिला य मए ॥ ३५ ॥ पियनियबंधवभवदत्तसाहुउवरोहओ मए विहिया । एत्तियदिणाणि दिक्खा, तमकयमुहमंडणं मोत्तुं ॥ ३६ ॥ भवदत्तो संपत्तो, संपइ सुरलोयमहमिहं तत्तो । तम्मुहकमलालोयणलालसहियओ समायाओ ॥ ३७ ॥ भणियमिमीए मयाणं, मायापियराण तुह बहुकालो । जीवइ अज्जवि सा नागिला उ सहिया महं चेव ॥ ३८ ॥

भव—तो तीए तुमं सव्वं, मुणसि सरूवं ति किंपि पुच्छामि । किंरूवरूवलावन्न–वन्निया किंवया तह सा ॥ ३९ ॥
श्राविका—जारिसियाऽहं दिट्ठा, तारिसिया सा न विज्जइ विसेसो । किं तीए कायव्वं, अव्वो तुह चारुचरणस्स ॥ ४० ॥
भव—परिणेऊणं तक्खणमेव, विमुक्का मए वराई सा । श्राविका—सुकयाहिं तीए मुक्का, भवविसवल्ली तओ सुक्का ॥ ४१ ॥
भव—सुहसीलसमायारा, सा किं पालेइ सावयवयाइं । श्राविका—पालइ न केवलं, अप्पणा हु पालावइ परंपि ॥ ४२ ॥
भव—अणवरयमेव सुमरामि, तं जहा मं तहा णु किं सा वि । श्राविका—साहु वि तुमं भुल्लो, सिवमग्गे सा वि किं तुल्ला ॥ ४३ ॥

१ अपगतसेतुबंधनो नीरपुर इव ।

भवदेवनागिलाप्रश्नोत्तराणि ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महिषीभूत-पुत्रप्रति-बोधः ।

चेइयहरसम्मज्जण–धवलीकरणाइवावडा निच्चं । सावयवयाइं भावइ, तवइ सुतिव्वं तवोकम्मं ॥ ४४ ॥

सुविहियसाहुसमीवे, उवएसरसायणं सया पियइ । वंदणपडिकमणा पच्चखाणपमुहेसु उज्जमइ ॥ ४५ ॥

भव—पेच्छामि ताव अच्छीहिं, श्राविका—तीए किं पिच्छियाए असुईए । अहव मए दिट्ठाए, सा दिट्ठा चेव किं बहुणा ॥ ४६ ॥

जा हं सा सा जा सा साहं, दोण्हवि न भिन्नओ अप्पा । भव—ता पभणसु किं तुममेव, साविगे ! नागिला होसि ॥ ४७ ॥

श्राविका—आमं अहं चिय सा नागिल त्ति पारूढपोढबंभवया । वसमंसपुरीसाईणपूरिया उल्लखल्ल व्व ॥ ४८ ॥

नियगुरुणीए कहियं, कहाणयं तुह कहेमि किंपि अहं । होऊण सावहाणो, अवहारसु साहु साहुखणं ॥ ४९ ॥

किर कोइ जिइंदिओ दिओ सज्जो मयभज्जो डहरगं दारगं गहाय तत्तओ नगरु(ग्गभ)ग्गओ निग्गओ घराओ । सो य मोक्खसोक्खमाकंखमाणसो साहुसमीवे सम्मं धम्मं निसम्म स(म)म्मविऊ संजायसम्मइओ पव्वइओ, पालेइ चक्कवालसमायारिं, करेइ किरियाओ कक्खडाजो । सो पुण से दारगो सीयभोयणऽरसविरसपाणगाणुवाहण–कक्खडसेज्जा–सिणाणाईसु सीयमाणो, खंत ! न सक्केमि सीयभोयणं भोत्तुं, खंत ! न सक्केमि अरसविरसाणि पाणगाणि पाउं, इच्चाइ जंपमाणो खंतेण कंचि कालं वट्टाविओ जयणाए । अन्नया भणाइ खंत ! विसमसरपसरजज्जरसरीरोऽहं न सक्केमि अविरइयाए विणा मणागंपि पाणे धारिउंति । तओ परिचत्तो । अलं मे असंजयजीवपडिजग्गणेण । यत उक्तम्—“ न वि किंचि अणुन्नायं, पडिसिद्धं वा वि जिणवरिंदेहिं । मोत्तुं मेहुणभावं, न तं विणा रागदोसेहिं ॥ ५० ॥ ” तओ गओ सो सहवासीणं सुमरिऊणं । एगस्स माहणस्स गेहे लग्गो कम्मगरवित्तीए, केणइ कालेण दिन्ना से दारिगा । विवाहकाले य पडियधाडीए निहणियं मिहुणगंपि । सो भोगपिवासिओ अट्टज्झाणवट्टमाणो कालगओ महिसो जाओ । सो वि से पियासाहू पंडियमरणेण मओ समाणो देवलोगे देवो जाओ । ओहिणा आभोएइ पुत्तं महिसरूवेण संजायं । देवमायाए कालविकरालथूलमहाकाएण सोगरिएणेगेण किणेऊण कओ सो अइभारारोविओ गि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

म्हमज्झन्हे अप्पणा चडेऊण निबिडलउडप्पहारेहिं पहणंतेण तेण तत्तवालुयापहे वाहेउमारद्धो। जाहे निल्लालियजीहो तत्तवालुया पुलिणे पडइ, ताहे निसट्ठं सट्ठेहिं ताडिऊणमुट्ठवेइ जाव पहाराइपीडाए पलायमाणपाणो वि व जाओ, ताव खंतरूवं काऊण देवो दंसेइ से अप्पाणं। भणइ 'खंत ! न सक्केमि तं च तं च काउं' ति। तं च पासमाणस्स तस्स कत्थ मए एरिसं रूवं दिट्ठ-पुव्वंति चिंत(ति)यंतस्स तयावरणिज्जकम्मक्खओवसमेण जायं जाईसरणं, तओ नियभासाए खंत ! परित्तायसु ममं मोयावेसु जमदूयाओ एयाओ त्ति वासेइ। तेण भणियं रे रे सोगरिगा ! मा मा मे खुड्डगं पीलेहि। तेण वुत्तं–तुज्झ वयणमेसो न सुणेइ। ताव अवसरसु ताव जेण बाहेमो वाहेमो य, जीवंतो कत्तो मे छुट्टिस्सइ। जाहे जाणिओऽणेण पडिवज्जिस्सइ मग्गंति ताहे अब्भत्थिएण मुक्को अणुसासिओ य देवेण ! दिट्ठभओ पडिवन्नो देसविरइं। कयभत्तपरिन्नाओ सोहम्मे कप्पे देवो जाओ। पिउणा नित्थारिओ तिरियदुग्गईओ। तुब्भाण पुण भाउणा भवदत्तेण देवलोगं गएण वि तुब्भे साहुरूवे दट्ठूण न पुणो पडिबोहणाय चित्तं कयं। अणिच्चे य जीविए तुब्भे पमत्ता कालं काऊणमासंसारं परिब्भमिहह। ता एत्ताहे वि नियत्तेह गच्छह गुरुसगासं। जओ—

"पच्छावि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति अमरभवणाइं। जेसिं पिओ तवो, संजमो खंती य बंभचेरं च॥ ५१ ॥" (दशवैकालिके अ० ४ गा० २८) एत्थंतरे तीए माहणीए दारगो पायसं भुंजिऊणं तत्थागओ। जायं कुओ वि कारणाओ वमणं। भणियं बंभणीए 'जाय ! जाइऊण तंडुलाईणि मए कओ पायसो एसो ता भुज्जो वि भुंजेसु, अइलट्ठं मिट्ठमेयंति ॥५२॥ भणियं भवदेवेण, धम्मसीले ! किमेमुल्लवसि। वंतासी अविसिट्ठो उच्चिट्ठो दुगुंछणिज्जो होउत्ति ॥ ५३ ॥ अह नागिलाऽवि पभणइ, तुमंपि किं नेव होसि वंतासी। वंतंपि मंसवसमेयनिम्मियं मं समीहंतो। ॥ ५४ ॥ चिरपालियपव्वज्जो, मुंचंतो तं न अज्ज लज्जेसि। जमवज्जकज्जसज्जं, अणीहमाणंपि मं महसि ॥ ५५ ॥ जह कोइ भिक्खभुक्खाहिं दुक्खिओ खोणिवित्तपत्तो वि। पुव्वावत्थं पत्थेइ, तह म(हं)मं तंपि पत्थेसि ॥ ५६ ॥ जह खीरिखज्जखज्जूर–खंडमंडाइ खाइ संतंपि। नहु दिव्वहओ छुहिओ वि, तह तुमं चरसि नो चरणं ॥५७॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुणिणा तिक्खाइं [१]वितिक्खियाइं दुक्खाइं गुत्तिगेण तए। जइ भावगुत्तिगो सहसि, ताइं ता [२]जयसि अहुणा वि ॥ ५८ ॥ एत्तियदिणाणि दिक्खा, दव्वेणऽज्जवि कुणेसु भावेण। अणुचलियावि हु अइवेगगामिणो हुंति किं न पुरो ॥ ५९ ॥ ता जाहि सव्वहा उव्वहाहि भावेण चारुचारित्तं। आलोइय दुच्चरिओ,[३] सिरिसुट्ठियसूरिपासंमि ॥ ६० ॥ अहयंपि साहुणीणं, पासे पव्वज्जमणुचरिस्सामि। इय तीए सिक्खिओ सो आउट्टो भणिउमाढतो ॥ ६१ ॥ अइ साविगे! सुमग्गो, उवइट्ठो सुट्ठु सुट्ठु तुट्ठोऽहं। निरु निरयअंधकूवे, निवडंतो ताइओ तुमए ॥ ६२ ॥ तं मह सहोयरी होसि, साविगे! गरुयरागभंगाओ। निम्माए य माया वा, निरयाइअवायरक्खणओ ॥ ६३ ॥ अहवा गुरुणी निस्सीमरम्मधम्मुज्जमप्पयाणाउ। ता ताव जामि एत्तो, तइ कहियत्थं समत्थेमि ॥ ६४ ॥ इय भणिय वंदिऊण, निप्पडिमाओ जिणाण पडिमाओ। भवभमणभूरिभीरू, भवदेवो सगुरुमल्लीणो ॥ ६५ ॥ आलोइय पडिकंतो, सुतिव्वतवतावतावियसरीरो। पंडियमरणं आ(रो)राहिऊण सोहम्मसुरलोए ॥ ६६ ॥ सोहम्मकप्पपहुणो, जाओ सामाणिओ समाणजुई। दिव्वाइं कामभोगाइं, भुंजए जावजीवंपि ॥ ६७ ॥ अह स भवदत्तदेवो, चविऊणं पुक्खलावईविजये। पुंडरिगिणिनयरीनाहवइरदत्तस्स चक्किस्स ॥ ६८ ॥ कुक्खीकुसेसयंके, कलहंसो विव जसोहरपियाए। आयाओ जाओ जलहिमज्जणे डोहलो समये ॥ ६९ ॥ सागरसरिसाए महानईए सीयाए सा महिड्ढीए। अवणीयडोहला चक्किणा, कया सह सयं गंतुं ॥ ७० ॥ पसवइ सुमुहुत्ते भूवलक्खअक्खूण लक्खणं तणयं। विहियं डोहलयाओ, सागरदत्तो त्ति से नामं ॥ ७१ ॥ उवचयमुवजाइ दिणे, दिणे य देहेणमविकलकलाहिं। परिणइ पसन्नलावन्नवन्नपुन्नाओ कन्नाओ ॥ ७२ ॥ अभिरमइ तारतारुन्नपुन्नदेहाहिं ताहिं सह निच्चं। पासायगओ पासइ, कयाइ सरयंमि मेहमयं ॥७३॥ कामकुसुमाणुगारी, होऊण कमेण पसरमाणो य। सरयघणो संजाओ, कलियखमंडलमहाभोगो ॥ ७४ ॥ असरिसपसरियपवमाण–पेल्लणुव्वेल्लमाणसव्वंगो। पसरणकमेण होऊण, खंडखंडाइओ नट्ठो ॥ ७५ ॥ इय जलहरोव्व अव्वो, अथिरो रज्जाइवित्थरो सव्वो। खणदि[४]ट्ठमिट्ठनट्ठं, धणजीवियजोव्वणाईयं

१ ति। २ जइ सि B, जायसि D। ३ य B। ४ दिट्ठनट्ठघिट्ठं B। दिट्ठनट्ठमिट्ठं D।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिवकुमार-स्य सागर-दत्तमुनि-समागमः ।

॥ ७६ ॥ ता जावऽज्जवि जज्जरइ, नो जरा देहपंजरं ताव । अइउज्जमेण जुज्झइ, मह पव्वज्जा पवज्जेउं ॥ ७७ ॥ इय चिंतिऊण-मणगारसामिणो अमयसागरगुरुस्स । पयमूले पव्वईओ, बहुपत्थिवपुत्तपरिवारो ॥ ७८ ॥ सुयसागरपारीणो, पावइ पावक्खवएण-मोहिवरं । नियचरणं चरमाणो, चरणे परिचरइ सुगुरूण ॥ ७९ ॥ चविय भवदेवदेवोवि, तंमि विजयंमि वीयसोगाए । पउमर-हरायवणमालदेविअंगुब्भवो जाओ ॥ ८० ॥ कय सिवकुमारनामो, अभिरामो जोव्वणुव्वणगुणेहिं । समवयरूवाहिं कुलुब्भवाहिं सह रमइ रामाहिं ॥ ८१ ॥ पुरनगरागरगामाभिराममहिमंडलंमि विहरंतो । सागरदत्तऽणगारो, पसमाऽऽहारो तहिं पत्तो ॥ ८२ ॥ अणुजाणाविय उग्गहमणुग्गहत्थं जणाणमुज्जाणे । समवसरिओ स वरिसेइ, देसणा अमयधाराहिं ॥ ८३ ॥ मासक्खवणं काऊण, पारणा. तेण सत्थवाहगिहे । विहिया हियावहेणं, जणाण पडिया य वसुहारा ॥ ८४ ॥ निसुणिय पारणपच्चप्पवंचपंचप्पयारदिव्वाइं । सागरसुसाहुसेवा–सूहवहिय पणमेइ सिवो ॥ ८५ ॥ तिपयाहिणपुव्वं, पायपंकए पणमिऊण पुरओ से । उवविसिउणं सद्धम्मदेस-णाऽमयरसं रसइ ॥ ८६ ॥ चउद्दसपुव्वी सो ओहिनाणवं केवलि व्व सव्वहियं । जिणधम्मरम्ममम्मं, गंभीरगिराए वाहरइ ॥८७॥ जं निरवाओ काओ, अभिरामाओ सकामरामाओ । अहिलसियकज्जसिद्धी फलमेयं पुव्वधम्मस्स ॥ ८८ ॥ फलपज्जंते एयस्स जइ जिओ अज्जिणेइ नवनवं । गयपाहेओ पहिओ व्व, तो स सोएइ परलोए ॥ ८९ ॥ विसय–कसाय–पमायप्पिसायमविसायमु-ज्झिऊण तओ । सयलसमीहियसज्जे, संजमरज्जे समुज्जमह ॥ ९० ॥ सिक्खियसिक्खादिक्खा, खणेण उक्खणियतिक्खदुक्खाइं । रोवेइ जीवथाणेसु, सग्गमोक्खाण सोक्खाइं ॥ ९१ ॥ रिसिमवसरंमि सो विन्नवेइ हरिसूससंतरोमंचो । मह तइ दिट्ठे उट्ठेइ, सुट्ठु तुट्ठी य पुट्ठी य ॥ ९२ ॥ तो कोवि पारभविओ, किमत्थि तइ मज्झ सयणसंबंधो । अह परिभावियसब्भूय, ओहिणा भणइ मुणिसीहो ॥ ९३ ॥ पत्तो तं तइयभवे, भवदेवो आसि मज्झ लहुभाया । जंबुद्दीवगभरहे, अकवडपडिबंधपडिबद्धो ॥ ९४ ॥ मह मणअणुवित्तीए, गहियवओ पालिऊण पव्वज्जं । जाओ सोहम्मसुरो, अहंपि तत्थवि थिरसिणेहो ॥ ९५ ॥ पुव्वभवब्भासाओ, मइ तुह सो संपयंपि पक्खुभिओ । मह गयरागस्स पुणोऽणुग्गहबुद्धी न उण नेहो ॥ ९६ ॥ भणइ कुमारो भयवं, अवितहमेयं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तओ समीहामि । इह वि भवे पव्वइऊण, पज्जुवासामि तुम्ह पए ॥ ९७ ॥ नवरं अम्मापियरो, पुच्छामि सुसामि ! नियहियट्ठाए । भणियं मुणिणा मा धेहि, धीर ! पडिबंधमेत्थ तुमं ॥९८॥ सगिहे स गओ विन्नवेइ, अम्मापिऊ वयट्ठाए । पभणंति ताणि तं चेव, वच्छ ! एगो सुओ अम्हं ॥ ९९ ॥ सरणं ताणं दीवो, तं चिय सग्गो व अहव अपवग्गो । तइ विरहियाणि अम्हे, पुत्तय ! अंधाणि बहिराणि ॥१००॥ तुह आयत्ता पाणा, अम्हाणं दिक्खिए तुमंमि तओ । घरघत्ति(छि)यससया विव, पुत्त ! पलायंति ते झत्ति ॥ १ ॥ बहु भणियाणि वि जा ताणि, नेव मुंचंति संजमाय तओ । सावज्जजोगविरओ, जइ व्व जाओ घिइसहाओ ॥२॥ न रमइ न जिमइ जंपेइ, नेव वेरग्गमग्गलग्गमणो । अंतेउरेगदेसे वसेइ सुन्ने जहा रन्ने ॥ ३ ॥ विविहपयारेहिं पयंपिओ वि पियरेहिं पउरपउरेहिं । जाव न मन्नइ सो किंपि, ताव रन्ना विसन्नेण ॥ ४ ॥ सद्दाविय सिट्ठिसुओ, दढधम्मो सावगो विवेग-निही । पयडियतत्तं वुत्तो, कुमरो जह जिमइ तह कुणसु ॥ ५ ॥ इय कुणमाणेण तए, जीवियमम्हाणमप्पियं होइ । जइसत्तीए जइस्सं ति, तस्स पासंमि सो जाइ ॥ ६ ॥ पविसइ निसीहियाए, इरियावहियं पडिक्कमिऊण । वंदइ दुवालसावत्तवंदणेणं जइजणं व ॥ ७ ॥ अणुजाणावित्तु पमज्जिऊण पासे सिवस्स उवविसइ । चिंतइ सिवो जइस्स व, मह विणओ णेण किं विहिओ ॥८॥ पुच्छामि ताव भो इब्भपुत्त ! सो वत्तिओ तए विणओ । जो सागरदत्तगुरूण, किज्जमाणो मए दिट्ठो ॥ ९ ॥ किमहमरिहामि तं ताण, पायपंकयपरागपरमाणू । स भणेइ भग्ग मोणारंभं दट्ठूण तं तुट्ठो ॥ ११० ॥ जइ वि जईण स जुज्जइ, तहावि किज्जइ तुहावि कज्जेण । विणओ धम्मस्स धुवं, भणिओ जिणसासणे मूलं ॥ ११ ॥ यतः—"मन्त्राः सतन्त्रास्त्रिजगत्पवित्राः, शुभप्र(दे)वेशाः स्थविरोपदेशाः । विद्याऽनवद्या त्रिदशौघवन्द्या, श्रयन्ति सन्तं सततं विनीतम् ॥ १२ ॥" जह जइजणस्स निस्समसंजमसंजायसुद्धलेसस्स । तह उचिओ कायव्वो, विणओ सुसावयस्सावि ॥ १३ ॥ जं पुण दुवालसावत्तवंदणं दिज्जए जइजणस्स । तं तुज्झ मए दिन्नं, भावजई जमसि संजाओ ॥ १४ ॥ न जिमसि न जंपसे, केण हेउणा भणइ सिवकुमारो । तो दढकयवयपरिणामस्सऽवस्सकायव्वमेयं मे ॥ १५ ॥ जावऽज्जवि पवज्जं, पवज्जिउं दिंति नेव पियराणि । णणु ताव भावसाहू, होऊण गि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हेवि निवसामि ॥ १६ ॥ अन्नं च सव्वसावज्जजोगसंजोगवज्जणुज्जुत्तो । कह सावज्जं भुंजामि, कह व जंपामि तेहिं समं ॥१७॥ भणियं दढधम्मेणं, सम्मं सद्धम्मनिच्चलो तं सि । कस्सऽन्नस्स वि एसा, भावारिजिए जयपडाया ॥ १८ ॥ पुण परिहरियाऽऽहारस्स, निव्वहिस्सइ न भावचरणंपि । आहारेणं देहो, धारिज्जइ जेण पडमाणो ॥ १९ ॥ चिरपालियपव्वज्जस्स, जुज्जए जीवियव्वपज्जंते । आहारपरिच्चाओ, अन्नह स लहिज्जइ न एसो ॥ १२० ॥ जे चिरकालं पालिंति, जीवियं संजमेण ते धन्ना । ता निरवज्जाऽऽहारो, होऊण गमेसु दिवसाइं ॥ २१ ॥ अणवज्जवाणिचेट्ठाए, चिट्ठ कोणे घरस्स पइरिक्के । अयमाह इमं मह, निव्वहेइ साहेज्जओ कस्स ॥ २२ ॥ सावज्जणवज्जाइं, जाणइ को वयणभत्तपाणाइं । ता मे कया निवित्ती, ताण पवित्ती कहं होइ ॥२३॥ दढधम्मो आह अहं, कुमार ! तुब्भाण साहुभूयाण । सीसोव्व सव्वमेत्तो, वेयावच्चं करिस्सामि ॥ २४ ॥ कप्पाकप्पपवंचे, चउरमई विहरिऊण समयंमि । अहमाणिस्सामि विसुद्धभत्तपाणाणि किं बहुणा ॥ २५ ॥ कुमरेण होउ एवंति जंपिऊण अभिग्गओ गहिओ । जावज्जीवं छट्ठाउ, पारणा अंबिलेणं मे ॥ २६ ॥ एवं सुतिव्वतवकम्मकारिणो पारणंबिलपरस्स । बारसवासाणि अइच्छियाणि गिहवासिणो तस्स ॥ २७ ॥ नवजोव्वणावि जं जायजामसीला गिहीवि महरिसिणो । ते कम्ममम्मसम्मज्जणुज्जया केवि ताण नमो ॥ २८ ॥ कयकायपरिच्चाओ, पंडियमरणेण बंभलोयंमि । दससागरोवमाऊ सामाणियसुरवरो जाओ ॥ २९ ॥ नामेण विज्जुमाली, जुइमाली अमरसुंदरीसाली । जिणसामिसमोसरणे, सुदेसणाओ सया सुणइ ॥ १३० ॥ उवभुंजिऊण भोगे, दिव्वे चविउं नियाऽऽउपज्जंते । जह रायगिहे जाओ, इब्भसुओ सो तहा कहिमो ॥ ३१ ॥ रायगिहे नयरे उसभदत्त इब्भो अहेसि गुणगरुओ । तस्सासि पिया सुइसीलधारिणी धारिणी नाम ॥ ३२ ॥ जिणधम्मधुराधारण-धुरीणि चित्ताणि ताणि त(म्मं)-प्पंति । निरवच्चयाणि अइचंगअंगअंगुब्भवस्स कए ॥ ३३ ॥ भणियं धारिणीए को नाम, रुवगव्वो सोहग्गमडप्फरो व को तासिं । को वा सुहासिया, कामिणीण जासिं सुओ नत्थि ॥ ३४ ॥ वेभारपव्वयासन्न-काणणे कामकोहमोहहरो । पंचमगणहारी हारहीरहासोवहासि जसो ॥ ३५ ॥ तरुणतरणि व्व तेएण, भव्वअंभोरुहाइं भासंतो । अह अन्नहा कयाई, सुहम्मसामी समोसरिओ

कुमारस्याहारग्रहणाय प्रज्ञापनं घोराभिग्रहश्च ।

॥ ९ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ३६ ॥ भडचडगरगुरुसामग्गिसंगओ उसभदत्तवरइब्भो। सह धारिणीभज्जाए, वंदणवडियाए नीहरिओ ॥ ३७ ॥ अंतरपहंमि मिलिओ, से समणोवासगो निमित्तविऊ। भणिओ किंनु चिराओ, दीससि जसमित्त मित्त! तुमं ॥ ३८ ॥ भणियमणेण समणाण, सव्वया पायपज्जुवासाए। अक्खणियमणस्स न कोइ, अवसरो अह कहसु एयं ॥ ३९ ॥ उव्वचियचिंतासंतावतत्तचित्त व्व भाउजाया मे। किमिमा सामेण मुहेण, दीसए साहसु महेयं ॥ १४० ॥ भणियमणेणं सयमेव किं न पुच्छेसि जेण वज्जरइ। तह चेव कए सा आह, साहु देवर! निमित्तं ते ॥ ४१ ॥ जं पुच्छियं वियाणसि, इत्थं को नाम नहि निमित्तन्नू। मह चित्त चिंतेऊण, ता सयं कहसु निद्देसं ॥ ४२ ॥ जसमित्तो मंतेऊण, तो खणं आइसेइ हुं नायं। उत्तमपुत्तमपुत्ता, विसन्नचित्ता समीहेसि ॥ ४३ ॥ सउणो सउणो लद्धो, सिद्धो च्चिय ते मणोरहो अहुणा। इह भरहे चरमो [1]केवली य तुह पुत्तओ होही ॥४४॥ केसरिकिसोरमुच्छंग–संगयं निग्गयं व चंदाओ। तं सुमिणंमि समिक्खसि, अचिराओ पच्चओ एसो ॥ ४५ ॥ तुह किंतु अंतराओ, अच्छइ तुच्छो स केणइ सुरेण। आराहिएण संतं, जाही जाणेमि तं न सुरं ॥ ४६ ॥ हरिसभरनिब्भरंगी, सह जसमित्तेण सा पयंपंती। सहसत्ति उसभदत्ताणुचारिणी काणणंमि गया ॥ ४७ ॥ तिपयाहिणपुव्वं, पणमिऊण पाए सुहम्मकेवलिणो। दोन्निवि दूरियदुरियाइं, देसणं ताइं निसुणंति ॥ ४८ ॥

तथाहि—"नृभवादिसर्वसामग्र्यमग्र्यमासाद्य शाश्वतसुखाय। यतनीयमसात[2]शताऽऽश्रिता हि गतयश्चतस्रोऽपि ॥ ४९ ॥"

आकृष्टिर्घटिकादतिसङ्कटमुखाच्छित्त्वा च भित्त्वा च सा, पाकः पावककन्दुकेषु कदनं काकश्च कङ्कादिभिः।
ज्वालाजालकरालसंज्वलदयःपुत्री दृढालिङ्गनं, कामेकां नरकावनीषु विषमामाचक्ष्महे वेदनाम् ॥ १५० ॥"

१ केवलीण ते अत्तओ होही B. C. D.। २ शि C, सिता श्रिता D।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

"तृष्णात्युष्णसरित्समीरशिशिरासाराग्निदाहादिभिर्व्याधिव्याधवधव्यथव्यतिकरत्वच्छेदनिर्लाञ्छनैः।
पृष्टे निष्ठुरभूरिभारभरकाऽऽरोपादिभिश्चार्दितास्तिर्यञ्चो विचरन्ति वञ्चिततराः सांसारिकैः सौख्यकैः ॥५१॥"

"दौर्भाग्यव्यतिषङ्गभङ्गुरगिरोः गार्हस्थ्यगर्हागृहं, ये दारिद्र्यमहाद्रिमुद्रितमुदो दास्यादिदीनाननाः।
संग्रामाग्रसमग्रविग्रहभिदा दोदूयमानात्मनां, मर्त्यानामपि चिन्त्यमानमुचितं किंचिन्न तेषां सुखम् ॥ ५२ ॥"

"हा कल्पद्रुमकेलिवापि-दयिताः किं नाम मां मोक्ष्यथ, स्थातव्यं हहहाऽत्र गर्भनरकेऽपीत्यादिमृत्यूदयात्।
देवानामपि पक्वदाडिमफलस्फोटं स्फुटत्यत्र यन्न स्वान्तं शतकोटिकोटिघटनानिष्टङ्कितं तत्त्वतः ॥ ५३ ॥

"आख्यातं दुःखमेतन्निखिलभवभृतां भूरि तत्त्यक्तुकामैः, कामं कल्प्या(ल्पो)ऽभ्युपायोऽनुपधिनिरवधौ सिद्धिसौख्येऽनुपाख्ये।
सोऽवश्यं शस्यतेऽत्र प्रगुणपरिणतिः शुद्धसद्धर्मसिद्धौ, दीक्षा शिक्षा च साक्षाज्जिनपतिगदिता चर्यतामार्यवर्यैः ॥ ५४ ॥

चिंतेइ धारिणी सव्वमेव जाणेइ भावं केवली भयवं। ता छिंदउ संदेहं, अहमणुकूलेमि कं देवं ॥ ५५ ॥ एत्थंतरंमि सामी, जंबुद्दीवस्स जंबुरुक्खंमि। विहियनिवासस्स अणाढियस्स वत्तव्वयं कहइ ॥ ५६ ॥ इह उसभदत्तइब्भस्स, आसि भाया भवाभिणंदिमणो। जिणदासो नामेणं, निरंतरं रमइ जूएणं ॥ ५७ ॥ किञ्च—"कौपीनं वसनं कदन्नमशनं शय्याधरा पांसुरा, जल्पोऽश्लीलगिरः कुटुम्बकजनो वेश्या सहाया विटाः। व्यापाराः परवञ्चनानि सुहृदश्चौरा महान्तो द्विषः, प्रायः सैष दुरोदरव्यसनिनः संसारवासक्रमः ॥ ५८ ॥" [1]भूरिमज्ज-मंस-हिंसा-वेसा-दुस्सीलया [2]वि न न वसणं। मन्ने जूयं एगं तु, वसणमेसिंपि जं मूलं ॥ ५९ ॥ सहिए(य)ण सह विवाए, जाए तेणाऽऽहओ ससत्थेण। मरमाणो अणुतावेणं, तावए तिव्वमप्पाणं ॥ १६० ॥ वसणासत्तो संतो, चत्तो दत्तेण जइवि सो आसि। पावा य [3]पावपाणीहिं, जेण जायइ पसंगो वि ॥ ६१ ॥ तहवि जिणदासपासे,

१ धु D। २ वि न वसणं C। ३ पावमाणाहिं C D।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धारिणी-
दोहदपूरणम् ।

तया दयाए समागओ उसभो । जह वच्छरेहिँ जेट्ठो, स तओ तह जं गुणेहिँ पि ॥ ६२ ॥ उक्तं च—" उपकारिणि वीतमच्छरे वा, सदयत्वं यदि तत्र कोऽतिरेकः । अहिते सहसापराधलब्धे, सदयं यस्य मनः सतां स धुर्यः ॥ ६३ ॥ " चरणग्गमग्गसंलग्गउत्तमंगो समग्गअंगेहिँ । विवसो वारंवारं, खामइ दुव्विणयमुसभं सो ॥ ६४ ॥ जं तुज्झ [1]भाय! न सुहाइ, तिव्वसंतावमुव्वहसि जेण । जं [2]वारसि आजम्मं, मए कयं तं चिय खमेसु ॥ ६५ ॥ धीरविओ तेण तहा, कहंपि जह तम्मओ इमो जाओ । पंचनमोक्कारपभावओ य भवणाहिवो मरिउं ॥ ६६ ॥ जाओऽणाढियनामो, महिड्ढिओ तारतेयवं तियसो । उव्वहइ पक्खवायं सया वि दत्ते सरलचित्ते ॥ ६७ ॥ इय देसणाऽवसाणे, पणमिय दत्तो नियं गिहं पत्तो । देवगुरुसंघपूयापरायणो गमइ दियहाइं ॥ ६८ ॥ सयमट्ठोत्तरमायंबिलाण मन्नेइ [3]धारिणी धीरा । सिरिजंबुदेवयाए, तह तन्नामेण सुयनामं ॥ ६९ ॥ अह चवि(य)उं बंभलोगाउ, भुत्तभोगो स विज्जुमाली सुरो । समए धारिणीगब्भंमि, आगओ जह गुहाए हरी ॥ १७० ॥ अह मयरायकिसोरं, सेयं सुमिणंमि पासिऊणेसा । पडिबुद्धा गंतूणं, तं साहइ उसभदत्तस्स ॥ ७१ ॥ पच्चारइ पच्चयमेस, तीए जसमित्तमित्तवुत्तंतं । परमपमोयपसन्ना, धन्ना सा वहइ अह गब्भं ॥ ७२ ॥ जिणपडिमापूयासुं, जइजणपडिलाहणाविहाणेसु । दुत्थियदीणुद्धारेसु, तीए तो डोहलो जाओ ॥ ७३ ॥ अगणियदव्वं दिंती, तह वरवत्थाइवत्थुवित्थारं । माणियडोहलया सा, जाया जाया ससिच्छाया ॥ ७४ ॥ पडिपुन्नेसु दिणेसुं, लग्गे लग्गे य सग्गुणसमग्गे । पसवइ पुत्तं सा कप्पपायवं पिव सुमेरुमही ॥ ७५ ॥ चेइहरचारुपूयापयार[4] पारंतनिब्भरजणोहं । तूररवाडंबरमत्तचित्तनच्चंतनारिगणं ॥ ७६ ॥ कारागारविसोहणसोहणदीणाइदाणरमणीयं । रिद्धं वद्धावणयं, काराविय मुसभदत्तेण ॥ ७७ ॥ पत्ते दुवालसाहे, साहू पडिलाहिऊण सुहविहिणा । नीसेसनाइनायरसायरदिज्जंतवरभोज्जं ॥ ७८ ॥ महया महूसवेणं, से नामं निम्मियं सुहमुहुत्ते । दिन्नो जंबूदेवेण, जंबुणामो त्ति तो होउ ॥ ७९ ॥ नवकप्पपायवो पाउणेइ पइवासरंपि जह वुड्ढिं । तह पंचधाइपरिवारपरिगओ जंबुणामो वि ॥ १८० ॥ अयमविकलमकलंकं, कलाकालवं कलेइ

१ ताय B । २ निवारयसि । ३ मोयगं द्रोणं । जंबूसुरस्स जायं तह D । ४ किज्जंत C ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सयलंपि । सह मित्तमंडलीए, सइ कीलइ काणणाईसु ॥ ८१ ॥ पुणरवि सुहम्मसामी, समागओ रायगिहपुरदुवारे । जंबुकुमारो जाणिय तदागमो निग्गओ नमिउं ॥ ८२ ॥ आरामसमोसरियं, पणमित्तुं पहुं पुरो निसन्नो य । हरिसियहियओ निसुणेइ, देसणं मउलियमगकरो ॥ ८३ ॥ लद्धूण माणुसत्तं चोल्लगदिट्ठंतदुल्लहं लोए । मा मा पमायमइरामत्ता विहलेह लेह फलं ॥ ८४ ॥ जेण मरुलहरिपिल्लियतरुपल्लवलोलमाउ जीवाणं । जोव्वणमुव्वणं मयणाभिरामरामा कडक्खचलं ॥ ८५ ॥ जरजज्जररुक्खो विव, काओ रोगाइपन्नगनिकाओ । रमणीओ विमणीओ, उरगाण व अइदुगेज्झाओ ॥ ८६ ॥ अइसयतरला लच्छी, वच्छच्छाया जहा अणत्थावि । पियजणसंजोगो जोवि, सो वि संपावियविओगो ॥ ८७ ॥ इय भवभावे परिभाविऊण सव्वेवि भंगुरसहावे । सासयसोक्खे मोक्खे, जुत्तो जत्तो सया काउं ॥ ८८ ॥ स पुणो पव्वज्जाए, अणवज्जाए पवज्जियाए भवे । बीएण विणा किं सा, लगेइ साली सुखेत्तेवि ॥ ८९ ॥ सा होइ कायराणं, सुदुक्करा तदियराण पुण सुकरा । सिवसुहमिहेव दंसइ, संतोससमाहिमंताण ॥१९०॥ पयपउमे पणमिय, विन्नवेइ गणहारिणं [1]गुणी स तओ । इच्छामि सामि! पासे, तुह पवज्जं पवज्जेउं ॥९१॥ आह पहू पडिबंधं, मा धीर! धरेहि पुण क्खणो दुलहो । भणइ स अम्मापियरो, अणुजाणावेमि ताव लहुं ॥ ९२ ॥ जावज्जीवाए ताव, बंभचेरे अभिग्गहं देह । पव्वज्जापारंभे, पणवोऽयं होउ आह पहु ॥ ९३ ॥ इय नियमिय स नियत्तो अदंभबंभव्वए कयपयत्तो । स घरं सिग्घं पत्तो, पियरे विन्नविउमाढत्तो ॥ ९४ ॥ निसुया सुहम्मसामिस्स, देसणा अज्ज तायमाय! मए । रहिया मणंमि सावज्जलेवलेवेण लीणव्व ॥९५॥ अइसुट्ठु जाय! जायं, जं कयमेवंति तेहिं संलत्ते । स भणइ पव्वज्जाए, अणुजाणह ता ममम्मियाणि ॥ ९६ ॥ इय निसुणिऊण मुच्छानिमीलियच्छाइं ताइं पिच्छीए । निवडियपावियपुणचेयणाइं जंपंति दीणसरं ॥ ९७ ॥ तं कप्पपायवो पुत्त!, अम्ह गेहंमि तं विणा हिययं । अइसयसुपक्कदाडिमफलं व ओफुट्टइ तडत्ति ॥ ९८ ॥ अणुलोमियाहिं पडिलोमियाहिं, पियरेहिं बहुपयारेहिं । पन्नविओ पन्नवणाहिं, जाव मन्नइ न तव्वयणं ॥ ९९ ॥ पभणंति ताव अव्वो, कयपरिण-

१ गुणी C गणी B ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यमंगलस्स मुहकमलं । तुह पिच्छिऊण होमो वच्छ ! कयत्थाइं सत्थाइं ॥ २०० ॥ जंपेइ जंबुनामो, माए ! मन्नामि सम्मयमिमं ते । कयपरिणयस्स जइ नाम, सम्मयं मज्झवि कुणेह ॥ १ ॥ तो धारिणीसमुदप्पियपमुहाणट्ठसत्थवाहाणं । पउमावइपमुहाणं, अट्ठण्हं सत्थवाहीणं ॥ २ ॥ वरइ अरं कन्नाओ, सुवन्नवन्नाउ अट्ठ धन्नाउ । समरूवजोव्वणाओ, उव्वणकंदप्पदप्पाओ ॥ ३ ॥ सिंधुमई पउमसिरी य, पउमसेणाय कणयसेणा य । देवभवभारियाओ, इमाओ ता चेव चत्तारि ॥ ४ ॥ अन्नाउ नागसेणा, कणगसिरी कमलवइ जयसिरी य । तेहिं विवाहो तासिं, महरिद्दिरिद्धीए पारद्धो ॥ ५ ॥ गुम(रु)गुमिरमद्दलुद्दामसद्दकुदंतकामिणीसमूहं । वित्तं पाणिग्गहणं, जंबूपहुणो कया पूया ॥ ६ ॥ कयकोउगमंगलो, सव्वालंकारभूसियसरीरो । सह ताहिं वासगेहे, गओ निसाए नववहूहिं ॥ ७ ॥ सिंहासणे निसण्णे, अट्ठहिं वरविट्ठरोवविट्ठाहिं । सहइ सह तत्थ ताहिं, पवयणमायाहिं धम्मो व्व ॥ ८ ॥

इओ य—जयपुरनरिंदविंझस्स, आसि अंगुब्भवो पभवनामो । पिउणा पहुस्स लहुणो, सुयस्स नियमप्पियं रज्जं ॥ ९ ॥ जयपुरपुरसेहरए, संजाए पत्थिवंमि पहुनामे । पभवो समाणमाणाओ, निग्गओ जयपुराहिंतो ॥ २१० ॥ विंझगिरिपायमूले, कडगनिवेसं कराविऊण ठिओ । सन्निहियसत्थगामाइलूडणाईहिं जीवेइ ॥ ११ ॥ जाणित्तु जंबुनामस्स, परिणयेणऽत्थलच्छिविच्छड्डं । रायगिहे रयणीए, उब्भडभडचडगरेण गओ ॥ १२ ॥ ओसोयणिविज्जाए, सोयाविऊण जणमसेसंपि । सो जाइ जंबुनामस्स, मंदिरे मेरुसिहरेव्व ॥ १३ ॥ तालुग्घाडणिविज्जाए, तालयाइं विहाडिऊण लहुं । विवरियसव्वदुवारे, पविसइ नियमंदिर व्व तहिं ॥ १४ ॥ घरहरघोरंतजणाहिं, जाव तेणा विभूसणाईयं । उल्लुंटणाय लग्गा, समग्गभंडारगाणं पि ॥ १५ ॥ नीसंकमाणसो तो, भणेइ सिंहासणे समासीणो । जंबूनामो भो मा, छिवेह पाहुणयजणमेयं ॥ १६ ॥ वयणेण तेण तेणा ते, सव्वे थंभिया तओ भवणे । चित्तलिहियव्व जाया, अहवा पाहाणघडिय व्व ॥ १७ ॥ पभवेण तओ दिट्ठो, उवविट्ठो ताहिं तारतरुणीहिं । सा(रय)-यरनिसायरो इव, गयणे ताराहिं परियरिओ ॥ १८ ॥ ते नियसुहडे अयमुब्भडे वि थंभेव्व थंभिए दट्टुं । बवइ चमक्कियचित्तो, सुपुरुस ! तं कोवि सुमहप्पा ॥ १९ ॥ जं अवसोयणिविज्जावज्जस्सं व ते न किंपि पहवेइ । दट्ठूण लुंटमाणे, न हु वहणट्ठाए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उट्टेसि ॥२२०॥ अहमवि भवामि पभवो, तणुब्भवो जयपुरेसविंझस्स। दिव्ववसाओ जाओ, चोराहिवई इहाऽऽयाओ ॥२१॥ पहवइ पहवस्सव मे, न किंपि तुह तेण मित्तमसि। एत्तो ओसोयणितालुग्घाडिणीउ मे लेहि विज्जाओ ॥ २२ ॥ अप्पसु अप्पणियं थंभणिं च जं भणसि तं च काहामि। पभणेइ जंबुनामो, सुण सुंदर! एत्थ परमत्थं ॥ २३ ॥ किमहं करेमि विज्जाहिं, अहव जायाहिं अज्ज जायाहिं। मणिरयणकणयकुंडल-किरीडपमुहंपि मे मुक्कं ॥ २४ ॥ अज्ज पभाए जाए, धणसयणाइ सव्व चाएण। धुवमेव सव्वसावज्जजोगविरइं करिस्सामि ॥ २५ ॥ अह पभवो विम्हयमाणमाणसो माण-सोय-परिमुक्को। उवसप्पिऊण पभणेइ, जंबुनामं परममित्तं ॥ २६ ॥ उवभुंजिऊण भोए, इमाहिं रामाहिं सह सकामाहिं। कयकज्जो सज्जो, उज्जमेसु पच्छा पवज्जेउं ॥२७॥ वज्जरइ जंबुनामो, विसयसुहं को पसंसए विउसो। इह मह सुण दिट्ठंतं, दिट्ठं तं दिव्वनाणीहिं ॥२८॥ अथ मधुबिन्दुदृष्टान्तः—

अटव्यां पर्यटन् कश्चित्, कदाचिन्मत्तदन्तिना। हन्तुं प्रधाव्य प्रारब्धो, दुर्धरेण नरो युवा ॥ २९ ॥ तस्मात्पलायमानेन, तेनान्धुर्ददृशे क्वचित्। पादौ वटस्य तस्यान्तर्लम्बमानश्च लक्षितः ॥ २३० ॥ दक्षत्वात्तत्र लग्नोऽसौ, कूपस्यान्तर्विलम्बते। पश्चादिभोऽपि प्राप्तोऽस्ति, शुण्डाग्रेण शिरः स्पृशन् ॥ ३१ ॥ प्रसारितमुखोऽधस्ताद्, ददृशेऽजगरो महान्। कदा मदाऽऽस्यपाती स्या-देषोऽत्रेत्यशनायितः ॥ ३२ ॥ विद्युल्लोललल्जिह्वाः, कालभ्रूचापसन्निभाः। सर्पाः सर्प्पन्ति तं दंष्टुं, चत्वारश्च चतुर्दिशम् ॥ ३३ ॥ खादतः पादमाखू तं, मूले नित्यं सिताऽसितौ। क्रमाद्ग्रहेऽस्य शैथिल्यमधःपाताय जायते ॥ ३४ ॥ दन्ती दन्तार्गलद्वन्द्वेनाऽऽहन्ति कुपितो वटं। तेनोड्डीनास्तनूं तस्य, तुदन्ति मधुमक्षिकाः ॥ ३५ ॥ मन्दं मन्दं मधुच्छत्रात्, स्यन्दन्तो मधुबिन्दवः। तैर्दिग्धां वीरुधं देहे, लग्नां लेढि लवं मुहुः ॥ ३६ ॥ तथाऽवस्थोऽपि मूढात्मा, मन्यते सुखमात्मनः। गजाऽजगरसर्प्पादीन्, तृणायापि न मन्यते ॥ ३७ ॥ कोऽपि स्वर्गी तमाह त्वामुत्तार्य व्यसनादितः। नन्दनादौ नयामि द्राक्, कुर्वे सद्भोगभाजनम् ॥ ३८ ॥ किं स याति मधुस्यन्दबिन्दुस्वादैकलम्पटः। दृष्टान्तोऽयमथैतस्मिन्, शृणु दार्ष्टान्तिकं ब्रुवे ॥ ३९ ॥ यः पुमानुदितस्तत्र, स जीवोऽत्र भवे भ्रमन्। याऽटवी स भवावासो, यः करी स परेतराट् ॥ २४० ॥ यः कूपः स नृणां जन्म, यः प्ररोहः स जीवितं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधस्तादजगरो यः, सेयं नरकदुर्गतिः ॥ ४१ ॥ ये चत्वारः पुनः सर्पास्ते कषायाः क्रुदादयः । श्वेताऽश्वेतौ च यावाखू, तौ पक्षौ मासि तादृशौ ॥ ४२ ॥ तदूमहे :बन्धशैथिल्यं, तदङ्गे जरसा स्फुटं । ये सङ्घाः सरघानां तु, व्याधयश्चाधयश्च ते ॥ ४३ ॥ याऽङ्गलग्ना लता लघ्वी, सा प्रिया प्रणयैकभूः । मार्द्वीकं यल्लतासक्तं, सुखं वैषयिकं हि तत् ॥ ४४ ॥ यः स्वर्गी व्यसनत्यागान्मुदे नयति नन्दनं । धर्माचार्यः स संसारत्यागान्नयति निर्वृतिम् ॥ ४५ ॥ इति मधुबिन्दुदृष्टान्तः ॥ नैवेच्छेद्व्यसनविनाशतः स सौख्यं मूर्खश्चेदमृतभुजा वितीर्यमाणं । तद्ब्रूहि प्रभव ! भवक्षयेण मोक्षमाकाङ्क्ष्याम्यहमपि दर्शितं मुनीन्द्रैः ॥ ४६ ॥ सुसखे ! वद जीव एष नृणां पशुरथवा पृथुसाहसेऽप्यशङ्कः । विषयसुखलवैकलम्पटात्मा, गुरुमपि गणयति यन्न दुःखशैलम् ॥ ४७ ॥ प्रभवः प्राह भो भ्रातः !, प्रत्यक्षं पितरौ तव । प्रेक्ष्यते त्वन्मयप्राणौ, प्राणितस्त्वां विना कथम् ॥ ४८ ॥ तवशापल्लवोल्लासाः, कान्ता एता यथा लताः । नैव स्युः कस्य हास्याय, त्वां विना निष्फलोदया ॥ ४९ ॥ जल्पितं जंबुनाम्नाऽथ, माता तातः सुतः सुता । कान्ता नैकान्तिकं किंचिद्भवेऽस्मिन् परिवर्त्तिनि ॥ २५० ॥ यथोक्तम्—अनाद्यनन्ते संसारे, केन केन न कस्य न । सम्बन्धो जन्तुना जन्तोः, केयं स्वपरकल्पना ॥ ५१ ॥ माता भूत्वा दुहिता, भगिनी भार्या च भवति संसारे । व्रजति सुतः पितृतां, भ्रातृतां पुनः शत्रुतां चैव ॥ ५२ ॥ परलोककथा यद्वा, दूरेऽस्त्वत्रैव वीक्ष्यते । मात्रादीनां परावर्त्तः, प्राणिनां क्लिष्टकर्मणाम् ॥ ५३ ॥ मित्र ! अवधानमाधाय, क्षणमात्रमिदं शृणु । ज्ञातमेकं तनूभाजां, महावैराग्यभागभाक् ॥२५४॥ अथ एकस्मिन् भवे सम्बन्धविचित्रेण कुबेरदत्त—कुबेरदत्तायुगलकथानकम्—

यथा—मथुरानगर्यां कुबेरसेना नाम्नी सुतनुलेश्या वेश्याऽभूत् । तस्याश्च प्रथमगर्भेण निर्भरायामगाधायां बाधायां जातायां जल्पितमम्बया, वत्से ! किममुना गर्भभारेण । केनापि प्रकारेण पातयाम्येनं किमस्माकमनेन व्यसनेन । असम्मते जाते तस्यास्तस्मिन्नर्थे प्रस्तावे जातं युगलकं–पुत्र पुत्रिका च । भणितमम्बया त्यज्यतामेतत् कृतमनेन वेश्याधर्ममर्मच्छिदा । प्रोक्तं कुबेरसेनया मातः ! उत्तालचित्ताऽसि यदि तवात्यन्तमेतत्कर्त्तव्यं तदा दिनदशकादूर्ध्वं कुर्व्वीथा यथारुचितम् । ततः कुबेरसेनया कुबेरदत्तः कुबेरद-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्येति दत्तनामाङ्के द्वे मुद्रिके निर्माप्य दशरात्रे जाते जातरूपरूप्यरत्नचीनांशुकादिपूरितायां मंजूषायां निक्षिप्तं मुद्रिकायुग्मयुक्तं युगलकम् । प्रवाहिता सा जातायां यामिन्यां यमुनानिम्नगायां । भवितव्यतावशाच्च प्रवहन्ती प्रत्यूषे मञ्जूषा शौरिकपुरवास्तव्यश्रेष्ठिद्वयेन शौचाऽऽचमनकृते प्राप्तेन प्रेक्षिता स्वीकृता च । उद्घाट्य दृष्टमेतद्‌द्वितयं द्वितयेन । कालिन्दीदेवतया दत्तमेतदस्माकमिति गृहीतः कुबेरदत्त एकेनान्या चान्येन । जातौ च तौ क्रमेण वर्धिष्णू । ततो नवीनयौवनिकानिकामरामणीयकरञ्जितहृदयाभ्यां ताभ्यामिभ्याभ्यां सुसदृशरूपरेखाविशेषो विशेषफलवानस्त्विति कृतस्तयोरेव परिणयः । द्वितीयदिने दम्पतिभ्यां ताभ्यामारब्धायां सारिक्रीडायां सारिता कुबेरदत्तेन ग्रहणके नामाङ्का मुद्रिका । कुबेरदत्तायास्तामालोकयन्त्याः स्वमुद्रिकानिर्माणनाम्नोः संवादमुभयाकारसौसदृश्यं च विमृशन्त्याः संजज्ञे विकल्पः कदाचिन्मम सहोदरोऽयं स्यात् । न चैनं प्रति परिरम्भारम्भसंरम्भो मे मानसस्य न चास्यापि मां प्रति । तद्भवितव्यं विधिसंविधानेन केनाऽप्यत्र ॥ "पारयति यन्न कश्चित्, कर्तुं न मनोऽपिऽत्र जंघालम् । उपनयति तदपि दैवं, शुभमशुभं वा किमाश्चर्यम् ॥ २५५ ॥" ततो विच्छिद्य सद्यो द्यूतक्रीडां मुद्रिकाद्वितं कुबेरदत्तहस्ते वितीर्य गता सा मातुरन्तिके । शपथशतदाननियन्त्रितकृत्वा पृष्टा सा तया तवोदरजाता देवतादत्ता वा दुहिताऽहं स्यामिति । निवेदितो मात्रा यथावृत्तो वृत्तान्तस्तस्यै । तयापि प्रवेदितो विषण्णमनस्कया सर्वः कुबेरदत्ताय । (३००० A. ३६४८ B. D. ग्रं०) तेनापि मुद्रिकाद्वयदर्शनोत्पन्नतथावितर्केण तथैवानुयुक्ता स्वमाता तमेवोदन्तमवादीत् । अनुचिताचाराग्निशोचिःसंचया(वा)चान्तचेताश्च स्वमातरपितरयोः संमुखमाख्यत्—अनुचितमाचरितं युवाभ्यां यदविदितसन्तानतत्त्वयोरावयोर्विवाहो विहितः, परं नाद्यापि परस्परपाणिस्पर्शातिरेकेण कोऽपि दोषः प्रादुरासीदिति विसृज्यतामेषा स्वपितृगृहे । गृहीताऽऽत्ममुद्रा, गता तत्र तेनैव निर्वेदेन रुदतोः पित्रोः प्राव्राजीत् । मुद्रिकां च तां गोपायितां स्वपार्श्वे एव व्यधाषीत् । निशितासि तीव्राणि तपांसि तप्यमानायाश्च तस्या अवधिज्ञानमुदपादि । तदाऽऽभोगेन भावयन्ती पश्यति कुबेरदत्तं व्यवहारगत्या मथुरापुरीप्राप्तं कुबेरसेनानाम्न्या स्वमात्रा सह संवसन्तं । तदुदरोपजातं चाङ्गजं तेनोत्संगीकृतम् । ततश्चिन्तितमनया—अहो अज्ञानविजृम्भितम् । अहो अविरतिविडम्बना । अहो अविवेकातिरेकः । अहो विषयकिम्पाकपा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कस्य विपाकः । तत्तावदुत्तारयामि पापान्धकूपकोटरात् कथंचिदेतमिति विचिन्त्य प्रवर्त्तिनीमनुज्ञाप्य प्राप्ता सा मथुरायाम् । तस्थाव-ज्ञातचर्यां याचितकुबेरसेनार्प्पितस्वसद्मैकदेशे । कुबेरसेनाऽपि स्वबालकमार्यिकान्तिके निक्षिप्य स्वव्यापारपरायणा यावदास्ते तावत्त-स्यास्तत्पार्श्वे विशिष्टविष्टरोपविष्टकुबेरदत्तस्य च प्रतिबोधाऽऽधानधिया बालकमुपलालयन्ती जजल्पैषा । त्वं बालक ! [१]भ्राता [२]भ्रातृव्यो [३]देवरः [४]पुत्रः [५]पितृव्यः [६]पौत्रश्चासि मे । यस्य च पुत्रस्त्वमसि सोऽपि [१]भ्राता [२]पिता [३]पुत्रो [४]भर्त्ता [५]श्वशुरः [६]पितामहश्च मे । यस्याश्च गर्भात्प्रादुरभूद्भवान् साऽपि [१]माता [२]श्वश्रूः [३]सपत्नी [४]भ्रातृजाया [५]पितामही [६]वधूश्च मे । कुबेरदत्तेनेदमाकर्ण्य साक्षेपमाचचक्षे, आर्ये ! किमसमञ्जसमुल्लपसि परस्परव्याहतव्याहारो हि नार्हतदर्शने कस्यापि दृश्यते । आर्या व्याजहार-श्रावक ! मा मामेवमाक्षिपः । सर्वं तथ्यं पथ्यं सूपपादं चास्मि वच्मि । नहि दृष्टेऽनुपपन्नं नाम । अवधिज्ञानेन हि ज्ञातोऽयमर्थो मया तथाहि—१ भ्राताऽयं मे बालक-एकमातृकत्वात् । २ भ्रातृव्यो-भ्रातृपुत्रकत्वात् । ३ देवरो-भर्तुरेकमातृजातलघुभ्रातृत्वात् । ४ पुत्रो-भर्त्तुः पुत्रत्वात् । ५ पितृव्यो-मातृभर्तुर्भ्रातृत्वात् । ६ पौत्रश्च-सापत्नपुत्रस्य पुत्रत्वात् । १ बालकपिताऽपि मे भ्राता-एकमातृजात-त्वात् । २ पिता-भ्रातुः पितृत्वात्, मातुर्भर्तृत्वात् । ३ पुत्रः-सपत्न्या संजातत्वात् । ४ भर्ता-तेन परिणीतत्वात् । ५ श्वशुरः-श्वश्रूभर्त्तृत्वात् । ६ पितामहश्च-पितामह्याः पतित्वात् । यस्याश्च गर्भादभूदयं बालकः सा मे—१ माता-जन्मनिमित्तत्वात् । २ श्वश्रूः-भर्त्तुर्मातृत्वात् । ३ सपत्नी-भर्त्तुः कलत्रत्वात् । ४ भ्रातृजाया-भ्रातुर्भार्यात्वात् । ५ पितामही-जनकमातृत्वात् । ६ वधूश्च-सापत्न-पुत्रस्य भार्यात्वात् । सम्बन्धाष्टादशकसूचिके गाथे यथा—[१]भाय [२]भत्तिज्ज [३]पित्तिव्वो, [४]महपोत्तो [५]देवरो [६]सुओ सि तुमं । तुज्झ पिया य [१]पियामह, [२]पइ [३]भाय [४]सुओ [५]ससुर [६]जणओ ॥ २५६ ॥ माया य तुज्झ बालय ! मह [१]जणणी [२]सासुया [३]सवक्की य । [४]वहु [५]भाउज्जाय [६]पियामही य एत्थेव जम्मम्मि ॥ ५७ ॥ कुबेरदत्तेन संजातसंसारवैराग्येण कुबेरसेना प्रतिबोधविधानाय प्रोक्तमार्ये ! विशेषतो ज्ञोप्साम्येनमर्थं ततो निबिडव्रीडाजाड्यवान् शुश्रूषते । आर्यिकाऽपि मुद्राद्वयं संवादयन्ती कुबेरसेनाजठरयुगल-जन्मतः प्रभृति प्रत्यपीपदत् । कुबेरदत्तस्तदाकर्ण्य संजातसंवेगवैराग्यवेगश्चिन्तयामास । धिगज्ञानं मे येनेदृशमकार्यं कार्यं स्म । 'अज्ञानं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खलु कष्टं, क्रोधादिभ्योऽपि सर्वपापेभ्यः । अर्थं हितमहितं वा, न वेत्ति येनाऽऽवृत्तो लोकः ॥ ५८ ॥ ईदृश नव्यविगोपककज्जलपङ्कप्रलेपसंपर्कात् । मुखमपि दर्शयितुमहं शक्नोमि न हन्मि तत्किं स्वम् ॥ ५९ ॥ आर्ये ! यामि प्रविशामि, साम्प्रतं प्रज्वलज्वलनराशौ । कथमन्यथा मम स्यात्, पातकतो मोक्ष ईदृक्षात् ॥ २६० ॥ आर्या वक्ति श्रावक !, धर्मश्रद्धाप्रधान ! तेऽनुचितः । स्ववधः पापकृते यज्जिनेन्द्रदीक्षां जिघृक्षस्व ॥ ६१ ॥ ततस्तद्वचनात्स प्रव्रज्य तीव्रतपश्चर्याचारुचरित्रचातुरीमाचर्य स्वर्गमगमत् । कुबेरसेनाऽपि प्रतिपन्नोपासकव्रतव्राता श्राविका जाता । कुबेरदत्तार्यिकाऽपि प्रवर्तिनीपार्श्वमासाद्य संयमसाम्राज्यमाराधयामास । 'एतामहो भुवि भवस्य वयस्य शोच्यां, सम्यग् विचारय चिरं कुचरित्रचेष्टाम् । चित्तं द्विधा भवति चिन्तयतोऽपि यां मे, तज्जातिभिः किमिह कार्यमनार्यचर्यैः ॥ ६२ ॥ प्रभवेण ततो जल्पितमुत्पादय तावदत्र पुत्रमहो तद्रहितस्य पितॄणां प्रेत्य गतिर्नास्ति तृप्तिर्वा । 'गदति स जंबुनामा, न नाम सत्यं त्वयेदमप्युदितं । निजनिजकर्मायत्ता, भवति गतिः (का) क्वापि कस्यापि ॥ ६३ ॥ मिथ्याभिनिवेशोऽयं मिथ्याशास्त्रोपदेशजः पुंसां । द्विजभोजनात् पितॄणां, तृप्तिः सम्पद्यते सद्यः ॥ ६४ ॥ हविरग्निमुखे क्षिप्तं, पिशितं विप्रानने तु तृप्त्यै स्यात् । क्रमशो देवपितॄणां, व्यधिकरणमिदं कथं घटते ॥ ६५ ॥ अथ महेश्वरदत्तकथानकम्—

शृणु पुत्रेण पितॄणां परित्रया तत्र मत्कथामेकां । निगमोऽत्र ताम्रलिप्त्यां, स महेश्वरदत्त इत्यासीत् ॥ ६६ ॥ तस्य समुद्रस्तातो, माता बहुलेति वित्तरक्षादौ । तत्परचित्तौ द्वावपि न धर्मवार्तामपि विधत्तः ॥६७॥ सततार्त्तवर्त्तिचित्तो मृत्वा महिषस्तयोः समुद्रोऽभूत् । मायाबहुला बहुलाऽपि, मृत्युमाप्ता शुनी सदने ॥ ६८ ॥ तदनु निरङ्कुशवृत्तिः, संजाता स्वैरिणी वधूरनयोः । परपुरुषपरीरंभैका, लोलुभा गङ्गिला नाम्नी ॥ ६९ ॥ निशि रमयन्ती ज्ञाता, छन्ने प्रच्छन्नकामुकं पत्या । उपपतिरसिना तेनाऽर्द्धमारितो निस्सरन्विहितः ॥ २७० ॥ कतिपयपदानि गत्वा, प्रहारपीडापराहतोऽपतत् । अनुतापतप्तचेताः, परासुरासीन्मनाक्सुमनाः ॥ ७१ ॥ तत्कालभुक्तकुलटागर्भेऽभवदात्मवीर्यसंयोगे(गात्) । अङ्गोद्भवो महेश्वरदत्तस्यातिप्रियोऽजनि सः ॥ ७२ ॥ क्रियमाणेऽथ कदाचन सांवत्स-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रिके पितुः समुद्रस्य । क्रीत्वा हत्वा महिषः स संस्कृतः स्वजनभुक्तिकृते ॥ ७३ ॥ उत्संगीकृतपुत्रो, महेश्वरो यावदत्ति तन्मांसं । क्षिपति पुरस्ताद्बहुलाशुनिकायै तस्य चास्थीनि ॥ ७४ ॥ तावन्मासक्षपणस्य पारणे साधुरागतस्तत्र । पश्यति तं वृत्तान्तं, ज्ञानविशेषेण लीनमनाः ॥ ७५ ॥ धूत्वा शिरो नखच्छोटिकां च दत्त्वा महामुनिर्न्यवृतत् । अगृहीतभिक्ष एव, क्षणेन येनाऽऽजगाम पथा ॥ ७६ ॥ चिन्तयति स्म महेश्वरदत्तो ज्ञातेङ्गितो यतेस्तस्य । अनुपदलग्नोऽपृच्छत्, प्रणम्य पादौ स्वगृहकुशलम् ॥ ७७ ॥ किं न गृहीता भिक्षा, भगवन्? मुनिराह कल्पतेऽस्माकं । न खलु पिशिताशिवेश्मनि, महेश्वरः प्राह को हेतुः ॥ ७८ ॥ मुनिराह महादोषं, मांसास्वादनमधर्मतरुमूलं । स्थलचरखचरादीनां, जीवानां येन वधहेतुः ॥ ७९ ॥ विक्रीणीते क्रीणाति, पोषयेन्मारणाय यो जीवान् । तत्पिशितं संस्कुरुते, भक्षयति स घातकः सर्वः ॥ २८० ॥ भवति यथा शाकिन्याश्विखादिषा मानुषाङ्गमालोक्य । पिशिताशिनां तथा विश्वदेहिदेहान् विलोकयताम् ॥ ८१ ॥ यः परलोकं कर्माणि, मन्यते कोऽपि तेन मननीया । हिंसाऽहिंसा विरतिश्च, पाप्मने श्रेयसे क्रमशः ॥ ८२ ॥ तेन न भिक्षे भिक्षां, मांसाशिकुलेष्वहं जुगुप्सावान् । भवतो गृहे विशेषादित्युक्त्वा स स्थितस्तूष्णीम् ॥ ८३ ॥ मुहुरनुयुक्तः पदपद्मयुग्मपरिपर्युपास्तितात्पर्यात् । कथयितुमारेभे, तस्य मातृपित्रादिवृत्तान्तम् ॥ ८४ ॥ पितृमहिषमांसमशित्वमस्य वत्सरदिने प्रसूः शुनिका । पत्युरस्थीनि भक्षयति, पुत्रमङ्के वहसि शत्रुम् ॥ ८५ ॥ इत्याकर्ण्य महेश्वरदत्तः संवेगमागतः परमं । तस्य मुनेः पादान्ते, दीक्षां शिक्षां च जग्राह ॥ ८६ ॥ ज्ञाता तदेवं प्रभव !, त्वयासौ पुत्रात्परित्रास्ति परत्र यादृक् । तत्किं सखे ! पुत्रविधित्सयैतां, त्यजामि दीक्षामृतपानलीलाम् ॥ ८७ ॥ एत्थंतरे पियवियोगदुक्खंतरियलज्जाए कडक्खसज्जाए जंपियं जेट्ठभज्जाए सिंधुमईए । सामि ! को नाम तुम्हाणमेत्तिओ परलोयसोक्खाय दिक्खाअक्खेवो, उवभुंजेसु तावेयं महाभोगं भोगसुहं, मा ते मयरदाढाए व्व उभयाऽभावाओ पच्छुत्तावो भविस्सइ । भणियं जंबुणामेण—"बाले ! लीलामुकुलितममी मन्थरा दृष्टिपाताः, किं क्षिप्यन्ते विरम विरम व्यर्थ एष श्रमस्ते । सम्प्रत्यन्ये वयमुपरतं बाल्यमास्था भवान्ते, क्षीणो मोहस्तृणमिव जगज्जनमालोचयामः ॥ ८८ ॥" यद्वा कथय कहानकं तावत् । तओ अहोमुही कहिउमारद्धा, अह मयरदाढाकहाणयं—

महेश्वरदत्तज्ञातम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जयंतीए घणावहो सत्थवाहो तस्स सुधणो नाम विहियविणओ तणओ। सो य सयलकलावपारावारपारीणो जाणिऊण पिउणा पेसिओ पराए रिद्धीए ववहारत्थमुज्जेणीए। तत्थ विविहं ववहरमाणो कयाइ कामपडायाए नाम निग्गयाए वेसाए पत्तो पासाए। तीए य तेहिं तेहिं पयारेहिं तहा विहिओ जहा थेवदिवसेहिं जाओ तम्मओ। जन्नुज्जाणियाइ कज्जसज्जाए य महामायाए मयरदाढाए अक्काए कमेणमाणाविओ सव्वंपि दव्वं सपासाए। अवहरियसव्वसारो जाओ त्ति जाणिऊण दिट्ठो अक्काए अवन्नाए। कामपडायाए पासाए पवेसंपि अपावमाणो गलियाभिमाणो निग्गओ गेहाओ। चिंतेइ य। नेहनिहाणं तीए लक्खा मुद्दाहिं मुद्दियंपि मए भरियंपी तहा जायं, (हा) ही रित्तं झत्ति कत्तो वि ॥८९॥ नेहेण व देहेण व, दव्वेण व अप्पिएण सव्वेण। कस्सवि न होइ एसा, वेसा वेसत्ति जुत्तमिणं ॥ २९० ॥ जुत्तं च वुत्तं केणवि—“अन्नु खाइ अन्नु गलि लग्गइ, अन्नु जंतु वेपन्नइं मग्गइ। कुडिलकालकोमलघणकेसहि, नालियमनपत्तिज्ज(सि)हि वेसहि ॥ ९१ ॥” अंखिहि रोयइ मणि हसइ, जणु जाणइ सउ सच्चु। वेस विसिट्ठह तं करइ, जं कट्ठह करवत्तु ॥ ९२ ॥ जं कट्ठह करवत्तु करइ, खरदंतखिवंतउ। तं जि विसिट्ठह वेसलोउ, कवडिण जंपंतउ ॥ ९३ ॥ जणु जाणइ सउ सच्चु मूढु परमत्थु न जोयइ। हियइ मुलुकहि हसइ, वेसओ अंखिहि रोयइ ॥ ९४ ॥ परिवारेण हक्कारिज्जंतो वि लज्जाए जयंतीए जाइउं न पारेइत्ति। गासवासाइ मेत्तंपि अपाविंतो परिवारो धणावहस्स पासे ॥९५॥ असेसो वि वुत्तो, वुत्तंतो पुत्तस्स अइदुहिओ धणावहो आहंसु। अच्छउ दूरे दुरप्पा किं तेण, वेसावसणिणा परिभणियं परिवारेण ॥ ९६ ॥ अविनीतेष्वपि विमुखाः, सन्तो नो स्वोपजीवकेषु स्युः। वत्सव्यथितेऽप्यूधसि, सुरभिर्नोत्क्रमयति क्षीरम् ॥२९७॥ तओ चिंतियं तेण—अवसोत्तपत्तं सित्थंपि व दव्वमेयं मयरदाढाए गिलियं कह वालेयव्वंति, लद्धोवाएण अंतरंगपुरिसे पेसिऊण कयसम्माणो मन्नावेऊणमाणीओ अप्पणो पासे पुत्तो। पच्चइयपुरिसे सहाए दाऊणमइघणधणरिद्धिसमिद्धो काऊण, कन्ने किंपि कहेऊण पुणोवि पेसिओ अवंतीए। अप्पिओ सुसिक्खिओ मक्कडो एगो। सो य जावइयं दव्वं गिलावेऊण मुचइ मग्गिओ तावइयमप्पेइ। तत्थ पत्तो ववहरमाणो अइधणड्ढो सुधणो नाऊण निवेइओ मयरदाढाए दासीहिं विविहउत्तिजुत्तिभत्तिहिं मन्ना-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेऊणमाणाविओ मंदिरे। जओ चेव वासराओ वत्तमकहंता पत्ता तुब्भे तओ चेव वेणिबंधाइ काऊण दुम्मणायमाणा पलायमाणे पाणे तुह पावणाऽऽसाए धारेमाणी, जावि याऽवत्था एत्तियं कालंति पत्तियावेऊण तीए भणिया कामपडाया। वच्छे! इयाणि युज्जंतु ते मणोरहा। तओ पवत्ता पुव्वं व विविहोपयार पयारेहिं रंजिउमेसा। दविणं मग्गिय अकाए मक्कडं थडए पूईऊण मग्गिऊण य अप्पेइ एसो। तओ चमक्कियचित्ताए ताए कयाइ कामपडाया पुच्छाविया विन्नवेइ। अव्वो अउव्वो दव्वोवाओ कोवि एसो, ता पाणेस! पसायं काऊण कहेह एत्थ परमत्थं। भणियमणेण न पिए! पयासियव्वं कस्सइ, एयं मक्कडकामदुहा एसा। सयसहस्सलक्खकोडिकोडाकोडीणंपि पत्थिया न थक्केइ। तओ कयाइ अक्कावयणओ विविहोवयारपयारेहिं पल्हायमाणमाणसं सुधणं काऊण कामपडायाए जंपियं। 'मह नेहो जाणिज्जइ, तुह कज्जे जीवियंपि उज्झामि। तुह पिय! कहेसु को पुण, सिणेह-रेहाए कसवट्टो ॥ ९८ ॥ सुधणो भणइ महच्चिय, पाणपिए! पेम्ममम्ममत्थि धुवं। सिय–किण्हकारगो जेण, तुज्झ निच्चंपि चिट्ठामि ॥ ९९ ॥ भणियमिमीए न अत्थि एत्थ मज्झ संदेहो आउयाएवि एसो चेव पच्चओ। जेणेयाए जंपिअं वच्छे! एत्तियो तुहोवरि जामाउयस्स सिणेहो, जइ तुमं मक्कडकामधेणुंपि पत्थेसि ता तंपि ते न धरेइ। तओ—" येन प्राप्तेऽवसरे शत्रुषु मित्रेषु बन्धुवर्गेषु। नाऽपकृतं नोपकृतं न सत्कृतं किं कृतं तेन ॥ ३०० ॥ " इय चिंतिऊण भणियं सुधणेण कंते! किमेत्तियमेत्त-गेण वि चोज्जमज्जुयाए हक्कारेहि, इह चेव जेण इयाणिमेव पूरेमि कोउगं। तओ तक्खणमेव हरिसविसंखलचलणगई वियडकडि-यडोवा पत्ता मयरदाढा उच्चासणासीणा जोहारिया जामाउएण पभणिया य वच्छे! किमच्छेरं एयं निच्छिऊण मए तहा मंतियं तुह पुरओ किं दुक्करं पेम्मपोढिमाए। किं तए पुच्छि(सुत्ति)ओ पाणेसो, को पत्थणाविहाणमग्गो एयाए। भणियं तेण अम्मो अइदुक्करो पत्थणापयारो, जइ अंगीकरेसि ता कहेमो, भणियं च एयाए कामदुहालाहे वि किं नाम किं पि दुक्करमत्थि। जइ एवं ता चिरसंचियसव्वदव्वसारं नीसारेसु सगिहाओ। देसु जस्स कस्सइ पडिहासइ, पुव्विल्लधणस्स कणेवि विज्जमाणे न एसा फल-दायिणित्ति तेण भणिए, भणियमेयाए कस्स अन्नस्स घरसारमप्पिस्सं। किमन्नोवि कोवि गोरव्वो? अंगीकरेसु सव्वमेयंति अप्पिय-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मसेसं मणि-रयण-कणय-धण-वसणाइ कीलियापज्जंतं। अणेणवि पुव्वपउणीकयाणि वाहणाणि भरावेऊण कयाणि जयंतीए वहंत-याणि। तओ पूइऊण पणमिऊण खमाविऊण अ(प्पणा)प्पिया सपाणिणा मयरदाढा पाणिंमि गालियप्पदीणारा मक्कडकामधेणूं। भणिया य अक्का, इओ सत्तमदिणे दिणेसवासरे पढमपत्थणा कायव्वत्ति, भणिऊण य निग्गओ गेहाओ। वाहणाणुमग्गलग्गो पत्तो जयंतीए। मयरदाढावि रविवारे ण्हायाऽणुलित्तगत्ता होऊण थडए चडाविऊण मक्कडकामधेणुं पूइऊण पणमिऊण य पंचंगपणिवाएण मग्गेइ एगसयं, इमा वि मुहाओ उग्गीरिऊणमप्पेइ। वाराहिं दोहिं तीहिं अप्पिए पुव्वगिलिए सव्वसारे घरकुक्खी व। तकुक्खी जाया सव्वरित्ता। तओ मग्गिज्जंती वि न किंपि अप्पेइ। च(डि)ड्डिढजंती चिक्कारे चेव मुंचेइ। तओ सा खोट्टिया पोट्टं कुट्टेमाणी पोक्कारेइ। हा हा हया अहयं, वंचिया तेण धुत्तेण। पारउव्वपविट्ठं तद्दव्वं सव्वं पुव्वसंचियंपि गहाय गयं। कामदुहाए लोहेण, लंघियाऽहं विडंबिया एवंपि जणलग्गंपि गयं, संजाया रोरनारित्ति। "पक्खी पासेसु जहा, जलंमि जालेसु जलयरा वा-वि। तह किं न लोहजंतंमि, निवडिया विणडिया एवं ॥ ३०१ ॥" इति मयरदाढाकहाणयं॥ कहियं कहिऊण भणियं सिंधु-मईए—भत्ताणुरत्ताओ विमोत्तुमम्हे, दिक्खाए सोक्खं परमीहमाणो। तं नाह! किं मक्कडकामधेणु-लुद्धाए अक्काए समो न होसि? ॥ २ ॥ भणियं च—इहलोकसुखं हित्वा, ये तपस्यन्ति दुर्धियः। त्यक्त्वा हस्तगतं ग्रासं, ते लिहन्ति पदाङ्गुली ॥ ३ ॥

जंबूनामा ततोऽवोचत्, ज्ञाता ज्ञातासि सुन्दरि!। भोः सिन्धुमत्यवश्यं त्वं भौताचार्यसहोदरी ॥ ४ ॥ पुराऽभूत्परमाचार्यो, मूर्खचक्रैकशेखरः। सन्निवेशे क्वचित्प्राप्तो, जडिमा पिण्डितामिव ॥ ५ ॥ मुक्त्वा स्वस्य प्रतिच्छन्दं, मठिकारक्षपालकं। शिष्यं जगाम स ग्रामे, कदाप्यासन्नवर्त्तिनि ॥ ६ ॥ माहिषैर्दधिभिः सार्द्धमशित्वा कोद्रवौदनं। तुन्दं परिमृजन् सुप्तः, स्वप्नं साक्षादिवैक्षत ॥ ७ ॥ मठिका मोदकैः सा मे, सम्पूर्णा सिंहकेसरैः। क्षणात्प्रबुद्ध उत्तस्थौ, प्रीतिकण्टकितत्वचा ॥ ८ ॥ धावितस्तूर्णमभ्यर्णं, स्वग्रा-ममठिकामभि। शिष्यः कदाचिद्द्याद्वा, दद्याद्वाऽन्यस्य कस्यचित् ॥ ९ ॥ तत्रैत्य तालकं द्वारे, मठिकायामदादुद्रुतं। शिष्यमाह मठी सेयं, दिष्ट्या मे मौदकैर्भृता ॥ ३१० ॥ शिष्यो नृत्यति तोषेण, द्विगुणं तद्गुरुस्ततः। शिष्यमाविष्यदद्य त्वं, समग्रं ग्राममाह्वय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(सत्वरम्) ॥ ११ ॥ मया देयाऽचिरादद्य, सद्यो मोदकभक्षिका । ग्रामो निमन्त्रयामासे, ततः शिष्येण सर्वतः ॥ १२ ॥ मद्गुरुर्मोदकैरद्य, भोजयिष्यति सज्जनान् । सुप्रसन्नेन रुद्रेण, तैर्मठी निर्भरं भृता ॥ १३ ॥ समस्तेऽपि जने प्राप्ते, प्रीत्यां पङ्क्त्यां निवेशिते । मार्गमालोकमाने च, मोदकानामुपायताम् ॥ १४ ॥ तालमुद्घाटयामास, गुरुर्यावत्प्रमोदवान् । रिक्तां फुत्कुर्वन्तीं तावत्, मठीमालोकते कुधीः ॥ १५ ॥ ग्रामो हसन्नथोत्तस्थौ, दत्तताळः परस्परं । आह स्म भस्मभृल्लोकः, क्षणमेकं प्रतीक्षताम् ॥ १६ ॥ युष्मदागमहर्षेण, विस्मृतं स्थानमस्ति मे । सुप्त्वा प्रागिव यावत्तज्जानीयां भोजयाम्यथ ॥ १७ ॥ पादौ प्रसार्य सुप्तोऽसौ, तथा स्वस्नोपलब्धये । शिष्योऽपि वारयामास, लोककोलाहलं मुहुः ॥ १८ ॥ मूर्खः शिष्यो महामूर्खो, गुरुश्चाश्चर्यमेतयोः । संयोगः सदृशः सोऽयमन्धस्य बधिरः सुतः ॥ १९ ॥ युक्तं चोद्यते—श्वेताम्बरेषु सज्ज्ञानमज्ञानं भस्मवेशमसु । ब्राह्मणेष्वक्षमा कुक्षि-पर्याप्तिर्दिक्पट-व्रते ॥ ३२० ॥ न लक्ष्येते (तौ द्वौ च) लोकेन, हस्यमानावपि स्फुटं । कृत्वाऽट्टहासः स्वस्थानं, जगामाथ जनोऽखिलः ॥२१॥ ततः शुभे ! परिभावय—भौताचार्यशिरोमणिर्जगदिदं जाड्येन जिष्णुर्यथा, स्वप्नाऽऽसादितमोदकैः पुरजनानामन्त्र्य हास्योऽभवत् । भोगैः स्वप्नसमैस्तथा कतिपयैरेतैः क्षणध्वंसिभिर्भूयो लोभयमानिका मम मनः किं हस्यसे त्वं नहि ॥२२॥ इति भौताचार्यकथा ॥ अह पउमसिरी पभणइ, मोत्तूणाऽम्हे वयं पवन्नस्स । पिय ! ते पच्छुत्तावो, होही वाणरवरस्सेव ॥२३॥ अथ वाणरमिहुणकहाणकं—

एगाए अडवीए, वाणरमिहुणं अहेसि सुसिणेहं । परिअडमाणं पइतरु, तं सुरसरितीरमणुपत्तं ॥ २४ ॥ वंजुलसाले कीलेइ, तत्थ मंथरविसालसाहाले । कयफालो पालंबाउ, चुक्कओ मक्कडो पडिओ ॥ २५ ॥ खरधरणिवट्टनिट्ठुर पहारपीडाए पाविओ संतो । देवकुमारायारो, सो जाओ माणुसजुवाणो ॥ २६ ॥ तो वाणरी विचिंतेइ, तित्थमाहप्पसंपयाणप्पा । अहह इमा ता अयमिव, अहंपि पाडेमि अप्पाणं ॥ २७ ॥ विच्छोहछोहियाहं, करेमि एगागिणी किमिह रन्ने । होऊण माणुसी नणु, इमस्स अंकंमि कीलामि ॥ २८ ॥ तह पडिया सा जुवई, जाया जाया जहा अणंगस्स । हरिसभरनिब्भराइं, कीलेउं दोवि लग्गाइं ॥ २९ ॥ जुवइं जंपइ पुरिसो, जाओ हं वाणरो वि ताव नरो । जइ पुण पडेमि ता होमि, सुयणु नूणं सुरकुमारो ॥ ३३० ॥ भणियमिमीए मा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाम, सामि ! अइलोहल्लालसो होसु । अमरमिहुणाणुगाराणमम्ह किं नूणमूणमहो ॥ ३१ ॥ पुण पडियाणं जाणेइ, को णु मा होज्ज मूलनासोवि । कुण भणियं मा लंघसु, महवाणिं दिव्ववाणिं व ॥ ३२ ॥ वारंवारं वारिज्जमाणमाणसवियप्पदप्पो वि । पडिओ पुणो वि जाओ, वाणरभावेण तेणेव ॥३३॥ अइदीणमणो अणुतावतावियंगो कुरंगनयणाए । पुरओ पत्तो झूरेइ, वारियं ते मए न कयं ॥३४॥ सा आगएण केणावि, रायकुमरेण नियपुरं नीया । विहिया जाया जाया य, भायणं भूरिभोगाण ॥३५॥ स पवंगो गंगाए, कयतुंगतरंगभंगिसंगाए । गोरंगिझाणझिज्झंतपत्तलंगो गओ निहणं ॥३६॥ इय नाह ! कहिउ मई अप्पभाउ, परिभाविउ जं वाणरह जाओ । अइयारु न किज्जइ कहिवि अत्थि, जिंव पडियइ नेयारिसि अणत्थि ॥३७॥ इति वाणरमिहुणकहा ॥ अथ जम्बूर्बभाषे— सुन्दरि ! शृणु ममापि भावं । "औचित्यचारि म(चित्तं)थितं चतुरोऽपि लोभं, कान्ते ! करोति तदहं किमु मास्म कार्षं । लोभं विना न खलु कोऽपि कुतोऽपि कस्याप्यभ्यासमाश्रयति जातु तनूद्भवोऽपि ॥ ३३८ ॥" न चैष दीक्षालोभो ममौचित्यातिक्रमकारी, तस्याः श्रेयःसिद्धिनिबन्धनत्वात् । यद्वा न करोम्येव लोभलाम्पट्यम् । न च न भाविदीक्षाशिक्षासाम्राज्यमस्य प्राक्पुण्यप्रभावादवश्यंभावित्वात् । भाग्यसौभाग्यभाजो हि भूयान् कोऽप्यर्थोऽप्राप्यमानोऽपि सिद्धदत्तस्येव सद्यः संपद्यते । तदभावे त्वतिलोभसंभवेऽपि वीरसेनस्येव विलीयते, तथाहि—चन्द्राभायां नगर्यामाशापुरी नामतोऽर्थतश्च क्षेत्रदेवताऽऽसीत्तस्याश्च मन्दिरोदरे द्यूतकारः कोऽपि क्षपायामुपेत्य तत्कालपक्वपूपांस्तद्दीपतैलेन खादति । ततस्तया स्वदीपच्छेदमुच्छिष्टतां स्पृष्टतां चामृश्यमाणया तद्भापनाय प्रसारितं ललल्लोलम्बजिह्वालं वक्त्रान्तरालं, तेन च निर्भयेन निःशूकेन चार्द्धजग्धपूपेन निष्ठ्यूतं जिह्वायाम् ।' ततः कथमुच्छिष्टनिष्ठ्यूताऽपूतामेतामन्तःक्षिपामीति तथास्थितजिह्वैव देवी प्रातर्ददृशे पौरलोकैः । अहो किमिदमाकूतमुत्पातः कोऽप्येष पौराणामित्याकुलैस्तैः क्रियमाणेष्वपि शान्तिकपूजाप्रकारेषु यावन्न संवृणोति वक्त्रान्तरालपातालं तावज्जल्पितं जनैर्भीतचेतोभिः । पुर्यां पर्याप्नुयात्कश्चिदेतदुत्पातप्रशान्तये, उदितं तेनैव—अहमत्रार्थे समर्थः, परं प्रथमं तावद्दीनारशतं पूजाप्रकारोपचाराय मत्करे कुर्वीध्वं, प्रयोजनसिद्धौ वस्त्रादिसन्मानः समुदायोचितः कोऽपि कार्यः, जनो मण्डलमण्डलैर्मन्त्रयामास । द्यूतकारमान्त्रिकोऽयं व्यसनविषन्नानस्मा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नालोक्य बुभुक्षुर्बिभक्षयिषति पूजाव्याजेन परं किं क्रियते व्यसनार्त्तचेतोभिः । "नैमित्तिकानां भिषजां द्विजानां, ज्योतिर्विदां मन्त्रकृतां च पुण्यैः । लक्ष्मीवतां वेश्मसु देहपीडाभूतग्रहादिव्यसनं समेति ॥ ३३९ ॥" इत्यर्पितं दीनारशतं तस्य हस्ते । रात्रौ भट्टारिकामन्दिरान्तः प्रविश्य प्रदत्तद्वारकपाटसंपुटः प्राह स्म । किमिति कृत्ये प्रकृत्या न भवसि ? । कृतपूतने ! मण्डितं विज्ञानं किंचिन्न करोषि मदुक्तं युक्तम् । तदस्तु वक्रवेधस्य वक्रा कीलिकेति यावज्जिह्वायां विष्टायै संरभते तावन्न किंचिदेतस्य पापीयसोऽकर्त्तव्यमस्तीति, जाता यथावस्थितमूर्त्तिरेषा । जातमुपप्लवप्रशमात् पत्तने सौख्यम् । अन्यदा द्यूतहारितमस्तकपणः प्राप्तोऽसौ भट्टारिकायाः पुरः प्रोवाच ।

देवि ! देहि पणितहारितमस्तकस्य मे तन्मोचनमूल्यं दीनारपंचशतीम् । भट्टा०—किं त्वया त्वत्पित्रा वा मत्पार्श्वे निक्षिप्तमासीत् । द्यूत०—मातर्न निक्षेपकः कोऽपि, किन्तु मस्तकच्छेदान्ते व्यसने स्मृता त्रायस्व माम् । भट्टा०—किं न त्रायिष्ये त्वद्भक्तेस्तादृशा यत्क्रियते तदत्यल्पम् । दुरात्मन्निदानीमेवं नाम दीनता दर्शयसि तदानीं तदकार्षी ॥ ३४० ॥ न चैतच्चिन्तितमेतया नैव मृत्युदशादीनां याचमानं विमानयेत् । स (न) खल्वाकुलितैः प्राणैः परप्राणान् क्षणात् क्षिपेत् ।

द्यूत०—यदि न भक्त्या प्रसीदसि तदा यथा प्रसीदसि तथा करोमीति तद्भङ्गकारिपाषाणाय बहिर्निस्ससार । भट्टारिका क्षिप्रमेव द्वारं पिदधे । द्यूतकारो महतीं शिलामुत्पाद्य प्राप्तः पिहितकपाटं द्वारं प्रेक्ष्य, विलक्षः शिलया कपाटे आस्फोटयामास । तथापि तयोरनुद्घटितयोर्मन्दिरप्रदीपनाय प्रावृतत् । सर्वं सम्भाव्यते स्वर्भाणुस्वभावेऽस्मिन्निति भीतया तया सत्वरं द्वारमुद्घाट्य पूत्कृतम्—रे रे नष्टदुष्टचेष्ट ! मा मन्मन्दिरं दिदीपः । निष्कपतया कृताऽहं त्वया किंकरीव किं करोमीदानीं, याहि पुस्तिकामेतामादाय दीनारपञ्चशत्या ददीथाः (याः) । द्यूत०—यदि नैतावन्मूल्यं लप्स्ये तदा ते(न)दरास्ते च मेढकाः, क्व यास्यसि, मयाऽऽरब्धेत्युक्त्वा पुस्तिकां च गृहीत्वा प्राप्तोऽयं विपणिपङ्क्तौ । पुस्तिकां च प्रदर्श्य मूल्यमतुल्यं जल्पन्नुपहस्यमानः प्राप्तः पुरन्दरपुत्रस्य सिद्धदत्तस्य हट्टे । तेनापि पुस्तिकां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिद्धदत्तेन पुस्तिका-क्रयणम् ।

प्रेक्ष्य मूल्यमुक्तस्वदेवावादीत् । सिद्धदत्तेन चिन्तयांचक्रे–किमिदं मर्कटस्य जयकुञ्जरमूल्यम् । तद्भवितव्यं हेतुना केनापि । तदन्त-
स्तावदालोकयामीति विसृत्य वीक्षते प्रथमं पत्रम्—“ प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यः ” इति । अये ! उपजातेरेक एवायं पादः ।
कटरे मम हृदयसंवादः । इयमेव परमार्थव्यवस्था । इति दीनारपञ्चशतीं प्रदायाऽऽदायि पुस्तिका । यावत्तमेव पादं परामृशन् कथ-
मयं श्लोकः शेषपादत्रयीपवित्रः स्यादिति ध्यायंश्चिन्तारत्नप्राप्ते चात्मानं कृतार्थं मन्यमान आस्ते तावत्प्रातिवेश्मिकवणिक्पुत्रैस्तालोत्ता-
लवाचालैरहो सदायप्रायापूर्वक्रयाणक्रयेण वर्द्धिता गृहवार्त्तेत्युपहसद्भिः प्रकाशितोऽयमर्थः पुरन्दरस्य, सकोपोऽयमुपागतस्तत्र दिनाय
व्ययविलोकनाय । पुस्तिकाक्रये दीनारपञ्चशतीव्ययं विलोक्य प्रोक्तं पित्रा कुत्रार्थे व्ययोऽयमियान् । के वयं विद्वांसः पुस्तकसंग्रहा-
ग्रहग्रहिलो यदि परं भवानेव विद्वान् । विक्रीयमाणयाऽप्यनया न कोऽपि पानीयमपि पाययति । तद्व्रज त्यज मद्गृहामेतावता वि-
त्तेनोपात्तेनात्र प्रवेष्टव्यम् । तत एतावद्भिः सहस्रैरर्जितैर्मयाऽऽगन्तव्यमिति निश्चित्य निःसृतोऽयं प्रदोषे । स्थितः पत्तनान्तर्वर्तिनि देव-
कुले क्वापि क्षपाक्षेपणाय । तत्पादतात्पर्यं पर्यालोचयन्निश्चिन्तः सुखं सुष्वाप ।

इतश्च तस्यामेव पुर्यां राजामात्यपुरोधःपुत्रिकाणां रतिमञ्जरी–रत्नमञ्जरी–गुणमञ्जरीणां सहसंवाससंजातनिस्सीमसख्यानां विप्र-
योगभीरूणामेकदा संलापः समजनि । किल बालकालभावादेतावन्तं कालं सहपांसुक्रीडासुखमन्वभूम, संप्रति पुनरलंक्रियामहे वैरिणा
यौवनेन । न जानीमो विधिवात्ययोत्पाद्य क्वापि प्रक्षेप्स्यामहे, ततो राजाङ्गजया जजल्पे–यद्येवं नाम युष्माकमन्योन्यं स्नेहानुबन्ध-
स्तदा यावदद्यापि जनकैः क्वापि कस्यापि न वितीर्यामहे तावद् भवामः कस्याप्येकस्य स्वयमेव स्वयंवरा येन यावदायुरवियुक्ता वर्त्ता-
महे । प्रतिपन्नमेतदशेषाभिः । ततो राजाङ्गजया दूरदेशायातो महाकुलीनः कोऽपि पृथ्वीपतिपुत्रः पितृसेवको वीरसेननामा समा-
कार्य प्रच्छन्नं प्रोक्तः प्रस्तुतार्थे । तेनापि तत्तरुणिमोद्भेदभिदुरहृदयेन प्रतिपन्नमेतत् । पुरीपरिसरसुरागारमण्डपमध्ये तरलतरतुरङ्ग-
साधनसध्रीचा त्वया तृतीयदिने निशीथिन्यां स्थातव्यं येन परिणीय पलायामहे इति कृतसङ्केतस्य तस्यागतं तद्दिनं । तत्र च त-
त्कालप्राप्तेन तत्तातवैरिवारेणाऽऽरब्धोऽयं योद्धुम् । स्वल्पबलोऽनल्पबलेन परिभूतो गतः स्वदेशम् । राजाङ्गजाऽपि जातायां याममा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रायां त्रियामायां परिणयोपकरणवस्तुविहस्तहस्तदासीसहिता प्राप्ता संकेतमण्डपान्तः, ददृशे सुखप्रसुप्तस्तत्र सिद्धदत्तः। पूर्वपरिचयोपजाता संधया चोक्तमेतया। अहो ईदृशप्रयोजनारम्भसंरम्भेऽपि निश्चिन्तैः प्रसुप्यते, ततः प्र(बोध्य)चोद्य स ग्राहितः स्वपाणिं पाणिना। निर्वर्त्तितगन्धर्वविवाहया कृतः कङ्कणबन्धः। स त्वं गृहीतसंकेतः किमप्यनुल्लपन् किमिदमिन्द्रजालं जायत इति विस्मयमानमानसः "प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यः" इति परामृशन्नुक्तस्तया कृता कृतार्थाहमन्ये अपि मद्वयस्ये विदधीथाः। कुत्र पुनः पलायनवाहनानि सन्निहितानि विहितानि। तेनोक्तम्—किमेवमाकुलाऽसि निद्रालवो वयं शयिष्यामहे तावदिति स्थितः सुप्ताऽपदेशेन, तया तु तं तथा निराधि–निराकुलमालोक्य, मा नाम न भवेद्वीरसेनोऽयमिति पूर्वानीतज्योतिः सरावसंपुटमुद्घाट्य यावद्व्यलोकि तावज्ज्ञातमज्ञातः कोऽप्येष धूर्त्तः प्राप्तः स्यात्। अस्तु यः कश्चित् सुकुमाराकारेणानेन कन्दर्परूपदर्पापहारी पुण्योपनीतः परिणीत एव किंचिदनुचितं ततो वीक्षिता मस्तकान्तन्यस्ता पुस्तिका। गृहीत्वा विवृत्यादितो वाचयति। "प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यः" इति। पादमात्रमप्येतत्कर्पूरपूरपरिमलवद् व्यापकं लोकानाम्। अहो समयाक्षराणीव एतदक्षराणि परमार्थप्रथाप्रथीयांसि। कथमन्यथेत्थमर्थोऽयमभूत्। आगमिष्यन्त्योरपि सख्योः प्रत्ययाय करतलघोलितकज्जलेन "किं कारणं दैवमलङ्घनीयमिति" द्वितियपादं लिखित्वा द्वितीययामान्ते जगाम रतिमञ्जरी स्वगृहान्। तृतीयप्रहरे प्राप्ता रत्नमञ्जरी। सापि कङ्कणबन्धलिपिसंवादौ रतिमञ्जर्याः पर्यालोच्य तेनात्मानं पर्यणाययत्। पादद्वयान्ते तथैव—"तस्मान्न शोको न च विस्मयो मे" इति तृतीयपादमालिख्य स्वस्थानमासीसदत्। एवं गुणमञ्जर्याऽपि तुरीययामे समागत्याऽऽत्मानं तेन परिणाय्य—"यदस्मदीयं न हि तत्परेषाम्" इति तुरीयपादं तत्पुरो निवेश्य स्वगृहमगात्। ततो मा वयमीदृगपराधाऽऽधानधामानि भूमेति न्यवेदितं सुताचेष्टितं चेटिकाभिस्तन्मातॄणां, ताभिरपि स्वस्वभर्त्तॄणाम्। ततोऽभाणि भूभुजा–देवि! दुहिता दुश्चापलतू(चू)ला शीलिता येन शून्याऽमर्त्यसद्मसुप्तः कोऽपि कार्पटिकः पादचारी परिणीतः स्यात्, किं क्रियते। देवी—देव! नापरः प्रकारः कोऽपि सम्प्रति "सकृत्कन्याः प्रदीयन्ते।" एतदेव तया प्राप्तं–'प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यः'। किंच त्वत्पुत्रिकया स्वीकृतः कार्पटिकोऽपि पृथ्वीपतिरेव। यतः—"क्षाराम्भोधिभुवः कलङ्कि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततनोरिन्दोर्जडज्योतिषो, मुक्त्वा शम्भुशिरोनिवासमपरा का भूमिका के गुणाः। अभ्रान्तिं नु पतन्ति कोऽपि गुणिनो राजप्रसादोचिता, यत्र स्वामिदृशो व(च)लन्ति धवलास्तत्रैव सर्वे गुणाः ॥ ३४१ ॥" तद्यावन्नाद्यापि क्वापि प्रयाति तावत्प्रधानपुरुषान् प्रेष्य प्रवेशयतां स्तम्बेरमारूढः पत्तनान्तः। ततः पार्थिवेन प्रेषितैः प्रधानपुरुषैरवार्यतूर्याडम्बरेण प्रबोधितः सिद्धदत्तः कङ्कणत्रयालङ्कृतेन दक्षिणपाणिना पुस्तिकामादय वाचयति–प्राप्तव्यमित्यादि। अये! जातोऽयं श्लोकश्चतुपादः। अहमप्यष्टपादोऽभूवम्। इयन्मात्रेऽपि प्रयाणे निर्व्यवसायस्याप्यनुकुलविधेर्मे जातश्चतुर्गुणो लाभः। यद्वा—"व्यवसायं दधात्यन्यः, फलमन्येन भुज्यते। पर्याप्तं व्यवसायेन, प्रमाणं विधिरेव नः ॥ ३४२" ततो राजकुञ्जरमारोप्य प्रापितः प्रधानैः पृथ्वीपतिप्रासादमेषः। कृतपादप्रणामो मम प्रसादपात्रस्य पुरन्दरश्रेष्ठिश्रेष्ठिनः पुत्रोऽयमिति प्रत्यभिज्ञातः पृथ्वीभुजा। अमात्यपुरोहितावपि विदितवृत्तान्तौ प्राप्तौ स्वस्वपुत्रिकावृत्तान्तं राज्ञे व्यजिज्ञपताम्। सर्वेऽपि पुरन्दरपुत्रजामातृप्राप्त्या पुत्रिकाचापलचेष्टितेन तुष्टाः परिणयोत्सवाय प्रोत्सहन्ते स्म। पृथ्वीपतिना रतिमञ्जरी–रत्नमञ्जरी–गुणमञ्जरीणां तिसृणामपि प्रारेभे पाणिपीडनं प्रतिपादितवांश्चैष सहर्षम्।—"तत्तिल्लो विहिराया, जाणेइ दूरेण जो जहिं वसइ। जं जस्स होइ जोग्गं, तं तस्स बिइज्जयं देइ ॥ ३४३ ॥" प्रदत्ता पार्थिवेन जामात्रे ग्रामपञ्चशती, जातो महान् सामन्तः। पुरन्दरपादपर्युपास्तिपरायणः पालयामास समृद्धिः। "पुण्यप्रकर्षनिकर्षः खलु सिद्धदत्तः, सुप्तोऽप्युत्तमहिमप्रथिमानमापत्। त्रस्तैकहायनकुरङ्गविलोलनेत्रे, तद्वत् भविष्यति ममापि मतार्थसिद्धिः ॥४४॥ तओ पउमसेणाए, जंपियं पिय! किज्जए। पव्वज्जाउज्जमो किंतु, ऊसुगत्तं न जुज्जए ॥ ४५ ॥ थिराण होइ जं लच्छी, जहा सुंदरसेट्ठिणो। ऊसुगाण पुणो जाइ, हुंतीवि जह विट्ठुणो ॥ ४६ ॥ गामे गुणत्थले आसि, सिट्ठी नामेण सुंदरो। सुंदरी दइया तीए, जाओ पुत्तो पुरंदरो ॥ ४७ ॥ समाणकुलसीलाण, गेहे सो परिणाविओ। गामवासंमि सव्वाणि, सुहेणच्छंति ताणि य ॥ ४८ ॥ दुद्धं दहि घयं (निद्धं) नव्वं, सव्वं घन्नं घरोदरे। (पाणिं) घासिंधणाइ निम्मोल्लं, गामवासो अहो सुहो ॥ ४९ ॥ भत्ता जुत्ताणुरत्ता य, एगा सिलप्पिया पिया। पुत्तो वुत्तकरो जंमि, सग्गो गामो वि सो धुवं ॥५०॥ उक्तं चान्यत्र—"एकु वल्लही अउरू अणुकूली एहज सग्गह मत्थइ तू(मू)ली।

सिद्धदत्तस्य राजकन्यादिप्राप्तिः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वल्लहू माणुसु विणइ पयट्टइ सक्करसत्थरि घेवरु लोट्टइ ॥ ५१ ॥" कयाइ तस्स गेहस्स, अंगणग्गखडक्किया। वासासु पडिया जायं फोक्कवारमहो(ओ)गिहं ॥ ५२ ॥ सुंदरीए तओ सेट्ठी, वुत्तो किं न खडक्किया। काराविज्जइ अज्जेव, नाहं सक्केमि रक्खिउं ॥ ५३ ॥ वित्तिं न देसि कस्सावि बारपाहरियस्स वि। पसारिय (मु)सुहं दारं, वंचिओ जो न चोरए ॥ ५४ ॥ तेणुत्तं अत्थि वग्घि व्व, दुवारे कुक्कुरी कया। भसंती वारए सव्वमपुव्वं पविसंतयं ॥ ५५ ॥ कालेण कित्तिएणावि, सावि केणावि मारिया। उग्घाडं सव्वहा सुन्नं, दुवारमभविंसु तो ॥ ५६ ॥ सुंदरीए तओ वुत्तं, कावि किज्जउ कुक्कुरी। दुवारे सुन्नए कोवि, जाही मुसियमंदिरं ॥ ५७ ॥ सेट्ठिणा भणियं लच्छी, थिराणं होइ सुंदरि!। होइ वा जाइ वा एवं, आह सा को णु जाणए ॥ ५८ ॥ अन्नया पुत्त-पत्तीवि, मया तो तीए भासियं। जुवाणं परिणावेसि, किं न पुत्तं पुणो वि तं ॥ ५९ ॥ एकाऽहं केत्तियं काउं, कम्मं सक्केमि ते गिहे। पुत्तो वि तरुणो दव्वं, बाहिं फेडिस्सए फुडं ॥ ३६० ॥ सुंदरेण पुणो तीए, दिन्नं तं चेव उत्तरं। तीए वुत्तं नवो कोइ, लग्गो तुज्झ असग्गहो ॥ ६१ ॥ लच्छी गच्छिस्सए वस्समेवमेगग्गहस्स ते। मज्झं बुज्झेसु कज्जस्स, कस्सावि कुरु जंपियं ॥ ६२ ॥ गामस्स तस्स मग्गेणमेगया भामहो गओ। जंतस्स तस्स रत्तीए, तट्ठा वेगसरी वरा ॥ ६३ ॥ सेट्ठिगेहंगणे पत्ता, वीसं दीणारवासणे। पाडित्तु पुट्ठिदेसाओ, सत्थमज्झे पुणो गया ॥ ६४ ॥ दट्ठुं सेट्ठी तमंधारे, हक्कारेऊण सुंदरिं। तुट्ठो भीओ य कट्टेइ, निक्खिवेइ घरोदरे ॥ ६५ ॥ दीणाण कित्तियाणंते, नाउं जीरवियं धणं। एगंते मंतए तो सो, तोसोऽऽवेसेण सुंदरि! ॥ ६६ ॥ लच्छी थिराण जा आसि, वुत्ता तुज्झ पुरो मए। सा एसा आगया कज्जे, तम्हा कुरु थिरत्तणं ॥ ६७ ॥ खडक्कियाए दिन्नाए, विसे वेगसिरी कहं। भसमाणी सुणी लच्छि, तं वासेज्ज सयंवरं ॥ ६८ ॥ पेईहराण गंतूण, कहेज्ज वहुया धुवं। सव्वं निविग्घमो जायं, कज्जथेज्जे कए मए ॥ ६९ ॥ तुंगा खडक्किया एत्थ, दारे दोवारिओ वरो। कायव्वो पुत्तवीवाहो, दव्वेण बहुणाऽहुणा ॥ ३७० ॥ सुंदरो णूसुगो एवं, संजाओ कज्जसाहगो। ता पाणनाह! तं देसु, थिरत्ते चित्तमुत्तमं ॥ ७१ ॥ सिद्ध कज्जं विणासित्ता, उत्तालो अणुतप्पई। जहा विट्टू सुणेयं पि, पाणनाहकहाणयं ॥ ७२ ॥ कोडुंबिएण केणावि, विट्ठुणाऽऽरा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हेममयमयूरो वायसी-कृतः।

हिओ सुरो। दव्वत्थिणा पसन्नो सो, विट्ठुमेवं पयंपए ॥ ७३ ॥ होउं हेममओ मोरो, नच्चिरो पइवासरं। दाहामि पिच्छमेगंते, तेण तं होसि ईसरो ॥ ७४ ॥ तहत्ति तेण संलत्तो, लब्भंतो हेमपिच्छए। रिद्धिसमुद्धुरो जाओ, सव्वहा विलसेइ सो ॥ ७५ ॥ अन्नया चिंतियं तेण, को गंतूण दिणे दिणे। पिच्छं मग्गेइ सव्वंगं, मोरं तं चेव गिण्हिमो ॥ ७६ ॥ दिणे अन्नंमि नच्चंतं, पिक्खिउं तं स धाविओ। घेत्तुं पाणिहिं होऊण, वायसो स पलाईओ ॥ ७७ ॥ तत्तो दिणाउ नो देइ, दंसणंपि स विंतरो। तो जाओ विद्दुकोडुंबी, दरिद्दो दीणदुम्मणो ॥ ७८ ॥ उच्यते च—" अत्वरः कुरु कार्याणि, त्वरा कार्यविनाशिनी। त्वरमाणेन मूर्खेण, मयूरो वायसीकृतः ॥ ७९ ॥ " एवं च—[1]पियसलिलालिभोगेहिं ताव, नणु अम्हि जाइ तारुण्णु जाव। अणुमग्गलग्गा अम्हेवि दिक्ख, जरजुन्न करेसहुं सव्वसिक्ख ॥ ३८० ॥

अथ जम्बूस्वाम्यवादीत्—भवदुदितमखिलमेतद्दयितेऽश्रूयत, तथापि न स्थैर्यमार्यैः कार्यम् [2]धर्म्यकर्मणि, पापे तु युक्तमिदम्। खरतरसमीरलहरीलोलत्पल्लवलवाग्रतरलेऽस्मिन्। जनजीविते विभास्यति, निशां नवा वेत्ति को भुवने ॥ ८१ ॥ किंच—" सम्पच्चम्पकपुष्परागति रतिर्मत्ताङ्गनापाङ्गति, स्वाम्यं पद्मदलाग्रवारिकणति प्रेमातडिद्दण्डति। लावण्यं करिकर्णतालति वपुः कल्पान्तवातभ्रमदीपच्छायति यौवनं गिरिणदी वेगत्यहो देहिनाम् ॥ ८२ ॥ " स्थिरतायां हि कृतायामविहितसद्धर्मकर्मणोऽपि भवेत्। यदि पञ्चता तदा स्यात् कुगतिः सुकृते! त्वरध्वं तत् ॥ ८३ ॥ चरणं चिकीर्षितं चेद्भू(द्रु)तं, तदाऽऽचर्यतां चतुरमतिभिः। कालविलम्बेन तु विजयसुजयवद्विघ्न एव स्यात् ॥ ८४ ॥ विजयसुजयदृष्टन्तः—

लीलाललाटिकावद्वसुमत्यां वसुवतीति पूरासीत्। जयमित्रस्तत्राभूद् भूपतिरद्भुतगुणग्रामः ॥ ८५ ॥ अस्ति स्म सोमधर्मा, तस्य श्रेष्ठी वणिग्जनश्रेष्ठः। प्रादुरभुवंस्तनयाश्चत्वारस्तस्य सद्विनयाः ॥ ८६ ॥ विजय-सुजयौ सुजातो, जयन्त इति

१ पियालापीभोगेहिं B पियपालि लालि० C. D। २ धर्म्मे B. D।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नामधेयविख्याताः । सुकुलोत्पन्नाः कन्यास्ते चोपायंसत चतस्रः ॥ ८७ ॥ द्वित्रिचतुरादिपुत्रैस्ते फलिताः प्रौढपनसपादपवत् । गृहभारधुराधारणधौरेयत्वं दधुः सुधियः ॥ ८८ ॥ अथ सोमधर्मणा धर्मराजराज्ये यियासुना सर्वः । आकार्य गोत्रिकादिस्वजनजनो भोजयांचक्रे ॥ ८९ ॥ स जगौ—तस्य समक्षं चतुरश्चतुरसुनूद्भवांस्तान् स्वान् । मा वत्साः ! कार्षुः सर्वथा, मिथः कलहकालुष्यम् ॥ ३९० ॥ कीर्त्तिलता कूल्याम्भो, धर्माङ्कुरप्ररोहणैकमही । सौख्यसुधांशुशुधांशुः, संवित्तिर्यत्कुटुम्बस्य ॥ ९१ ॥ अथ कथमपि संवित्तिस्तुद्यत्यन्योन्यमङ्गना वचनात् । सुनयास्तथापि तनया, न विरोद्धव्यं न योद्धव्यम् ॥ ९२ ॥ यतः—"अपकीर्त्तिः सुरावासः, सुखप्रवासः कुवासनाभ्यासः । पापस्यैकनिवासः, परस्परं यः कुले कलहः ॥ ९३ ॥" अपि बन्धूनां द्वैधं, विदधानानां कुकर्णजापेन । मा कर्णे कार्ष्ट वचः सदाऽबलानां खलानां च ॥ ९४ ॥ यदि तु कुतोऽपि भवन्तो, विभेजिवांसो भवेयुरुपरोधात् । क्रमशः कोणचतुष्कात्, तदा निधानानि गृह्णीयुः ॥ ९५ ॥ कतिपयदिवसैर्जाते, ताते प्रेतेशवेश्मवास्तव्ये । प्राग्वत्प्रीत्या वर्त्तियत ते प्रभूतानि वर्षाणि ॥ ९६ ॥ सुमहति कुटुम्बभारे, जाते यावन्न शक्नुवन्त्येव । वर्त्तितुमेकत्र ततो, विभक्तभावं विनिश्चिक्युः ॥ ९७ ॥ द्रव्यं दृश्यं विज्ञातमस्ति, यावद्विभाजयन्ति निधीन् । तावद्गवाश्वकेशाः प्रादुरभूवन्विजयकलशे ॥ ९८ ॥ क्षेत्रस्य मृदन्यस्मिन्, तदुत्तरस्मिन्पुराणवहिकास्ताः । मणिरत्नहेमदीनारसंचयस्त्वन्तिमनिधाने ॥ ९९ ॥ कलशं स्वकीयमालोक्य, मांसलामोदकंदलितहृदयः । नरिनर्त्ति स्म जयन्तः, शेषास्तु तपस्विनः शुशुभुः ॥ ४०० ॥ हहहा तातेनोच्चै किमवञ्चिष्महि तदा हि नाविद्म । प्रक्षिप्य कूपकुहरे, त्रीनत्रोत्स्यत वरत्रा द्राक् ॥ १ ॥ सर्वकनिष्ठः प्रागपि, पितुः प्रविष्टो मनस्यभूद्भूयः । कोऽपि विकारः केनापि, किन्तु नालक्ष्यतास्माकम् ॥ २ ॥ तदिदानीं किं कुर्म्मः, पूत्कुर्मः कस्य तातदैवहताः । यदि वा सर्वेषां सर्वमेव कुर्म्मश्चतुर्भागम् ॥ ३ ॥ वदति स्म जयन्तस्तानेतन्न कदापि लभ्यते कर्त्तुम् । स्वमुखविभक्ते तातेन, विभवजाते पुनः किमिदम् ॥ ४ ॥ कनकादितुल्यमासीदूभवद्प्राप्त्या मृदादितामगमत् । तत्कुप्यत पापेभ्यः, स्वेभ्यस्ताताय मैव पुनः ॥५॥ अथ बहलकलहकोलाहलाः स्वकं स्वजनवर्गमुल्लङ्घ्य । अहमहमिकया जयमित्रपार्थिवं द्रागुपास्थिषत ॥ ६ ॥ सम्प्रतिपत्तिस्तेषां, तेनापि न पार्यते स्म कारयितुम् । अपरापरपुरपरिषत्पर्य-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टनैश्चिक्लिशुस्ते तत् ॥ ७ ॥ संवत्सरावसाने, जयमित्रनृपान्तिकं पुनः प्रापुः । पटहप्रदानपूर्वं, तेनाप्युद्घोषणाऽकारि ॥८॥ दास्यति विवादमेतं, यो दास्यति चित्तकलुषता चैषाम् । दास्यति तस्य नरेन्द्रो, [1]मन्त्रित्वं दास्यते तं च ॥ ९ ॥ कस्यापि वाणिजस्यांऽगजेन पटहः समुच्छुपे सपदि । नृपतिसमीपं नीतेन, तान् प्रति[2]श्रीनृपादेशात् ॥ ४१० ॥ भणितममुना न नामास्ति, कापि वः सर्वथा विवादाप्तः । तातेन विवादः छिन्न एव यत्केशमृन्मुख्यैः ॥ ११ ॥ जन्मनि जातकशुद्धिः, सर्वेषां वो व्यधायि जनकेन । गणकेनाकथि यद्यस्य, कर्म निस्समसमृद्ध्यै स्यात् ॥ १२ ॥ वृष-करभ-सुरभि-सेरिभ-रासभ-तुरगादिविक्रया[3]करणे । विजयस्य करिष्येते, निरवधि[4]वृद्धिं न सन्देहः ॥ १३ ॥ सुजयस्य फलस्फात्यै, केदाराद्यं सदैव कृषिकर्म । धनतः कलान्तरादेराप्स्यति लक्ष्मीमिह सुजातः ॥ १४ ॥ मरकतदीनाराद्यैरनवद्यं व्यवहरन् विपणिवीथ्याम् । जगति जयन्तस्तु वणिग्ग्रामैकग्रामणीर्भविता ॥ १५ ॥ अत एव व्यवहारे पित्रा, परिभाव्य तत्र तत्रैव । प्रागेव च नियुक्ताः, स्व स्वं वः शङ्के समं चैतत् ॥ १६ ॥ आनाय्य ततो राजा, जयन्तकलशस्य कारिता संख्या । तिर्यग्धान्यकलान्तर-धनेष्वपि प्रायशः साऽभूत् ॥ १७ ॥ क्षितिपेन ततः कथयांचक्रे भो युक्तियुक्तमस्तीदम् । मन्यन्तां न [5]स्वेस्मिंश्च, बान्धवाः क्वापि लभ्यन्ते ॥ १८ ॥ यत उक्तम्—"लहइ लीह सव्वो वि सहोयर परियरिउ, घरिबाहिरि वसणूसवि संगरि अवयरिउ। सेसु विडा विडु[6]सत्थु अत्थखायणमणउ, विहडइ वसणि कुमित्तु [7]जेव निग्घिणमणउ ॥ १९ ॥ सो जि दिवसु सुपसत्थु पसत्था सा रयणि, जहिं नियनयणिहिं दिसहि भाउय अरु भयणि। जहिं घरि पुत्त-पउत्त बंधु नवि संचरहिं, तहिं निरु पडणभयाउलथंभवि थरहरहिं ॥ २० ॥" वत्सरमेकं तावन्न्यायमिमं धीधनास्तत्कुरुध्वम् । यदि भवति वितथमेतन्मम दातव्यस्तदा दोषः ॥ २१ ॥ नृपवचसा संवित्तिं, विधाय ते गेहमागताः सर्वे । तदभिहितव्यवहारैरवाप्नुवन्नुद्धरा वृद्धिम् ॥ २२ ॥ धनमनिधनमर्जयतामन्योन्यगृहेषु जग्धिमाचरताम् । दिवसाः प्रयान्ति तेषां, परस्परप्रीतियुक्तानाम् ॥ २३ ॥

---

१ मित्रत्वं । २ 'श्री' नास्ति B प्रतौ । ३ क्रयणे B. क्रयेण D. C । ४ मृ । ५ स्वेस्निग्ध B. D । ६ अत्थु । ७ जेमुव B ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विजयसुजययोर्निष्फलादीक्षाभिलाषा।

अथ वसुमतीनगर्यामाचार्योऽनार्यकार्यवर्जयिता। विजहार श्रीवसुदत्तनामधेयो सतां ध्येयः ॥ २४ ॥ परिसरवसुन्धरायां तेषां सद्धर्मदेशनासुधया। निर्वापयतां भवतापतप्तचित्ताननेकजनान् ॥ २५ ॥ शुभचर्याः सोदर्याश्चत्वारस्तेऽप्युपेत्य सत्यगिरः। प्रणिपत्य धर्ममर्माणि, कर्मनाशाय शृण्वन्ति ॥ २६ ॥ वचनसुधाधाराम्भः, पायं पायं श्रवाञ्जलिपुटेन। चत्वारोऽपि बभूवुर्भावितमनसो विशेषेण ॥ २७ ॥ प्रणिपत्य गृहानीयुर्विजयोऽजल्पद्व्रतं ग्रहीष्यामि। वदति स्म जयन्तोऽहमपि बान्धव ! प्रव्रजिष्यामि ॥ २८ ॥ किं त्वद्यापि न पुत्रः, पर्याप्तो वेश्मभारमुद्वोढुम्। कतिपयमासानन्तरमुभावपि प्रव्रजिष्यावः ॥ २९ ॥ क्वचिदवसरे व्यलोकयदागच्छन्ती पितुर्गृहात्सायम्। स्मरमिव भुजङ्गमेकं, युवतिर्जाया जयन्तस्य ॥ ४३० ॥ संजिगमिषा प्रकर्षात्तस्य तया मनसिजज्वरार्दितया। अतितनुपीडाव्याजोऽज्ञाप्यत भर्त्रे जयन्ताय ॥ ३१ ॥ आगच्छत्सु चिकित्सावित्सु चिकित्सासु कार्यमाणासु। न खलु मनागपि तस्याः, सा व्याजरुजा शममयासीत् ॥ ३२ ॥ व्याजप्राणाचार्यः स भुजङ्गः प्रापितो जयन्तेन। निजजायायाः पार्श्व, चिकित्सितुं तनुरुजामुग्रम् ॥ ३३ ॥ उपपतिरिति विज्ञातः, कालात्कियतोऽपि तेन स स्वदृशा। परजनमुखेन तत्रागच्छंश्च निवारयांचक्रे ॥ ३४ ॥ यावत्तथापि न त्यजति, तां ततो मारणार्थमादिष्टाः। निजपत्तयश्छलंते, मृगयन्ते तस्य तात्पर्यात् ॥ ३५ ॥ बहुलनिशीथे तैः, क्वापि तस्य सदनाद्विनिस्सरन्निहतः। अहह भुजङ्गभ्रान्त्या, बन्धुर्विजयो जयन्तस्य ॥ ३६ ॥ असममसमंजसं जातमेतदाकर्ण्यकर्णकाकोलम्। बन्धुवियोगव्यथयाऽतिदुस्थितोऽजायत जयन्तः ॥ ३७ ॥ पूर्वविरक्तस्तस्मादतिवैराग्याद्दिदीक्षिषुः सुजयः। विजयो यथा द्विमासीं तेनैव विलम्बयामास ॥ ३८ ॥ कतिपयदिनावसाने, विविक्षवः केचनापि लुण्टाकाः। अर्दिदिषत सुजातेन, स्वपिति न भीतस्ततो रात्रौ ॥ ३९ ॥ सुजयोऽपि तत्र रात्रावेति स्वापाय नित्यमप्यभयः। लुण्टाकलोकरक्षानिबद्धकक्षः प्रदोषेऽपि ॥४४०॥ व्यग्रतयाऽथ कदाचिन्निशीथसमये स आपतन् ददृशे। सदनोपरि संचारेण, सत्वरं स्वानुजभ्राता ॥ ४१ ॥ उपसृत्य मण्डलाग्रप्रहारतः पञ्चतां ततो गमितः। प्रविशच्चौरभ्रान्त्या, ज्ञात्वा च शुशोच सुचिरमसौ ॥ ४२ ॥ व्यतिकरमेवं ज्ञात्वाऽनुतापपावकनिकामतप्ततनुः। सुबहुसुजातोऽशौचीद्विदितोदन्तो जयन्तोऽपि ॥ ४३ ॥ भयचकितकुरङ्गीलोचने पद्मसेने !, विदितमिदमशेषं मत्कथाया रहस्यम्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अजनि यदपमृत्योर्निष्फला स्थैर्यभाजो विजयसुजयबन्ध्वोर्जैनदीक्षाऽभिकाङ्क्षा ॥ ४४ ॥

अह भणइ कणयसेणा, तुमं समो होसि सामि ! थेरीए। इय विसयगामलाभे वि, जो न संतोसमुव्वहसि ॥ ४५ ॥ एगम्मि सन्निवेसे, वसंति दो सेज्झियाउ थेरीउ। ताणेगा आराहेइ, खित्तरक्खाकरं जक्खं ॥ ४६ ॥ अणुदिणं मंदिरं संमज्जिऊण लिंपेइ सत्थिए देइ। भत्तीए धुवमुग्गाहिऊण पूएइ जहसत्ति ॥४७॥ भणइ सुरो स पसन्नो, वरसु वरं साऽऽह देसु दीणारं। पइदिवसमेत्तिएणं, पुज्जंति मणोरहा मज्झ ॥ ४८ ॥ लद्धेण तेण सारखाण-पाणनेवच्छलच्छिसच्छाया। कुणइ अतिहीण पूयं सम्माणइ सयणसहियाउ ॥ ४९ ॥ अह मच्छरछारच्छुरियमाणसा पुच्छए परा थेरी। हे थेरि! कहसु सव्वं, तुह कत्तो एत्तिया रिद्धी ॥ ४५० ॥ भणियं ए(चे)ईए अहं, कह न कहिस्सं नियाए भइणीए। संकरियाए पुव्वं, जह कहियं जोगराएणं ॥ ५१ ॥ तओ भणियं तीए कहेहि, ताव कहाणयं एयं। पच्छा पुच्छिय कहिज्जासु, तओ सा कहिउमारद्धा ॥ ५२ ॥

जोगरायनामाओ ठक्कुरो एगो कइवयपत्तिपरिवारिओ पत्तो पट्टणमेक्कं, परिसराऽऽरामवसुंधराए साहारतरुच्छायाए उवविट्ठो विसमिउं। पुरमज्झाओ निग्गओ तत्थागओ एगो पुरिसो। उववेसिऊण तंबोलदाणपुव्वं पुट्ठो य ठक्कुरेण। किंनामधेयमेयं नयरं ?।

पुरुषः—कलिमहाराएणमप्पणो पाणवल्लहस्स पसायदाणेण दिज्जमाणमणायारं नामेयं पट्टणं। योग०—कीदृशोऽत्राऽऽचारप्रचारः ?।

पुरुषः—अणायारे केरिसो आयारो होइ। तहवि सुणेहि—

जूयारपारदारिय-विडगंठिच्छोडखत्तहडपाया। पाएण एया निवसइ, एत्थ पुरे तुंगधवलहरे ॥ ५३ ॥

योग०—अहो आचारचातुरीचतुरस्रप्रजारामणीयकं नगरं धवलगृहाणाम्। कः पुनरत्र कलिमहाराजस्य प्रसादपात्रं पार्थिवः ?।

पुरुषः—अविचारो नाम।

योग०—युज्यते अनाचारस्याविचाराधिपत्यम्। अयोमुद्रिकायां हि काचमणिरेव योग्यो भवति ॥ ५४ ॥ के पुनस्तस्य गुणाः। ॥ ३५ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योगराज्ञा विसंवादि-राज्यस्थिति प्रेक्षणम् ।

पुरुष०—नहु रक्खेइ देसु पुरु पट्टणु, कर करेइ नवनवा अभिक्खणु । मंडइ कूडुपजाहं जउप्परि, कोसु तहावि होइ रित्त उपरि ॥५५॥
कुसलि खेमि संजाइ विहाणइ, अज्जु जाउ नायरजणु जाणइ । दिवसु जाइ वरिसेण समाणउ, सो करेइ इयराणि वराणउ ॥५६॥
योग०—साध्वी राजलीला । काकोऽपि पार्थिवो राजहंसपरिवारः श्लाघ्यते तत्कथय कः पुनरमात्यः ? ।
पुरु०—अन्नाओ अमच्चो । जस्स पुरे पत्ताणं, रावा हत्थाण होइ परिताणं । उप्पिट्टणय पहारो, जारिसउ मालपडियाणं ॥ ५७ ॥
योग०—उचितमुचितेन योजयति विधिः । अविचारस्य खल्वन्याय एव संगच्छते । युक्तं चोद्यते—जूयारियस्य धूया, परिणीया गंठिछोडपुत्तेण । जुडियं वेवाहित्तं, मिलियं रयणस्स उ रयणं ॥ ५८ ॥ योग०—कः प्रतीहारः ? । पुरु०—पिसुणपयारो पडिहारो । पडिओ सुकालह पासि, एत्थु अत्थि मनभंतिकरि । जो पडिहारह पासि, धणकणलुद्धउ जाइ जणु ॥५९॥ योग०—कः पुनर्नगरारक्षः ? ।
पुरुषः—सव्वलूडि[1]नामो । चोरचरडबंदियहं न [2]मुक्कइ, [3]भासिउ भागु लेइ नहु संकइ । रक्खवालु खयकालु सुरज्जह, सव्वलूडि भुल्लइ न सकज्जह ॥ ४६० ॥ योग०—अहो माणिक्यानामेकावली । श्रेष्ठी कतमः ? ।
पुरुषः—लइवुडित्ति सेट्ठी । विहिमाणिहिं ववहरइ निच्चुसेईं तुलकरिसिहिं । घयमहुगुग्गुलगुलीगुलिहिं, इयरेहिं विमिस्सिहिं ॥६१॥ पंचवीस बोल्लेइ बोल्लि पावियइ न एक्कहिं । तहवि धम्मतुल्ल एत्थु नयरि मन्नियइ सुलोक्केहिं ॥ ६२ ॥ परं पुत्तेण [4]गुणगालेण, मूलनासेण लहुणावि । विभिन्नी[5]भूएण संपइ, पच्छे पाडिउव्व सो जाओ ॥६३॥ जओ—उग्घाडइ फुक्काए तालय[6]मच्छीणमजणं हरइ । खणइ कुहणीहिं खत्तं, गंठिं छोडेइ पाएहिं ॥ ६४ ॥ योग०—अहो एकैकमेकार्गलम् । अस्ति मुनिरत्र कश्चिद्विपश्चित् ।
पुरुषः—अत्थि डलकावणसीसमित्तपरिवारो महातवस्सी सावगिली ।

[7]छारभरूकुंडियंगो वियडजडाजूडमंडियसिरग्गो । बगझाणं झायंतो, गसिउमणो सव्वपुरदव्वं ॥ ६५ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योगराज्ञा विसंवादि राज्यस्थिति प्रेक्षणम् ।

योग०—यदि बकध्यानद्रव्यगार्द्ध्यें तदा किमस्य भस्मजटाकू(जू)टाभ्याम् । का पुनर्वेश्या गणग्रामणीर्गणिका ? ।
पुरुषः—मयरदाढाए दुहिया बहुमाया ।

अंखिहिं एगि निरिक्खइ एगहं देइ मणु, अन्नि इब्भ बोलावइ अन्नहं देइ खणु ।
सिरि सिकिरिउ लग्गहिं केवि दुवारि तसु, रूलहिं अलत्तउ जेव मुक किवि लेवि रसु ॥ ६६ ॥

योग०—अहो एतस्य वैशिके प्रागल्भी । अमूदृशि सर्वसमवाये कीदृशी राज्यव्यवस्था । पुरुषः—कहं न कहिस्सं ।

एत्थु पट्टणि लोगु लुट्टंतु चउहट्टइ हट्टि पुण जेण तेण जं, तंजि [1]लिज्जइ घरि बीहइ बंदियह धीर कावि कासु वि [2]न किज्जइ ।
नियचक्कहं परचक्कहं तणउ न भउ फिट्टेइ, आयउ देवह पइजणु [3]कहिहि केव छुट्टेइ ॥ ६७ ॥ अविय—जो जेण भिट्टिओ सो तेण पिट्टिओ, जो जेण दिट्ठओ सो तेण मुट्ठओ । जो जेण पाविओ सो तेण [4]चाविओ, जो जेण वासिओ सो तेण नासिओ ॥६८॥

किंच—कोइ विक्कयकज्जि जइ एइ, इह लेविणु किंपि किर तासु तिज्जु निवदाणि दिज्जइ, तं डाहिवुडं गहणि जं सुहाइ तं लेइ निच्छइ । सेट्ठि बलाहिउ मंतिभडु बंभणु सेसहं धाइ, खेमिकुसलि सो जइ कहवि वाह बिइज्जउ जाइ ॥ ४६९ ॥

योग०—अहो राज्यस्थितिसौख्यं तन्मध्ये प्रविश्य प्रेक्षामहे तावत् । इत्युत्थाय पुरुषं विसृज्य प्राप्तः श्रेष्ठिहट्टे, लयुवुडि श्रेष्ठी दृष्ट्वा–कहं जगए व पिया जोगराओ इति उट्ठेऊण जोहारेइ । आलिंगिऊण य उववेसेइ उच्चासणे । कणभत्तएसु पत्तीणमविज्जमाणेसु पत्तो इलकावण चेल्लउ उल्लवेइ । मज्झ एत्तो जंतयस्स तुम्ह पडलग्गाओ लग्गं जडाजूडे तणखंडमेगमासि । तं सावगिलिगुरुहिं गहेऊण पेसिओ हं अप्पणाय । जओ तिणकणोवि अकप्पणिज्जो णे अदिन्नो । करे करेह एयंति अप्पिऊण गओ सो नियट्ठाणे ।

१ लिप्पइ । २ तवि । ३ कलि B. D । ४ दामिओ D ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योगराजेन विसंवादि राज्यस्थिति प्रेक्षणम् ।

योग०—(स्वगतं–) कथमतृणहिंसकः कोपि महातपस्वी स भविष्यति, भविष्यति च मच्चिन्तितोऽर्थप्रथासामर्थ्यमस्येत्युत्थाय गृहे गत्वा भुक्त्वा च जगाम तत्पार्श्वे । नासिकाग्रलग्नलोचनमक्षमालाव्याकुलाग्रपाणिं सावगिलिगुरुमभिवाद्यावादीत् । भगवन्नस्ति मे दीनारसहस्रमेतत् । क्वापि स्थाने कारयध्वम् । सोमेश्वरयात्राप्रत्यावृत्तः प्रत्यादास्ये । भणितमनेन—न वयं द्रव्यमग्रपाणिनापि स्पृशामस्तद्यद्यवश्यकार्योऽयमर्थस्तदा मठिकान्तः क्वापि कोणे स्वहस्तेन मुञ्चस्व स्वहस्तेन च गृह्णीथाः, इत्ययं तथा कृत्वा नत्वा च निष्क्रान्तः । तिचउरमासेहिं तित्थजत्तं काऊण दिसोदिसं गएसु सव्वेसु पत्तिसु, कलहपिंगेणेगेण छत्तधरेणाणुगमिज्जमाणो पत्तो सो रत्तीए अणायारपट्टणदुवारदेसे । घोडयं झाडजडाए बंधिऊण कलहपिंगं पहरए मोत्तण जामदुगं जग्गिऊण पसुत्तो । तइज्जजामंते जग्गिऊण वाहरिओ पाहरिको । जागर्षि रे कलहपिंग ! त्रिचतुरवेलायामजल्पीत् । जग्गेमि जग्गेमि किं तु चिन्तं चिन्तेमि–चोरेहिं चोरिए चोरिए ए(प)यम्मि पल्लाणं तए वा मए वा पुट्ठेण वहियव्वं । योग०—मूर्खशेखर ! मल्हणिकायां गतायां किं घण्टकेन कार्यम् ।

प्राहरिकः—तुरीयप्रहरेऽप्यसौ तथा वादितः प्रोक्तवान्–चिंतं चिंतेमि–मह देहगामे प्राहज कोडुंबिओ उंघकंताए वल्लहो वसइ । तस्स जाया निद्रा नाम नंदणी । दु(द्दु)णुक्कएण परिणीया । तीए जाया ठिप्पा नाम बेट्टिया । तव्वरचिंताए वाउलोम्हि ।

योग०—धिग्मूर्ख ! ठिप्पायाश्चंदको वरः सुलभ एव, किमत्र चिन्तया । एवं च जाए पभाए पत्ता ते दोवि हिंडियपुरिसेहिं उद्दालिओ वाहणतुरंगो सुंकमदाऊण किणिओ तए एसोत्ति । कयमत्थयपल्लाणो कलहपिंगेण धारिज्जमाणछत्तो जोगराओ जाव पुरंतो पविसेइ, ताव बोल्लाविओ लइलइ तंडाहिवइणा मत्थए पल्लाणं पल्लाणोवरि छत्तंति, को एस विसरिसो संजोगो । ता देह मे ठाणं अहवा पल्लाणंति । न तस्स तत्थ कोइ ठाणंति अप्पियं पल्लाणं, जइ तं तुरंगं पावीहामो पल्लाणंपि पाविस्सामोत्ति । तओ अज्जु रत्तीए तुरंगो पल्लाणं च लूडियंति, रावाहत्थो पत्तो स सव्वलूडितलारपुरओ । विन्नत्तो वुत्तंतो तस्स सव्वो । जहा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अज्ज पुरदुवारे मज्झ केणइ गहिओ पाणहियाओ पाणहियाओ गलगट्टिया तलगट्टिया। चोरिओ चोरिओ। गसियं साइल्लाणं पल्लाणंति। भणियमणेण–महात्मन्! निगृह्य दुर्वृत्तांस्तान् प्रयोजनं साधयिष्याम्यवश्यमेतत्। किन्तु रिक्तहस्तानां रिक्तैव प्रयोजनसिद्धिः।

योग०—अहो नगरारक्ष! सत्यमस्त्येतदस्ति। किं पुनर्न साम्प्रतं किमपि मे पार्श्ववर्त्ति, सिद्धप्रयोजनः प्रयोजनौचित्येन पूजां करिष्ये।

सर्वलूडिः—कथय तावत् कौतस्कुतीयं तेन वाद्भुत(वस्तु)भूतभक्तिवासो वेषविशेषलक्ष्मीः। योगराजेनैकान्ते क्वाप्यन्यवासांसि निवस्य समर्पितानि संवर्त्य तस्मै प्रोक्तं तेन–अपराह्ले सिद्धप्रयोजनं त्वं करिष्यामीति।

योग०—आस्तदेतदस्यापहारस्यापि कलान्तरप्रदानं यदनेन मच्चित्रवस्त्रस्वीकरणं। भवतु किं क्रियते। आशापिशाचिकैवं वञ्चयति। अपराह्लेऽपि प्राप्ते परेद्युरागन्तव्यम्। पुनः परेद्युः पुनः परेद्युरित्याचक्षाणोऽयं गणरात्रमेवातिक्रामयति न पुनः किंचित्कर्तुकामः, केवलं प्रियालापमधुरकेण मां मिमारयिषति। गच्छामि श्रीकरणमिति गत्वा अन्यायमित्यस्य पूरस्तादशेषं यथावद्वयजिज्ञपत्। सचिव ऊचिवान्–कर्त्तास्मि ते महतीं साराम्। प्रातःकरणवेलायां सर्वमत्रैव समर्प्पयिष्यामीति स प्रत्याशान्तःकरणः करणोदराद्द्वार-प्राप्तः प्रोक्तोऽमात्यप्रधानपुरुषेण प्रातरमात्याय दातुं दीनारशतं सहैवानीय ममेकान्तेऽर्प्पणीयं येन प्रयोजनसिद्धिर्भवति।

योग०—करिष्याम्यौचित्यं सचिवाय प्रयोजनसिद्धौ पदान्तरे मिलितौ पारिग्रहिकपुरुषौ। ताभ्यामपि तदेवादिश्यते ततस्तौ प्रतीहारकटुकादीनपि द्वात्रिंशत्षोडशादीनपि याचमानांस्तेनैवोत्तरेण प्रेरयन् प्राप्तो दारभूमिकाम्। वणिग्लोकपेटकं शृङ्खलायन्त्रितमालोक्य प्राहरिकमप्राक्षीदपराधमेषाम्। हस्तेन तेन निर्दिशता दिश्यते स्म। रायगोउलाओ अपुच्छियाऽऽणीय गोमयईंधणेण एयस्स गेहे रद्धं खद्धं च। तिचउरपाडिवेसियाणेयाण गेहेसु वीसमिओ तस्स धूमो। एयस्स कुक्कुरीए रायकुंजरस्स सम्मुहं भुकरियं। एयस्स गिहदुवारे गच्छंतस्स राइणो अगाहा अंगबाहा जायत्ति रायाऽवराहिणो सव्वस्सावहारेण दंडेयव्वा एएत्ति।

योग०—अहो अन्यायनिष्ठा। अहो अयुक्तिप्रतिष्ठा। कालरात्रिरुपस्थितेदानीं धनिनां धर्मिणां साधूनां वा, दीनारशतममात्यो

योगराजेन विसंवादि राज्यस्थिति प्रेक्षणम्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मार्गति। पारिग्रहिकादयोऽपि यथारुचितं याचन्ते। तुरङ्गस्तु मे पञ्चाशतमेव लभते, प्रहारपार्श्वादवलम्बको भारिकः। ततो यदि जीवन्नितो निःसरामि तदा लब्धमेव मया सर्वमिति।

"काले कलौ राजनि चार्थलुब्धे, धनानि किं रक्षत जिवितानि। स एव लाभो ननु शौनिकेन, मुच्येत मेषो गतकर्णको यत् ॥४७०॥" इति निराशीभूय निर्गतोऽसौ कुताऽन्यतो मुखद्वारां शावगिलिगुरोर्मठिकां गवेषयमाणोऽपि यावन्न प्राप्नोति तावन्निराशोऽध्यासीत्। सोऽयं क्षते क्षारावसेकः। मन्ये दीनारसहस्रस्याप्यश्वगतिरेवाभूत्। कदाचिद्विचरता चतुरेणोपलक्षितो भिक्षुवेषेण क्षुल्लकः सः। तत्पृष्ठलग्नो जगाम सावगिलिगुरुमठिकाम्। प्रणम्योपविष्टस्तत्पुरस्तात्प्रोवाच–भगवन्नर्प्यतां तद्दीनारसहस्रं न्यासीकृतम्।

सावगिलि—कस्त्वम्? क्व कदा दीनारसहस्रमाप्पतं, धूर्त्तः कश्चिदस्मद्ध्वंसनाय प्राप्नोसि।

योग०—स्वामिन्? किमेवमुच्यते। तदा त्वद्वचनान्मठिकान्तर्मुक्तं मया तत्।

साव०—तत्किं परस्वमङ्गुल्यग्रमात्रेणाप्यस्पृशन्तो वयं लुण्टाकाः कल्पितास्त्वया पर्याप्तं त्वदुपास्त्या। याहि यथागतमित्युत्थाय चिन्ताचक्रचटितो भ्रमन् गृहीतपुष्पचतुस्सरः प्राप्तो मकरदंष्ट्रायाः पार्श्वे, पृष्टस्तया प्रयोजनमवोचत्। तयापि जल्पितम्–अहं ते पओयणं पसाहेमि जइ लद्धस्स अद्धं देसि।

योग०—'सर्वनाशे समुत्पन्ने, अर्द्धं त्यजति पण्डितः' इति मनस्याधाय प्रतिपन्नवानेतत्, कथितं च तस्य तया। मइ तत्थ गयाए तए एवमेवं च कायव्वंति। तओ पत्थरभरियपेडाभारियमत्थयाहिं दसहिं दासीहिं अवरेण वि पउरेण पाइक्कचक्काइ परिवारेण सद्धिं सुहासणासीणा धारिज्जमाणमाऊरायवत्ता पत्ता सा सावगिलिगुरुसमीवे पणमिऊण भणिउमाढत्ता—

कलिराज्यकथा—मह धूयाए बहुमायाए चंपाए गयाए बहूणि दिणाणि जायाणि, ता मए तद्दाणयणाय तत्थ गंतव्वं। तओ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एयाओ मणिमरगयमोत्तियमाणिक्ककंचणभूसणाइभरियाओ दसपेडाओ ठाणे ठाविज्जंतु, जावाऽहमागच्छामि । अत्रान्तरे प्राप्तो योगराजोऽजल्पत्-स्वामिन्नर्प्यतां मे न्यासीकृतं दीनारसहस्रम् ।

साव०—त्वमेव जानासि । यत्र स्वहस्तेन न्यस्तमस्ति तत एवाददीथाः । आदेश इति मठिकान्तः कोणान् गृहीत्वा निष्कान्तो योगराजः । दासीओ जाव ताओ पेडाओ मज्झे मोत्तुमुज्झयाओ तावागंतूण वद्धाविया मयरदाढा एगाए दासीए । सामिणि समागया गणिया सिग्घमागच्छिज्जउ । तओ जहेवागया गया सा गहियपेडा । वा(घा)लियगिलियदव्वो सावगिली ठिओ पसारियमुहो । समप्पियाणि पंच दीणारसयाणि मयरदाढाए जोगराएण, सेसदव्वस्स सयं धारिऊण अप्पियाणि चत्तारिसयाणि मूलनाससेट्ठिणो रक्खणाय निक्खेवगो, सयं च ण्हाणभोयणाईणि कारविंतीए संकरियाए दासीए अप्पियं । उवभुत्ते तंमि जाव वसणभोयणाइकारणेण दीणारसयमेसो मूलनाससेट्ठि मग्गेइ । ताव सो साहिक्खेवमक्खिसु । को तंसि, किं तं दीणारसयं ?, एवं वुत्तो सो आसीणो तस्स धरणगे लंघणंते समागओ तस्स ताओ लयवुडिसेट्ठी, भणिओ य तेणेसो वच्छ ! जं अत्थए एयस्स समप्पेसु । अन्नहा न छुट्टेसि । अहवा गहिलत्तणं काऊण गमेसु दिवसाइं । अहमेयं निवारइस्सं । जीरवियाणि चत्तारि वि सयाणि अद्धद्धेण विभजिस्सामो । बीयदिणे वि जोगराएण मग्गिज्जंतो मूलनासो गहिलत्तणेण 'आवावाव' त्ति करेइ । सयणो परजणो य जो कोवि किंपि भणेइ तस्सवि सव्वस्स सम्मुहं आवावावत्ति करेइ । तओ भणिओ जोगराओ लयवुडिसेट्ठिणा सव्वेण असव्वेण वा तए पारद्धो पुत्तो गहिलत्तं पत्तो, तओ परव्वसाओ एयाओ कहं किं पिलेसि । ता तुण्हिको चिट्ठसु, उट्ठिऊण ठाणाउ एयाओ गच्छेसु । तओ तेण कहियइ राउलु खाइ, मइं रक्खसु जिव भुक्खियउं । जइ पुणु लियणह जाइ सेट्ठिज काल विलंबियइ । इय चिंतिऊण कालविलंबे आरद्धे कइवयदिणाऽवसाणे भणिओ मूलनासो जणएण, अप्पेसु दोन्नि दोणारसयाइं पुव्वपडिवन्नाणि । तओ तस्सावि संमुहं भणियमणेण–' आवावाव' त्ति । पुणोवि भणिए वुत्तं तं चेव तओ कुविएण ताएण भणिओ मूलनासो । अरे मए वि सद्धिं 'आवा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाव'त्ति करेसि । तओ भणियं तेण, तएवि तुह पिउणावि पियामहेणावि सद्धिं 'आवावावत्ति'। तओ उट्ठिऊण गओ सो निय-गेहे, हक्कारिऊण भणिओ जोगराओ । वालेमि ते चत्तारि दीनारसयाणि जइ मे दोन्नि देसि, पडिवन्नं तेण, कहिओ कन्ने कज्जवि-सेसो । तओ गओ जोगराओ मूलनासस्स पासे जोहारिऊण भणिओ तेणेसो, नाहं किंपि मग्गेमि जए अणुजाणसि ता तुह पत्तित्तणेण जीवामित्ति । अणुन्नाओ सो तहा आराहिउं लग्गो, जाओ वीसासठाणं । कयाइ पओयणेण पट्ठावियाए सेट्ठिणीए दिन्नो सो चेव सहाओ । मुक्का य तेण नेऊण सेट्ठिणी कत्थइ पच्छन्नघरे । दिन्नं दुवारे तालयं । आगओ मूलनासस्स पासे, कहिं सिट्ठिणित्ति पुच्छिओ । न जच्छइ (जंपिज्जइ) उत्तरं । निबंधेण य पुच्छिज्जंतो जंपेइ, का सेट्ठिणी, को तंसि ?, भुज्जो भुज्जो चड्डिज्जंतो भणिइ ' आवावावत्ति, ' सामभेयाइणा भणिज्जमाणो वि लोएण तं चेव वागरेइ । तओ भणिओ सो लयवुडिसेट्ठिणा । जइ एयस्स संतियं सव्वस्समप्पेसि ता लहेसि सेट्ठिणिं, अन्नहा गया चेव म(तु)हवहुया । तहा कए तेणऽप्पिया तस्स पिया । दिन्नाणि दोन्नि दीनारसयाणि लयवुडिसेट्ठिणो किंपि वसणभोयणकज्जेण धारिऊण सेसं निक्खयं खड्डाए जहा संकरिया न याणेइ । वसणभोयणाइदव्वव्वए विसेसं पिच्छंतीए तीए पुच्छिओ एसो, कओ ते एत्तिया वित्तसंपत्ती । कहिओ तेण सब्भावो, न उण दव्वगोवणट्ठाणं । तओ घरव्वयजोग्गं मग्गियं किंपिं दव्वं । अह रत्तीए तीए सुत्तविड्ड(द्ध)एण ठियाए उट्ठिऊण तेण तओ ठाणाओ कड्ढियं किंपि । अणुमग्गलग्गाए जाणियं संकरियाए ठाणं । बीयदिणे बाहिरगयस्स तस्स उक्खणिऊण गया सा । आगओ जोग-राओ जाव न संकरियं पेच्छइ ताव संकिओ गओ निहाणठाणे, तयंपि सुन्नं पिच्छंतो जाओ सव्वसुन्नो । भोयणमेत्तंपि अपाव-माणो निग्गंतूण नयराओ गओ सट्ठाणं । चिन्तयति च—

यैरौदार्यमहोदयान्न विहिता वन्द्यार्थिनां प्रार्थना, यैः कारुण्यपरिग्रहान्न गणितः स्वार्थः परार्थं प्रति ।
ये नित्यं परदुःखदुखितधियस्ते साधवोऽस्तंगताश्चक्षुः संवृणु बाष्पवेगमधुना कस्याग्रतो रुद्यते ॥ ४७१ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तथा—अस्माभिश्चतुरम्बुराशिरसनाविच्छेदिनीं मेदिनीं, भ्राम्यद्भिः स न कोऽपि निस्तुषगुणो दृष्टः श्रुतो वा क्वचित् ।
यस्याग्रे चिरसंभृतानि हृदये दुःखानि सौख्यानि च (वा), व्याख्याय क्षणमेकमर्द्धमथवा संप्राप्यते निर्वृतिः ॥७२॥

ईर्ष्यालुस्थविरयोः कथानकम्—तओ य—कलिरज्जकहा कहिया इय थेरि ! तए कहाविया जाऽसि । अहुणा कहेमि जह मज्झ, संपया पुच्छियाऽसि तए ॥ ७३ ॥ किंतु जह जोगराएण, संकरीए पयासिए तत्ते । विहिओ वंचपयारो, रक्खेयव्वो तहा तुमए ॥ ७४ ॥ जक्खेण पसन्नेणं, मह दिन्ना मग्गिया इमा लच्छी । तो सावि सुरं तं चेव, निच्चमाराहिउं लग्गा ॥ ७५ ॥ दुगुणं थेरीदिन्नाउ, मग्गए सा सुरो वि सो देइ । तीए सोहंती सावि, पुच्छिया मूलथेरीए ॥ ७६ ॥ कहिए जहट्ठिए सा, पुणोवि मग्गेइ मच्छरेण सुरं । फुट्टउ महेगनयणं, तडत्ति तुह पहु ! पसाएण ॥७७॥ चिंतइ किं काहमहं, थेरी एएण चारुरूवेण । तह मह अस-हंतीए, तीए सिरे पडउ पुण वज्जं ॥ ७८ ॥ लद्धे वरंमि संकेइ, सा पुणो किंपि लद्धमेईए । अइलोभेणऽभिभूया, जक्खमखत्तेण पूएइ ॥ ७९ ॥ मग्गेइ पुव्वथेरी, दिन्नाओ दुगुणमेव दव्वहया । पंपोट्टाणि व फुट्टाणि, दोवि तो तीए अच्छीणि ॥ ४८० ॥ हा हा हयास हे जक्ख !, तिक्खदुक्खंमि किं तए खित्ता । कह मे जम्मो जाही, जा उक्खयं इय पसाउ ते ॥ ८१ ॥ इय अक्कोसे-माणी, भणिया जक्खेण सा विलक्खेण । हे चंडि मुंडि रंडे !, किं कुप्पसि मग्गिए दिन्ने ॥ ८२ ॥ पावे ! कुप्पसु नियमच्छरस्स, अहवा अईवलोभस्स । किं तुज्झ न पुज्जंतं, दीणारदुगेण पइदियहं ॥ ८३ ॥ कस्सइ पुट्ठिवि लग्गा, आगच्छंती गिहंमि दट्ठूण । भणिया सा थेरीए, हाहा जायं किमेयं ति ॥ ८४ ॥ भणियमिमीए मह तिव्वदिव्वदोसद्दुयाए सो जक्खो । स हि रक्खसो व्व जाओ, निरंधणा(ला) निग्घिणेण कया ॥ ८५ ॥ पभणइ सा दिव्वस्स व, जक्खस्स व कीस देसि तं दोसं । अप्पाणमुवालंभेसु, भूरिलोभेण अभिभूयं ॥ ८६ ॥ इय कहियं कहिऊण भणियमेईए लडह(ल)उचकरसकरसुंदरसुक्खकर, पत्तिपत्तपइं अट्ठ(द्ध) अम्हि-अइपिम्मपर । अवरि पवरि ता सामि ! सोक्खि मा लोभु(ह)करि, जिव न होइ लोभंधळ अंधळ थेरी परि ॥ ८७ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जम्बूस्वाम्यवादीत्—'श्रृणु सुन्दरि! कनकसेने! भवतीभिः पर्वमैत्र्यभाग्भिरलम्। जोत्कारमित्रमात्रैकसौहृदो येन वर्त्तेऽहं ॥ ८८ ॥ क्षितितिलकपुरे जितशत्रुभूपतिस्तस्य सोमदत्तोऽभूत्। कुशलः स्वकाधिकारे सुधीः सुधीरश्च सचिववरः ॥ ८९ ॥ मित्रत्रितयी तेनार्जि, तत्र सहपानभोजनः प्रथमः। अपरः पर्वणि दृष्टापृष्टो जोत्कार्यमाणोऽन्यः ॥ ५९० ॥ प्रथमस्य सदा भक्तिं करोति पर्वसु पुनर्द्वितीयस्य। तार्त्तीयीकस्य कदापि मार्गदृष्टस्य नतिमात्रम् ॥ ९१ ॥ प्राणान्तिके कदाचित्प्राप्ते व्यसने ततोऽपि भूभर्त्तुः। प्रथमसुहृदः स मन्दिरमन्वसरच्चकितचकितमना ॥ ९२ ॥ विनिवेदितवृत्तान्तो, नितान्तभीतेन तेन सोऽभिदधे। तरसा निस्सर गेहात्, कुलक्षयो मेऽन्यथा भविता ॥ ९३ ॥ अधिगततत्त्वस्तस्मात्तरसा निरगात् प्राङ्गगृहोदरात्सचिवः। निजसद्मद्वारं यावदनुययौ स तमतिकृतघ्नः ॥ ९४ ॥ प्राप्तोऽथ पर्वमित्रस्य, सद्म सप्रश्रयं परमकार्षीत्। कार्यमवधार्य वक्ति स्म, यत्र यातासि तद्ब्रूहि ॥ ९५ ॥ अविचिन्तदथामात्यो, भृशमेषोऽप्याकुलः स्थितेऽत्र मयि। निर्यामि ततस्तं सोऽप्यन्वपतच्चत्वरं यावत् ॥ ९६ ॥ तत्राऽमात्यो दध्यो, धिग्धिग्मित्रत्वमेतयोरुभयोः। खादाऽऽचामायामेव, मित्रतां यद्गतावेतौ ॥ ९७ ॥ "मित्राणि व्यसनाप्तौ दारिद्र्योपद्रवागतौ दाराः। सुधिया परीक्षणीया, भृत्याः कृतार्थविनियोगे ॥ ९८ ॥" गच्छाम्यूर्ध्वमुखस्तद्यद्वा जोत्कारमित्रमपि वच्मि। मा नाम कदापि भवेदस्मादपि कार्यपर्याप्तिः ॥ ९९ ॥ चरणेषु नखाः शीर्षे, केसरिणा केसराणि धार्यन्ते। करिकुम्भदलनकेलावस्य नखा एव सध्यञ्चः ॥ ५०० ॥ इति सुचिरं सञ्चिन्त्य, प्राप्तो जोत्कारमित्रवेश्मान्तः। तेन सदतिथिप्रतिपत्तिगौरवेणादराद्ददृशे ॥१॥ सविदिततत्त्वोऽवादीन्मा भैषीर्निर्भयो निषीद त्वम्। स्वीकर्त्तुमलंकर्म्मीणविक्रमः कोऽप्यतो न त्वाम् ॥ २ ॥ विषयमिमं तित्यक्षुर्यियासुरङ्गान् प्रजल्पितो तेन। उत्पीडिततूणीरः स पुरोऽभूत्तस्य निस्सरतः ॥ ३ ॥ निर्भयपुरीं परापत्, गृहीन् गृहीत्वा नवग्रहमवात्सीत्। सम्पाद्यमाननिःशेषवस्तुरमुनान्तिकस्थेन ॥ ४ ॥ अत्रार्थोपनयः सोऽयं, यथा मित्रत्रयी तथा। क्रमेण काय-ज्ञातेय-धर्मास्तद्गुणयोगिनः ॥ ५ ॥ खर्ज्जूरखीरखण्डाद्यैः, कस्तूरीकुङ्कुमादिभिः। माणिक्यभूषणैर्नित्यं, कायोऽयमुपचर्यते ॥ ६ ॥ प्रेताधिराजवैधुर्ये, सम्प्राप्ते जीवमन्त्रिणः। दूरेऽस्तूपक्रिया कापि, पदमप्यनुयाति नो ॥ ७ ॥ पुत्रमित्रकलत्राणि, मातापितृसहोदराः। स्वाः शेषा अपि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निःशेषाः, प्रयुक्तसदुपक्रिया ॥ ८ ॥ जन्तौ प्रेत्यपथं प्राप्ते, क्रन्दित्वा कंचन क्षणम् । श्मशानकाश्यपीं यावत्, गत्वा याति पुनर्गृहम् ॥ ९ ॥ धर्मोऽयं क्रियते लोके, गौणवृत्त्या कदाचन । मुख्यवृत्त्या निजागारप्रयोजनपरायणैः ॥ ५१० ॥ प्रेत्यमार्गे स एवैकः, सध्रीचीनत्वमश्नुते । पार्श्ववर्त्ती सदाऽग्रेऽपि, पूरयत्यमिवाञ्छितम् ॥ ११ ॥ इति मित्रत्रयी कथा ॥ तत्र स्वकीयवपुषो न च वः सुखाप्त्यै, वर्त्तेऽहमादिमसुहृत्द्वितयी सदृक्त्वात् । जोत्कारमित्रसदृशी तु सदा प्रमोदादाराधयामि जिनधर्मधुरां स्वधैर्यात् ॥ १२ ॥ युक्त्या मृगाक्षि ! कलिराज्यकथापि सैषा, भोगस्पृहां प्रतिरुणद्धि मम प्रयत्नात् । नृणामसंयमपुरे परिसृत्वराणां, यद्योगराजगतिरेव भवेदवश्यम् ॥ १३ ॥ अथ प्रभवः सबहुमानमाह—

"धन्यास्त एव तरलायतलोचनानां, कन्दर्पदर्पघनपीनपयोधराणाम् ।
क्षामोदरस्फुरितनाभिवलीत्रयाणां, दृष्ट्वाऽऽकृतिं विकृतिमेति मनो न येषाम् ॥१४॥"

कान्ताकटाक्षविशिखा न खनन्ति यस्य, चित्तं न निर्दहति कामकृतोऽनुरागः ।
कर्षन्ति भूरिविषयाश्च न भोरु(लोभ)पाशां, लोकत्रयं जयति कृत्स्नमिदं स धीरः ॥ १५ ॥

पुव्वभवभारियाहिं, कहियाइं कहाणयाइं एयाइं । चत्तारि चउहिं इन्हिं, इयरा एगं चिय कहिंति ॥ १६ ॥ पभणेइ नागसेणा, जंबूसामिं सदुत्तिजुत्तीहिं । कणगसिरी कमलवई जयस्सिरीहिं पुरक्करिया ॥१७॥ पियपच्छे पाडिज्जइ, वुत्तं जुत्तंपि कणगसेणाए । किं तुमए नियनीसंकवंकउत्तीहिं जुत्तीहिं ॥ १८ ॥ अणुसरसु धम्ममग्गं, सम्मं सम्माणमायरेसु जिणे । गिहवासे वि ठिओ तं, दव्वं विलसेसु वियरेसु ॥ १९ ॥ अइदुहियदुत्थियाणं, दिंता पालिंति केवि गिहवासं । जे सूरा इयरा पुण, किंविणा पासंडिणो हुंति ॥ ५२० ॥ भणियं च—" गृहाश्रमसमो धर्मो, न भूतो न भविष्यति । पालयन्ति नराः शूराः, क्लीबाः पाखण्डमाश्रिताः ॥ २१ ॥" दव्वज्जणे व्व सव्वायरे ण धम्मज्जणे वि पाणेस ! । न सुहाय होइ अग्गिलग्गो लोहो लोहग्गलाइव्व ॥ २२ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अमरसेण-प्रवरसेन-भ्रात्रोः कथा—कंचणपुरंमि कंचणसेहररायस्स आसि दोन्नि सुया। नामेण अमरसेणो, पढमो बीओ पवरसेणो ॥ २३ ॥ ताण पसायपरेणं, पिउणा जयकुंजरो कयाइ पुरा। दिन्नो आसि सया वि य, चडिया ते तत्थ कीलंति ॥ २४ ॥ जह उदयं तस्स नराहिवस्स कस्सइ जसो पयावो य। दोय सुकुलुग्गयस्स अहवा, ववसाओ सुकयजोगो य ॥ २५ ॥ तह कुसुमसरसमाणे, ते रममाणे सुदंतिणा तेण। पेच्छंती मच्छरमुव्वहेइ सावक्किया माया ॥ २६ ॥ वारं वारं रत्तिं, दिवा य कन्ने खणेइ नरवइणो। सामिय! सुयस्स मज्झं, दिज्जउ जयकुंजरो एसो ॥ २७॥ किं किज्ज(इ)उ तुह वल्लह, देह पसाएण अहव चाएण। एत्तियमेत्तंपि न होइ अम्ह ता कूडनेहोऽसि ॥ २८ ॥ वियसंतरोसधूमंधयारधूसरमिमं मिसिमिसंतं। दट्ठूण भणइ राया, एवं कह होइ कयाइ ॥ २९ ॥ भत्ता सत्ता जुत्ता, पुत्ता ते किं न अप्पणा दिन्नो। कह मग्गिज्जइ स गओ, तं देमि जमन्नमाएससि ॥ ५३० ॥ कुग्गहगहिलं महिलं, नाऊण नाराहिवो मयणमूढो। भणइ कुमरे करिंदं, अप्पह मह देमि दस करिणो ॥३१॥ नाऊण चुल्लमायाए, चेट्ठियं सुट्ठु निट्ठुरं एयं। चिंतंति ते वि एवं, धीदुच्चरियं महेलाणं ॥ ३२ ॥ नियमाइनिव्विसेसेण, गउरवेणं वयं निएमो तं। नियसुयवच्छलयाए, सा णे जाणेइ रिउणो व्व ॥ ३३ ॥ करिणो सिणीहिं वग्गाहिं, वाइणो गोणया वि नत्थाहिं। कीरंति वसे पुरिसा, मरालीलाहिं महिलाहिं ॥ ३४ ॥ ता माणी ता जाणी, वियक्खणो ताव सज्जणो ताव। जाव घरट्टोव्व नरो, न भामिओ दुट्ठमहिलाहिं ॥ ३५ ॥ "तिहुयणु सयलु जि पेक्खहिं अंखिहिं, लक्खहिं गयणि मग्गु जे पंखिहिं। जलपरिमाणु जि सायरि बुज्झहिं, तरुणिचरित्ति ते वि निरु मुज्झहिं ॥ ३६ ॥" अहवा सव्वं सोहेइ, सुंदरीणं असुंदरीहाणं। ताओ वि नाम एवं, करेइ अव्वो महच्छरियं ॥ ३७ ॥ दस देइ मत्तदंती, जइ नाम तहावि तेहिं किं कज्जं। माणपणासे पुरिसाण, होइ कोडी वि तिणतुल्ला ॥ ३८ ॥ माणि पणट्ठइ जइ न तणु, तो देसडा चएज्ज। मा दुज्जणकरपल्लविहि, दंसिज्जंतु भमेज्ज ॥ ३९ ॥ तथा—"पुण्येऽरण्ये पुरे वा सितघ[1]नच्छन्नपालीं कपालीमादाय [2]न्यायसज्जद्विजहुतहुतभुग्धूमधुम्रोपकण्ठम्।

१ वनवसनच्छन्न B. C. घनवसच्छन्न D। २ न्या D।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्वारं द्वारं दरिद्रो वरमुदरदरीपूरणाय प्रवृत्तो, मानी [1]धीमान् सनाथो न पुनरनुदिनं तुल्यकुल्येषु दीनः ॥ ५४० ॥" एएणेव छलेणं, गच्छामो इच्छमेव ता एत्तो । न फलाण वणे वुड्ढी, खलंगुली दंसीया णसिया ॥ ४१ ॥ " नियपुन्नाण परिक्खा वियक्खणत्तं जणाण ववहारे । भासावेसविसेसाऽवगमो य न होइ नियदेसे ॥ ४२ ॥ " इय चिंतिऊण रत्तीए, दो वि ते निग्गया निरुव्विग्गा । इय वुत्तंतं कस्सवि, अकहंता नियजणस्सावि ॥ ४३ ॥ अइतुरियतरपयारा, अक्खंडपयाणएहिं ते पत्ता । अइगरुयाए एगाए, भीमरूवाए अडवीए ॥ ४४ ॥ दावेइ न वहुया, सुल्लासं जा सासुयव्व दुट्ठमणा । वरवणमालासोहाए, सूहवा विण्हुमि(मु)त्तिव्व ॥४५॥ दीसंति चित्तसीहा, मयमिहुणालंकिया नहसिरिव्व । सारंगमारणुज्जयपुंडरियक्खा हरिकहव्व ॥ ४६ ॥ तत्थेगस्स महावडतरुणो छायाए वीसमंतस्स । कुमरस्स अमरसेणस्स, आगया झत्ति सुहनिद्दा ॥ ४७ ॥ वरसेणो पायंते, पाए संवाहए सुहनिसण्णो । जागरमाणस्स भयं च, भीमसत्ताहिं नहु होइ ॥ ४८ ॥ अह वडवासीजक्खो, निरिक्खए लक्खणाइं सुत्तस्स । चिंतइ किज्जंतो होइ, बहुगुणो एत्थ उवयारो ॥ ४९ ॥ उवयारो किज्जइ सज्जणेण सव्वत्थ नत्थि संदेहो । चिंतेयव्वं एयं तु, किंतु कत्थेस वित्थरइ ॥ ५५० ॥ " अहिमुहसिप्पिमुहेसुं, अप्पेइ पयोहरो पयं जुगवं । एगत्थ विसं अन्नत्थ, मोत्तियं तं पुणो होइ ॥ ५१ ॥ " वरसेणो वि हु मा पंतिवंचिओ होउ पुन्नपुरिसोत्ति । परिभाविऊण जक्खो, पच्चक्खो भणइ वरसेणं ॥ ५२ ॥ अतिहीण दूरदेसागयाण तुब्भाण किंचि उचियमहं । इच्छामि काउमिय तस्स अप्पए दोन्नि रयणाणि ॥ ५३ ॥ एगेग ताण रज्जं, सिज्झइ अन्नेण इच्छिया लच्छी । पढमं अप्पेयव्वं, सबंधुणो तुज्झ चेवन्नं ॥ ५४ ॥ पूइत्तु पणवमायासाहाहिं सत्तवार जवियाहिं । पणमित्तु पत्थियऽत्थस्स, होइ सिद्धी न संदेहो ॥ ५५ ॥ रयणा पडिच्छिया ते, दूरावज्जियसिरेण पंजलिणा । वरसेणेणं चेलंचलस्स गंठीए बद्धा य ॥ ५६ ॥ अंतरहिओ सुरो तो, खणंतरे उट्ठिओ अमरसेणो । तिहिं वासरेहिं तो सा, महाडई लंघिया तेहिं ॥ ५७ ॥ पाडलिपुत्ते पत्ता, तप्परिसरसरवरस्स पालीए । विहियंगपायसोया, चूयतले वीसमंति सुहं ॥ ५८ ॥ तव्वेलं चेव कणीयसेण

[1] धृत्या ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विन्नत्तममरसेणस्स । पियबंधव ! लिज्जउ रज्ज–लाभसज्जं रयणमेयं ॥ ५९ ॥ कहिओ विहि जहत्थो, सवित्थरो थिरमणेण कायव्वो । फलसिद्धीए एयस्स, लाभवुत्तंतमक्खिस्सं ॥ ५६० ॥ अह एगंते साहारवीहियाए गओ स हरिसेण । पुज्जिय पणमिय पत्थेइ, पत्थिवत्तं सुथिरचित्तो ॥ ६१ ॥ विहियपहाणविहाणो, कयाऽवहाणो सयंपि वरसेणो । नियरयणाओ मग्गइ, सामग्गिं भोयणाईणं ॥ ६२ ॥ पयडीहूया तो अच्छराओ तत्थऽट्ठ लट्ठरूवाओ, निम्मियनिम्मलसुविसालचउसालसोहाओ । अब्भंगअंगमद्दणउव्वट्टणण्हाणभूसणाईहिं, सम्माणिऊण निवं सावयंति देवंगवत्थाइं ॥ ६३ ॥ अइसरसपाणभोयणतंबोलपसूणपभिइ दाऊण । कत्थइ सव्वंपि खणेण, त गयं इंदयालं व ॥ ६४ ॥ भुत्तुत्तरं पसुत्तो, जावऽच्छइ ताव वच्छछायाए । जेट्ठकुमारो ता तत्थ, पंच पत्ताइं दिव्वाइं ॥ ६५ ॥ पाडलिपुत्ते पत्ते, पंचत्तं पत्थिवे अपुत्तंमि । गयहय–चामर–दुंदुहि–छत्ताइं पउरजुत्ताइं ॥ ६६ ॥ अहिसिंचिऊण कलसेण, गुलगुलेऊण मयगलो खंधे । आरोवेइ कुमारं, हओ विहि णिहिणइ हरिसेण ॥ ६७ ॥ विमलाओ चामराओ, ढलंति वज्जेइ दूंदुही पुरओ । वित्थरियमत्थयत्थं, संजायं सेयछत्तंपि ॥ ६८ ॥ भडचडगरेण महया, पविसेइ पुरस्स मज्झयारंमि । पणमिज्जंतो सामंतमंतिमंडलियलोएण ॥ ६९ ॥ नीहरिओ वरसेणो, तत्थावसरे गओ पुरस्संतो । निवकज्जेसुं पज्जाउलस्स किं मज्झ सोक्खंति ॥ ५७० ॥ अइचिरमेस गवेसाविओ वि सव्वत्थ जाव नो दिट्ठो । ता पत्तो पासाए, सो सज्जइ रज्जकज्जाइ ॥ ७१ ॥ अतिलोभे लोहर्गलागणिकाकथा—इयरो मागहियाए गणियाए गओ गिहंमि सयणोव्व । सयमेव ताव तीए, गंतूणब्भुवगओऽभिमुहं ॥७२॥ विहियविविहोवयारा, मागहिया अवहरिंसु से हिययं । लोहग्गलाए अक्काए, मग्गियं पूरइ इमो वि ॥ ७३ ॥ भणिया धूया लोहग्गलाए धणमस्स एत्तियं कत्तो । न हु देइ कोइ न कयाइ, कुणइ सेवाइववसायं ॥ ७४ ॥ ता जामाइयमापुच्छिऊण वच्छे ! सुनिच्छियं कुणसु । भणइ इमा ते कज्जं, दव्वेण किमेय चिंताए ॥ ७५ ॥ लोहग्गलाए अइअग्गलाऽऽगहाउ इमाए सो पुट्ठो । पभणइ रयणाउ पिये ! मे चिंतियरिद्धिसंसिद्धी ॥ ७६ ॥ लोहग्गलाए कहिए, तीए जोएइ जु(त्त)न्नमंजारी । तं रयणं सा घेत्तुं, सुत्तपमत्ताइ तस्स छलं ॥ ७७ ॥ अह मज्जणोवविट्ठस्स, तस्स चेलंचलस्स गंठीओ । छन्नं छोडिय घेत्तूण, तीए तं गोवियं रयणं

अतिलोभे लोहर्गला-गणिका-कथा ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ७८ ॥ तं गंठिमुट्ठिओ जाव, पेक्खए ताव पावए न तयं । सुन्नो निरिक्खमाणो, कोणविकोणे इमो भणिओ ॥ ७९ ॥ अक्काए किं निरिक्खसि, किं पडियं किंपि जंपसु पयासं । सयमेव सव्वओ जोइऊण जेणं तमप्पेमि ॥ ५८० ॥ एसो पभणए पत्थर-खंडं विक्कयकए धरियमासि । कवडेण कोणसोहण-पुव्वं सा आह नत्थित्ति ॥ ८१ ॥ दासीओ पुच्छंतो, भणिओ सो कुट्टणीए हो होउ । मा मज्झ परीवारं, कलंकदाणेण दूसेसु ॥ ८२ ॥ सव्वो वि पंचदिवसो, दासीओ जाव जीवियाउ पुणो । उवलकणकारणे किं, तदेवमवजाणसि जणं मे ॥ ८३ ॥ इय सोऊण कुमारो, चिंतइ अइकुडिलकालभुयगीए । एयमकज्जं एयाए, एवम(ण)विक्खमाणीए ॥ ८४ ॥ सुबहु धणं तोलिंति, किमियं लोहग्गला न भारतुला । दिन्नेण जा घणेणावि, धारणाए न ठाइ धुवं ॥८५॥ किं किं न सुवन्नं वा अन्नं वा सव्वमेव दव्वाइ । दिन्नं हि मए एयाए, तहवि किर किंपि नो दिन्नं ॥ ८६ ॥ अथवा—अइसयकुसीलयाओ, लोहमयाओ हवंति एयाओ । अहमेव अहो अबुहो, जं बुज्झंतो न बुज्झामि ॥ ८७ ॥ उच्यते च—“अपि प्रदत्तसर्वस्वात्, कामुकात् क्षीणसम्पदः । वासोऽप्याच्छेत्तुमिच्छन्ति, गच्छतः पण्ययोषितः ॥ ८८ ॥” “मनस्यन्यद्वचस्यन्यत्, क्रियायामन्यदेव हि । यासां साधारणस्त्रीणां, ताः कथं सुखहेतवः ॥ ८९ ॥” “कुष्टिनोऽपि स्मरसमान्, पश्यन्तीं धनकाङ्क्षया । तन्वतीं कृत्रिमस्नेहं, निस्नेहां गणिकां त्यजेत् ॥ ५९० ॥” ता जावऽज्जवि गरुयावमाणदंभोलिणा न भिंदेइ । ता नीहरिउं जुत्तं, नियपरिहिंसं च साहेउं ॥ ९१ ॥ इय स पउसे कस्सइ, अकहंतो दूरदेसमल्लीणो । तिलयंऽजणाइ जोयइ, कुट्टणि मय(इ)कुट्टण-निमित्तं ॥ ९२ ॥ मागहियाए वासगसज्जाए जाव जामिणी वि गया । ता नायं तीए गओ, चोरियरयणो समाणधणो ॥ ९३ ॥ रोयंतीए गग्गिरगिराए कहियं इमाण अक्काए । सा आह गहियसारो, विणोसहं जाओ वाहिव्व ॥ ९४ ॥ होउं रहम्मि मग्गइ, रयणाउ तओ सहस्सलक्खाई । रयलवमवि अलहंती, पच्छुत्तावेण पोकरइ ॥ ९५ ॥ मागधिका प्राह—अंब ! न पत्तो कंतो, फलिही रयणंपि नो विहिविहूणं । अइलोहनइपइट्ठा, न आरपाराय जायासि ॥ ९६ ॥ वरसेणो संपत्तो, मसाणमेगं निसीहसमयंमि । भूयऽतिहीए उल्लवइ, लेउ कोई महामंसं ॥ ९७ ॥ गयणे वाणी जाया, दुग्गादेवीए देउले एत्थ । गिरिकडणि संठिए, वीर !

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाहि तो होउ फलसिद्धी ॥ ९८ ॥ पेक्खइ अक्खलियअखुद्धलद्धलक्खो खणेण तत्थ गओ । दुग्गादेवीए पुरो, निविट्ठमेगं महाजोगिं ॥ ९९ ॥ रत्तंदणमंडलपासदिन्नमाणुसवसा पईवोहं । मंडलपुरओ पुरिसं च रत्तकणवीरमालाए ॥ ६०० ॥ पच्छाहूत्ते बाहू, सुबंधबद्धे करित्तु पक्खित्तं । उग्गीरिऊण खग्गं, जावंते जंपए जोगी ॥ १ ॥ तुह देवि ! मए दिन्नो, अन्नबली एस होउ मंसबली । कुमरेणुत्तो तो सो, रे रे काउरिस ! किं कुणसि ॥ २ ॥ किं निरवराह संजमिय, अंगुवंगं निहीण ! हणसि धुवं । बंधणरज्जुं छिंदेसु, अन्नहा नत्थि ते जीयं ॥ ३ ॥ इय भणिओ सो वरसेणसम्मुहो वलइ खग्गवग्गकरो । सोवि उवेइ विकोसी, काऊण करालकरवालं ॥ ४ ॥ अइगरुयलग्गसंजुगरंगेणं तेण पिल्लिऊण लहुं । जमपासे पट्ठविओ, सो जोगी पावपडिहच्छो ॥ ५ ॥ खग्गेण खंडिऊणं, कुमरो संजमणरज्जुमुवविसियं । पुरिसस्स पुरो पुच्छइ, को एसो कम्मचंडालो ॥ ६ ॥ भणियमणेण एसो, नामेण मघोरघंटजोगिंदो । दाउं दुग्गाए बलिं, सिद्धिकए अहमिहाणीओ ॥७॥ एयाहिं पाउयाहिं, चडिओ हिंडेइ तिहुयणं सयलं । पुरिसं वि सज्जियं कुणइ, पाउया सो सपाएसु ॥ ८ ॥ हुंकारिऊण पाडलिपुत्ते पत्तो तओ खणेणं सो । देसंतराओ दव्वं, आहरईपाउयारूढो ॥ ९ ॥ चिंतेइ कहवि केणइ, मिसेण जइ नाम कुट्टणिं दूरे । नेउं मिल्लेमि महुं, पियामि निम्मच्छियं ताहं ॥६१०॥ स कयाइ चंगसव्वंगसंगि सिंगारसुंदरो होउं । तेण पहेणं चंकममाणो तीए सयं दिट्ठो ॥ ११ ॥ चिंतियमेयाए पुणो वि, दव्वमेएणुवज्जियमणंतं । ता कवडेणाणेउं, मागहियाए समप्पेमि ॥ १२ ॥ दासीहिं जाव हक्कारिओवि नोवेइ कुट्टिणी ताव । तं गंतूणं आणइ, कहवि बाहाए घेत्तूण ॥ १३ ॥ इय तुज्झ पुत्त ! जुत्तं, वुत्तं अकहंतओ गओ जमिओ । तद्दिवसाओ जाया, गहगहिया अहह मागहिया ॥ १४ ॥ भणियमणेणं माए ! मा कुप्पसु कज्जगरुययाए गओ । अहुणा पुणो वि पत्तो, आएसं देसु किं कुणिमो ॥ १५ ॥ देइ पुणो सो दव्वं, समग्गलं मग्गियाओ निच्चंपि । तो सा चमकिया चिंतवेइ कत्तो धणमणप्पं ॥ १६ ॥ तो भणिया मागहिया, वच्छे ! पुच्छेसु अज्जणोवायं । भणइ मा माए ! तुज्झ, लग्गिया किं पुण अलच्छी ॥ १७ ॥ जइ वारिया न अच्छसि, पुच्छसु सयमेव ता तुमं अम्मो । नियमेवेदं तं सव्ववेसि लोहग्गला नामं ॥ १८ ॥ जइवि रइरमणजत्ता, पत्ता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतिलोभे लोहर्गला-गणिका-कथा।

पुत्तय! पुरंमि तहवि अहं। न भणिस्सं किंपि जओ, जाणेसि तुमं सयं उचियं ॥ १९ ॥ तह कह कत्थ व तं जासि, मग्गिउ दव्वमाणिउं कहसु। गंतूण जेण सह चेव, तमहमाणेमि सह चेव ॥ ६२० ॥ तुह विरहे मागहिया, खणेण जंतूण जाइ दसमदसं। अह भणइ तं कुमरो, दूरे छड्डेउमिच्छंतो ॥ २१ ॥ रयणकणयाइदीवे, गंतुं नियदिव्वपाउयारूढो। आणेऊणं तो एत्थ, देमि जं किंपि इच्छेसि ॥ २२ ॥ चिंतइ अत्ता केणइ, मिसेण नेऊण जलहिं दीवंतो। मेल्लित्तुमेयमाणेमि, पाउयाओ स (उभ)यं चडिउं ॥ २३ ॥ भणिओ कयाइ एसो, जयागओ आसिणे विमोत्तूण। तं वच्छतया इच्छियमोवाइयमेरिसं हि मए ॥ २४ ॥ नइनाहमज्झदीवे, देवमणंगं समालभिस्सामि। घुसिणेणमहं गंतूणं, एउ जामाउओ मज्झ ॥ २५ ॥ निययाभिप्पायपसाहणेसिणो तेण भणियमंब! लहुं। चलिज्जउ नेमि तहिं, किं अज्जवि किज्जइ विलंबो ॥ २६ ॥ हुंकारिऊण तो पाउयाओ तं पाणिणा गहेऊण। मयणाययणस्संतो संपत्तो झत्ति वरसेणो ॥ २७ ॥ मंदिरदुवारदेसे, अक्का मुक्कासु·तासु चडिऊण। पत्ता पाडलिपुत्ते, नियवंचपवंचपरितुट्ठा ॥ २८ ॥ कुमरो पच्छाहुत्तं, जा जोयइ ता न पेक्खए खोट्टिं। नीहरिय पलोयइ, पाउयाओ ताओवि नो नियइ ॥ २९ ॥ परिदेवइ पावे! पावमेरिसं आयरेसि पुणरुत्तं। जं चिंतियमासि मए, तं खलु पडियं महच्चेव ॥ ६३० ॥ जाओ लोयपवाओ, एसो स(व्वो)त्तु अवस्समेत्ताहे। जो जं चिंतेइ परस्स, तस्स तं आवइ घरस्स ॥ ३१ ॥ चिंताचुंबियचित्तस्स, तस्स तत्थागओ खगेणेगो। खयरो पुच्छइ कह तं, इहागओ किं सचिंतो वा ॥ ३२ ॥ वुत्ते वुत्तंते तेण, तो स संपूइऊण कंदप्पं। साहइ सुहपम्हललोललोयणाखोहणिं विज्जं ॥ ३३ ॥ वरसेणेगुत्तरसाहगेण साहसधणेण सिद्धाए। विज्जाए विज्जाहर–जुवाणओ तस्स अप्पिसु ॥ ३४ ॥ गुडियाउ दुन्नि एगा, रासहरूवं करेइ [१]विलयाउ। अन्नाउ सहावं माणुसस्स अप्पेइ तह चेव ॥ ३५ ॥ एयवसाउ परिहंस, साहओ होसि तं महाधीर!। कंचणरयणाणि इमाणि, होउ अतिहिस्स ते पूया ॥ ३६ ॥ उप्पाडिऊण मुक्को, पाडलिपुत्ते स तेण खयरेण। हिंडइ पुणो वि स विलासमंथराए गईए तहिं ॥ ३७ ॥ लोहग्गलाए दासीए, साहियं आउए मए

१ तिलएण C. D तिसलाओ B.।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिट्ठो। जामाउओ इयाणिं, तुह सो सव्वंगसिंगारो ॥ ३८ ॥ तो सा हिययं कुट्टेइ, कुट्टिणी हा इहागओ कह णु। विग्गोविऊण मं पाउयाओ लेही नियाओ सो ॥ ३९ ॥ काऊण किंपि कूडं, अंगे पविसामि ताव जइ कहवि। छुट्टेऊणं वंचितु नव्व दव्वंपि गिण्हामि ॥ ६४० ॥ सव्वंगबद्धनिप्पट्टपट्टिया लोट्टिऊण खट्टाए। मागहियं पेसइ तस्स, आणणत्थं सुसिक्खिविउं ॥ ४१ ॥ गंतूणमाह एसा किं, जुत्तं तुम्ह नियगिहं मोत्तुं। मं च नियदंसणायत्तपाणमन्नत्थ उत्तरिउं ॥ ४२ ॥ अवधारिज्जउ पाओ, होउ पसाओ उवेह नियगेहे। मरमाणीए मायाए, देहि संभासमंतिमगं ॥ ४३ ॥ सयमेवागच्छंति, मयच्छिय! अहमाउयाए भेट्टाए। हक्कारणाय पत्तासिऽज्जं सयं सो महासउणो ॥ ४४ ॥ इय भणिय तीए सद्धिं पत्तो लोहग्गलासमीवं सो। पुच्छइ तरवारि महा-पहारपीडाइमावत्तो ॥ ४५ ॥ नीससिऊण सुदीहं, सा आह अगाहवाहिविहुरि व्व। [1]पाणंति पणवियवसण-वेससा किं भणामि लहुं ॥ ४६ ॥ जाणेसि ताव दोन्नि वि पत्ताइं अणंगदेउलदुवारे। मोत्तूण पाउआओ, तत्थ गओ तंसि गब्भहरे ॥४७॥ ताणम्हि रक्खवाली, जाव ठिया ताव खेयरो एगो। आगम्म पाउयाओ, लेउं लग्गो महपुरो वि ॥ ४८ ॥ पाएसु पाउयाओ, काऊणमहं तओ पलायंती। पत्ता एत्तियभूमिं, अणुमग्गेणं स खयरोवि ॥ ४९ ॥ संगामो संलग्गो, तेण समं तो महापहारेहिं। मं पाडिऊण पावेण, पाउया ताओ नीयाओ ॥ ६५० ॥ चिंतइ सो पावा, पाउयासु पासठियासु कवडवसा। पलवेइ आलजालं, समए सव्वंपि जाणिस्सं ॥ ५१ ॥ पभणइ माए! जइ नाम, पाउयाउ गयाउ गच्छंतु। आदाय दुक्खमग्गस्स, तुज्झ जीवेसु तं सुचिरं ॥ ५२ ॥ सोऊणमेयमेयाए, जीवियं तणुकुडिं अणुपविट्ठा। तुट्ठा पभणइ पुत्तय!, तत्तो पत्तोसि कहमेत्थ ॥ ५३ ॥ भणियमणेण [2]मयंगो, पच्चक्खो मग्गिओ मए माए। तं देसु जेण थेरत्तणे वि तारुन्नमुन्नमइ ॥ ५४ ॥ गुडियं दाउं दव्वं च, तेण-मिहमाणिऊण मुक्कोहं। छोडेसु पट्टए ताव, जेण जोएमि असिघाए ॥ ५५ ॥ संरोहणीए रोहेमि, तक्खणा तीए वुत्तमलमत्थु। छुट्टंतएसु जा पट्टएसु पीडा तयं न सहे ॥ ५६ ॥ जइ पुण पट्टेसु तह ठिएसु, तुह हवइ कावि [3]सुचिकिच्छा। ता कुणसु

१ पाणंति य पावियवसणवेससा किं भणामि अहं ॥ B. C D। २ मणंगो B. D। ३ सुच्चिगि०।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वच्छ ! एत्तो, बहुबुल्लेउं न सक्केमि ॥ ५७ ॥ भणइ [1]स उव्वणजोव्वणकरीए गुडियाए [2]रयणतिलएण । सइ जाइ जराए महा पहारलेसो वि तरुणीए ॥ ५८ ॥ भणियमिमीए तह तं, करेसु जह तरुणि मज्झयारंमि । मह चेव रूवरेहा, जोइज्जइ नायर-जणेण ॥ ५९ ॥ गुडियाए तीए तिलओ, तओ कओ कुट्टिणीनिडालंमि । कुमरेण तक्खणेणं, थूला सा रासही जाया ॥ ६६० ॥ कडियालि दाऊणं, मुहंमि चडिऊण तीए पुट्ठीए । पहणंतो [3]सट्ठेणं, स आगओ रायमग्गंमि ॥ ६१ ॥ मिलिऊण राउले पा(यउ)उ-लाइं सयलाइं झत्ति पत्ताइं । संभालयंति जा उंडिएण केणइ भुयंगेण ॥ ६२ ॥ अक्का खरिया विहिया, सट्ठेहिं निसट्ठमाहणइ चडिओ । अणुजुंजेइ नरिंदो, कित्तियदिवसो भुयंगो सो ॥ ६३ ॥ केरिसरूवो केत्तियवरिसो य वएण कहइ मागहिया । पहु ! तुम्ह रज्जलाभो, ममेयलाभो य समकालं ॥ ६४ ॥ अइसयसुसरिसरूवो, तुब्भाणं केत्तिएण वि कणिट्ठो । तो रन्ना विन्नाओ, महाणुओ सो महाधुत्तो ॥ ६५ ॥ निवई भणेइ सयमेव, सिक्खविस्सं असिक्खियं तमहं । जयकुंजराधि-रूढो, तओ गओ तत्थ नरनाहो ॥ ६६ ॥ दिट्ठो स लोयलक्खेहिं, लोलअक्खेहिं सव्वविज्जंतो । अइथूलतुंदतुंगाए, रासहीए समा-रूढो ॥ ६७ ॥ गंतुं पासे पुच्छइ, पिच्छीसो तं तओ कयपणामो । अविनाम महाधुत्तस्स, सागयं गयसिणेहस्स ॥ ६८ ॥ तुह वाहणं न सोहइ, रासही कलहकेलिलोलस्स । ता एहि कुंजरे एत्थ, अंगमालिंग अंगेण ॥ ६९ ॥ संजमिय रायमग्गे, तं कुट्टिणि रासहिं महापावं । पहसंतेणं पहणिज्जमाणियं पउरलोएण ॥ ६७० ॥ धवलहरे संपत्तो, सह नरनाहेण कुंजरारूढो । अकहिंसु पुच्छिओ सव्वमेव रयणाइवुत्तंतं ॥ ७१ ॥ आगंतूणं पुण पाउलेहिं पुहईसरो स विन्नत्तो । आइक्खइ पच्चक्खा चोरी सा रासही एत्थ ॥ ७२ ॥ वररयणपाउयासुं, हरियासुं तीए सह कणिट्ठस्स । मुहिया छुट्टा सा अंगनिग्गहो को वि जं न कओ ॥ ७३ ॥ ता संपयंपि मोसस्स, अप्पणा तारिसस्स सव्वस्स । जइ कोइ देइ सद्दं, ता पावइ पुव्वरूवं सा ॥ ७४ ॥ तह विहिए तिलयं बीयगोलियाए करेइ वरसेणो । साहावियरूवधरा, जाया लोहग्गला तत्तो ॥ ७५ ॥ ततश्च जातोऽयं प्रवादः—" अतिलोभो न

१ य अउव्व C. D । २ रइय । ३ सट्टे इ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मशास्त्रे स्त्रीणां स्वभावजा दोषाः ।

कर्त्तव्यो, लोभं नैव परित्यजेत् । अतिलोभाभिभूता सा, कुट्टन्यजनि रासभी ॥ ७६ ॥ " वररयणपाउयाहिं, रयणालंकारचीणवसणेहिं । भूसियसरीरमप्पइ, मागहियं सा कुमारस्स ॥ ७७ ॥ सो जाओ जुवराओ, सह मागहियाए विसयसोक्खाइं । उवभुंजइ अन्नाहिं वि, निवइ सुयाहिं नवोढाहिं ॥७८॥ इय पियकहिउ कहाणउं लोहग्गलतणउं, तुहवि पुरउ अइधिट्ठिमअवलंबिवि धणउं । ता जगि लोभु सुकिज्जइ जुज्जइ जो अवसु, लोहग्गल जिंव लोभु करंतह जाइ जसु ॥ ७९ ॥

अथ जम्बूस्वाम्यब्रवीत्—नागसेने ! कनकश्रीः, प्रिये कमलवत्यपि । आकर्ण्यतां जयश्रीश्च, सर्वसारमिदं ब्रुवे ॥६८०॥ दोषाणां च गुणानां च, निधनानि यथाक्रमम् । यूयं च गुरवश्चोक्ता, धर्म्मशास्त्रेषु तद्यथा ॥८१॥ वञ्चकत्वं नृशंसत्वं, चञ्चलत्वं कुशीलता । इति नैसर्गिका दोषाः, यासां तासु रमेत कः ॥८२॥ प्राप्तुं पारमपारस्य, पारावारस्य पार्यते । स्त्रीणां प्रकृतिवक्राणां, दुश्चरित्रस्य नो पुनः ॥८३॥ नितम्बिन्यः पतिं पुत्रं, पितरं भ्रातरं क्षणात् । आरोपयन्त्यकार्येऽपि, दुर्वृत्ताः प्राणसंशये ॥८४॥ भवस्य बीजं नरकद्वारमार्गस्य दीपिका । शुचां कन्दः कलेर्मूलं, दुःखानां खानिरङ्गना ॥ ८५ ॥ स्त्रीसंभोगेन यः कामज्वरं प्रतिचिकीर्षति । स हुताशं घृताहुत्या, विध्यापयितुमिच्छति ॥ ८६ ॥ वरं ज्वलदयस्तम्भपरिरम्भो विधीयते । न पुनर्नरकद्वार–रामाजघनसेवनम् ॥ ८७ ॥ सतामपि हि वामभ्रूर्ददाना हृदये पदम् । अभिरामगुणग्रामं, निर्वासयति निश्चितम् ॥ ८८ ॥ यूयं तदेवं दोषाढ्या धर्मशास्त्रेषु दर्शिताः । धर्माचार्याः पुन प्रौढगुणग्रामभृतो यथा ॥८९॥ गुरुर्गृहीतशास्त्रार्थः, परां निस्संगतां गतः । मार्त्तण्डमण्डलसमो, भव्याम्भोजविकाशने ॥६९०॥

पवित्रश्चारित्रात्प्रवचनरहः पारपटुधीः, सुधीरः शान्तात्मा मधुरिमधुराधारवचनः ।
कृपावान्निर्लोभो भवजलधिपोतप्रतिकृतिस्तनूभाजामीदृक् भवति गुरुराप्तः शुभशतैः ॥ ९१ ॥

गुरुर्मोहान्धानां भवति हि नृणां चक्षुरमलं, गुरुर्दुःखार्त्तानामपहरति दुःखान्यवहितः ।
सुखानां सन्धाता गुरुरमरमोक्षक्षितिभुवां, शुभं तत्किं लोके यदिह गुणिनां स्यान्न गुरुतः ॥९२॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साधुसमागमलाभे प्रभाकरकथा ।

तद्वो दोषवतीस्त्यक्त्वा, श्रये गुणगुरून् गुरून् । त्यक्त्वाऽसतः सतः श्रित्वा–ऽभून्सुखी हि प्रभाकरः ॥ ९३ ॥

मेदिनीतिलके विप्रो, दिवाकरतनूद्भवः । अभूत्प्रभाकरो द्यूतकारो मूर्खैकशेखरः ॥ ९४ ॥ गायत्रीमात्रकेऽप्यज्ञं, तं मुमूर्षुः कदाचन । अध्यापिपत् पिता श्लोकमेकमत्यादरादिमम् ॥ ९५ ॥ मुद्रितोपद्रवातङ्कः, पुरुषेण हितैषिणा । निधिर्नवाधिको मूर्त्तः, कर्त्तव्यः साधुसंगमः ॥ ९६ ॥ ताते परासुतां प्राप्ते, निःश्रीर्द्यूतादभूदयम् । अक्षमः कुक्षिपूरेऽपि, नगरान्निरगात्ततः ॥ ९७ ॥ दध्यौ पित्रा कुतः कार्यें, संगमं सममुत्तमैः । तावन्नीचं परीक्षिष्ये, करिष्ये चरमं च तम् ॥ ९८ ॥ अश्रद्धालुरिति ध्यात्वा, प्राप्तः कीर्त्तिपुरं पुरम् । दुष्टाशयाभिधानं च, नीचं ठक्कुरमाश्रितः ॥ ९९ ॥ दौर्जन्यैकनटी तस्य, चेटी गोमटिकाभिधा । चक्रे कलत्रं मित्रं च, मातङ्गस्तेन सूत्रितः ॥ ७०० ॥ दानशौण्डं स्फुरन्नीतिताण्डवोल्लासलासकम् । द्राघिष्टविदुषपृष्टगोष्ठीनिष्ठुरकौतुकम् ॥ १ ॥ ठक्कुरेणान्वितस्तेन, क्ष्मापतिं कीर्तिशेखरम् । अनध्ययन[१]खिन्नोऽन्तः, प्रत्यहं भजति स्म सः ॥ २ ॥ अथ मध्ये सुधीवृन्दमासीने क्ष्मापुरन्दरे । सख्यं समानशीलेषु, स्यादिति प्रस्तुता कथा ॥ ३ ॥ कथंचिदभ्यस्तचरस्तेनापि द्विजसूनुना । श्लोकोऽयं पठितः स्पष्टवर्णकर्णामृतं तदा ॥ ४ ॥

“ मृगा मृगैः संगमनुव्रजन्ति, गावश्च गोभिस्तुरगास्तुरंगैः : मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः, समानशीलव्यसनेषु सख्यम् ॥५॥ ”

इत्याकर्ण्य महीशक्रस्तच्चक्रं च विपश्चिताम् । जज्ञे स्फारचमत्कारा नद(ट)न्मौलीमनोहरम् ॥ ६ ॥ स्फुरन्निजद्विजश्रेष्ठी विलासेन वितन्वता । [२]द्विजो सत्त्वमिव स्वस्याऽप्युर्वीशेनैष जल्पितः ॥ ७ ॥ सिक्तः प्रीतिरसेनाहं, भवता भोः प्रभाकर ! । तस्मात्प्रसाददानेन, गृहाण ग्राममण्डलम् ॥ ८ ॥ प्रभोरौचित्यमारोग्यं, श्रीमतो भूभृतः क्षमा । उपकर्तुः प्रभुत्वं च, पीयूषाणां चतुष्टयम् ॥ ९ ॥ [३]प्रसन्नं मयि देवस्य, चेतश्चेत्तन्मम प्रभोः । इदमस्य प्रसादेन, देहीत्युचे प्रभाकरः ॥ ७१० ॥ पृथ्वीभृति तथेत्युक्तवति दुष्टाशयः

---

१ खिन्नोऽभूत् B । २ द्विजेश त्वमिव स्वस्याप्युर्वीशेनैव B. C. D । ३ प्रसन्नमपि C D ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रियः । प्रभाकरप्रभावेण, सद्मतां पद्मवद्गतः ॥ ११ ॥ महीमहेन्द्रानुमतौ, परिवारपुरस्कृतौ । प्रसादमण्डलमलंचक्राते तावुभावपि ॥ १२ ॥ अथान्यदा मदास्वादविह्वलः संस्पृशन् प्रियाम् । वध्यः क्रुद्धेन मातंगष्ठक्कुरेण निरोपितः ॥१३॥ वारुणीरसनिर्वाणचैतन्यो नैष दोषवान् । त्वय्याशा निःप्रकाशैव, किं चैवं मादृशामपि ॥ १४ ॥ क्षमस्व मुञ्च मन्मित्रमित्युदाहृत्य ठक्कुरम् । निषादं सविषादस्तं, मोचयामास स द्विजः ॥ १५ ॥ इतश्च—ठक्कुरस्य शिखी प्रेयानस्ति तन्मांसमत्ति यः । स श्रियः स्यात्पदं भिक्षुरित्यूचे कोऽपि चेटिकाम् ॥ १६ ॥ प्रभाकरः प्रत्यपादि, तन्मांसस्पृहया तया । दुर्निग्रहस्त्रीग्रहतस्तेनापि प्रत्यपद्यत ॥ १७ ॥ दत्तमन्यामिषं तस्यै, रक्षित्वा तं शिखाचलम् । नीतान्येतान्यनेनेत्थमुपकारसुखासिकाम् ॥ १८ ॥ भोजनावसरे सूनुनिर्विशेषं शिखण्डिनम् । अपश्यन् ठक्कुरस्तत्र, सर्वत्रापि [1]व्यशोधयत् ॥ १९ ॥ अदृष्टे चात्र दीनारसहस्रार्प्पणपूर्वकम् । एवमुद्घोषयामास, पटहं ठक्कुरः पुरे ॥ ७२० ॥ दीनाराभयलोभेन, भो कलापी स कथ्यताम् । पश्चाज्जाते पुनर्देहदण्डश्चण्डो भविष्यति ॥ २१ ॥ श्रुत्वेति चिन्तितं चेट्या, भावी भर्त्ता ममाऽपरः । उपस्थितं धनं तावत्, करोमि स्वकरे द्रुतम् ॥ २२ ॥ नीचैर्वृत्तिमतां नित्यं, कुरङ्गविषयैषिणाम् । बुद्धिं हतकलुब्धानां, धिक्पापप्रतिवेशिनीम् ॥ २३ ॥ स्पृष्ट्वाऽथ पटहं चेटी, गत्वा दुष्टाशयान्तिकम् । प्रकटीकृतभिक्षूक्तिः, पाप्मिनीति व्यजिज्ञपत् ॥ २४ ॥ मया निवारितेनापि, वारं वारं द्विजन्मना । धनायता परं तेन, स्वामिन् बर्ही निबर्हितः ॥ २५ ॥ अकृतज्ञेन तेनैवं, तद्गिरा ज्वलितक्रुधा । वध्यस्तन्मित्रमातंगस्योपनिन्ये प्रभाकरः ॥ २६ ॥ अगृह्यमाणाः सत्कृत्यैर्भषन्तः संस्तुतेष्वपि । खादन्तो निजवर्ग्यांश्च, ते खला मण्डलाधिकाः ॥ २७ ॥ तेनोक्तं भद्र ! मां मुञ्च, दूरं देशान्तरं श्रये । पुराकृतोपकारस्य, त्वमानृण्यमुपेहि मे ॥ २८ ॥ अथाभ्यधत्त चण्डालः, पापभृन्मण्डलाग्रणीः । युक्तमुक्तं त्वया बन्धो ! ऽपराद्धं परमं पर(द)म् ॥२९॥ द्विधा दुष्टाशयः स्वामी, मुञ्चामि त्वां कथं यतः । रजकस्येव मे मृत्युः, खरमृत्यौ भवेद् ध्रुवम् ॥ ७३० ॥ ततः स चिन्तयामास, सानुतापः प्रभाकरः । दृष्टं माहत्म्यमेतेषां, हा नीचप्रकृतिं जनम् ॥ ३१ ॥ " नीचः कृतोपकारोऽपि, विमानयति निश्चितम् । जातवेदा

१ व्यवाययत् B ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दहत्येव, सर्प्पितोऽपि हि सर्प्पिषा ॥ ३२ ॥" तथाहि—ममैतैर्दोषसंकल्पवारुणीविप्रुषा क्षणात् । उपकारपयःकुम्भः, सकलः कलुषीकृतः ॥ ३३ ॥ किंपाके सस्फुरत्पाके, पाटलाम्रफलभ्रमः । लक्ष्मीलवसुखाकांक्षा, या नीचप्रकृतौ जने ॥ ३४ ॥ नीचाश्रितस्य सुचिरं, नीरं संत्यज्य जायते । कस्यान्यस्य गुणोदण्डपुण्डरीकसमागमः ॥ ३५ ॥ अवज्ञातपितृश्लोकदीर्घशोकहतस्ततः । वरिवस्यां विधास्यामि, सांप्रतं महतामहम् ॥ ३६ ॥ इति ध्यात्वा सखाऽसि त्वमुपस्वामि नयस्व माम् । मयूरमर्प्पयिष्यामीत्यूचे चाण्डालकं पुनः ॥ ३७ ॥ तेन किंचित् त्रपार्त्तेन, तद्वचः प्रतिपद्य तत् । सनाथः शिखिना निन्ये, सनाथस्य पुरस्थितिम् ॥ ३८ ॥ ऊचे च तत्प्रकोपाग्नेरिव शान्त्यै समुत्सृजन् । दशनांशुजलं शुद्ध्यै, स्वस्येवान्त्यजसंगिनः ॥ ३९ ॥ गृहाण बर्हिणं स्वामिन्नस्तु स्वस्ति चिराय ते । सन्न्याय सद्विचाराय, भवत्परिकराय च ॥ ७४० ॥ वाचाटा चातिदुष्टा च, चेटिकेयमतथ्यवाक् । अनाचारः पराचीनो, विप्रस्त्वेष प्रभाकरः ॥४१॥ नैतस्मिन्संभवत्येतदिति नैव विमर्षितम् । पृष्टो नाहं नवा भक्तिविभक्तिर्मे विभाविता ॥४२॥ दण्डः सर्वंकषश्चैवमहो ते सुकृतज्ञता । पृष्टो दुष्टाशयेनैष तत्त्वामाख्यद् यथास्थितम् ॥ ४३ ॥ तेनैष क्षम्यमाणोऽपि, धार्यमाणोऽपि चान्तिके । भृशं सत्क्रियमाणोऽपि, निर्ययौ नगराद् बहिः ॥ ४४ ॥ क्रमाच्चंक्रम्यमाणश्च, प्राप्तो रत्नपुरं पुरम् । अभ्यस्तस्वःपुरी सृष्टेः, स्वष्टुः शिल्पकषोपलम् ॥ ४५ ॥ पराक्रमसमाक्रान्त–विक्रान्तप्रतिपार्थिवः । तत्पालयति भूपालः, पुरं रत्नरथाभिधः ॥ ४६ ॥ तस्यास्ति सूनुः कनकरथः सत्पथपान्थधीः । यद्रूपन्यत्कृतेः कामो, मन्यते बह्वनंगताम् ॥ ४७ ॥ गुणा समाश्रिता येन, गुणैर्यश्च समाश्रितः । मिथः कीर्त्तिं परां लब्धुं, बद्धोत्कंठा वशादिवः ॥ ४८ ॥ तमास्थानभुवि स्थास्नुं, द्वास्थेनाथ निवेदितः । विप्रं प्रविश्य सोऽवादीदित्याशीर्वादपूर्वकम् ॥ ४९ ॥ अहं द्विजात्मस्त्वं च, राजसूनुर्गुणावधिः । स्पृहयामि तदात्मानं, कर्त्तुं त्वत्पारिपार्श्विकम् ॥ ७५० ॥ पुरोहितपदेऽनेन, पुरः स्यान्मे प्रयोजनम् । तेनेममात्मसात्कृत्वा, दानसंमानसम्पदा ॥ ५१ ॥ व्याजहार विचिन्त्यैवं, कुमारस्तमुदारधीः । प्रथयन्निव मित्रत्वं, तस्य स्मेरमुखाम्बुजः ॥ ५२ ॥ सूत्रितस्त्वं मया मित्रमितोऽवश्यं प्रभाकर ! । क्वापि चिन्तातपक्लान्तं, स्वान्तं मा स्म वृथा कृथाः ॥ ५३ ॥ ततः समुदितस्तिष्ठंस्तत्र पश्यन्निरन्तरम् । वरिष्ठश्रेष्ठिनः पुत्रं, मित्रं चक्रे मनोरथम् ॥५४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कलत्रं सूत्रिता तेन, पिण्डवासविलासिनी । ख्याता रतिविलासेति, सद्गुणैकविलासभूः ॥ ५५ ॥ इत्थमेभिस्त्रिभिः सार्द्धं, वर्धिष्णु प्रणयोज्वलः । प्रभाकरः स्मरन्नस्ति, मन्त्रवत्पैतृकं वचः ॥ ५६ ॥ हेडावित्तकचोडेन, विदेशागन्तुनाऽन्यदा । तुरंगयुग्मं सर्वाङ्ग-रम्यं राज्ञेऽवतीर्यत ॥ ५७ ॥ कुमारविप्रावारुह्य, वाह्यालीभूमिमण्डले । प्रारेभाते स संरम्भं, वाहवाहनकौतुकम् ॥ ५८ ॥ ब(वल्गा)लात्तुरङ्गयुग्मेन, जग्मे वाह्यतोस्तयोः । कर्षतोरपि सोत्कर्षमरण्यानी मरुस्थली ॥ ५९ ॥ कुमारे च द्विजातौ च, श्लथवल्गाग्रहे श्रमात् । तस्थतुस्तत्क्षणादश्वौ, वैपरीत्येन शिक्षितौ ॥ ७६० ॥ कुमारः सुकुमारत्वात्ततः क्लान्तस्तृषा भृशम् । वाजिवर्यात्समुत्तीर्य, निषसाद स्थलीभुवि ॥ ६१ ॥ लोलाः प्राणाः प्रयाणाय, पानीयमुपनीयताम् । त्वं वयस्य ! त्वरस्वेति, त्यक्त्वाऽश्वं सोऽवदद् द्विजं ॥ ६२ ॥ अथ धीरो भवेत्युक्त्वा, दिवाकरतनूद्भवः । अर्णस्तूर्णं महारण्ये, तत्रान्वेष्टुं प्रचक्रमे ॥६३॥ स्वीचक्रे नीरमप्राप्य, तृष्णाहारि गुरोस्तरोः । ज्ञानदर्शनचारित्रतुल्यमामलकत्रयम् ॥ ६४ ॥ विप्रः क्षिप्रं समागत्य, चिन्ता चान्तेन चेतसा । मूर्च्छाविकाराकुलितं, कुमारं समुदैक्षत ॥ ६५ ॥ पयः स्वयमनासाद्य, वैलक्ष्यक्ल(क्ष)तमानसः । चक्षुषी बहु मन्वानः, श्च्योतद्बाष्पजलोर्मिणी ॥ ६६ ॥ मूर्च्छान्धकारसंहारकारणं मधुरारुणम् । आस्ये तस्यैष बालार्क-मुग्धमामलकं न्यधात् ॥ ६७ ॥ उन्मीलिताऽमृतकला, स्फारिते चक्षुषी मनाक् । विप्रः पुनः कुमाराय, ददावामलकद्वयम् ॥ ६८ ॥ लब्धसंज्ञः कुमारोऽथ, धूलिधूसरितं नभः । वीक्षते तत्क्षणत्रस्यन्मूर्च्छयेवोन्नताननः ॥ ६९ ॥ अन्तरिक्षदरीकुक्षौ, रजःसारमिवात्मनः । कस्मादकस्माद्(भी)ह्रीतेव, सादरं क्षिपति क्षितिः ॥ ७७० ॥ कुमारविप्रावाऽऽसाते, यावदुन्मानसाविति । तावद्भोज्यपयःपूर्णं, तूर्णं तत्सैन्यमागमत् ॥७१॥ ततः कृताह्निकाचारः, कुमारः स प्रभाकरः । क्रमेण स्वामलंचक्रे, परिवारान्वितः पुरीम् ॥ ७२ ॥ प्राज्ये राज्ये निजं कृत्वा, तं राजाऽङ्गजमन्यदा । तापसो वनवासेऽभूद्, भूपो रत्नरथाभिधः ॥ ७३ ॥ सौवस्तिकपदे दध्रे, नव्यभूपः प्रभाकरम् । मनोरथमपि श्रीमान्, श्रेष्ठश्रेष्ठिपदे न्यधात् ॥ ७४ ॥ ते राज्यं बिभ्रते प्राज्यं, न्यायन्यासनिरङ्कुशाः । पवित्रमैत्र्यपात्राणां, तेषां यान्ति च वासराः ॥७५॥ " यथा माधुर्यमिक्षूणां, शङ्खानां श्वैतिमा यथा । सज्जनानां तथा मैत्रीह्येवाको जीवितावधिः ॥ ७६ ॥ तस्या रतिविलासायाः, स्फु-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रद्गर्भानुभावतः । एतादृशः समुत्पेदे, कदाचिदथ दोहदः ॥ ७७ ॥ निर्व्रीडं क्रीडतो राजकुमारस्य गृहाङ्गणे । चेत्कालखण्डमश्नामि, तदा जीवामि नान्यथा ॥ ७८ ॥ अनार्जवमनार्यत्वं, धा(वा)र्यमाणैकतानता । दौर्जन्यं निष्कृपत्वं च, योषितां मूलमातृका ॥ ७९ ॥ दुर्वारे दोहदेऽमुस्मिन्नशक्ये वक्तुमप्यसौ । खिद्यमानमनाः शश्वत्, कृशाङ्गी सुतरामभूत् ॥ ७८० ॥ एतामेतादृशीं दृष्ट्वा, सत्प्रभः स प्रभाकरः । महाग्रहेण पप्रच्छ, कायकार्श्यस्य कारणम् ॥८१॥ मन्दाक्षेण क्षतस्वान्ता, साऽऽचचक्षे स्वदोहदम् । सोऽपि प्राह प्रिये ! दुःखदुर्दिनं मा वृथा कृथाः ॥ ८२ ॥ पूरयिष्यामि तेऽवश्यमिमं दोहदमादरात् । कियन्मात्रमिदं कार्यमार्ये ! मम चिकीर्षतः ॥ ८३ ॥ धृत्वैकान्ते कुमारं तं, ददौ स परमादरात् । कृत्वाऽन्यन्मांसमेतस्यै, सारसंस्कारसंस्कृतम् ॥ ८४ ॥ क्षणान्निर्वृतिकल्याणमापातेनापि साद्भुतम् । तं गर्भं बिभरामास, भृशं संभृतसंमदा ॥ ८५ ॥ चक्रे सारा कुमारस्य, भूभुजा भोजनक्षणे । सर्वत्र वीक्षितः क्षिप्रं नेक्षितो न श्रुतः क्वचित् ॥ ८६ ॥ न भुङ्क्ते वक्ति चोर्वीशः, कः कालेन कटाक्षितः । फणीन्द्रस्य फणारत्नमात्तवान् मे तनूद्भवम् ॥ ८७ ॥ प्राप्तमेतच्च विस्तारं, श्रुतं रतिविलासया । चिराय चिन्तयामास, मांसलोच्छलिता रतिः ॥ ८८ ॥ हा हतास्मि हहा धिग्मां, किमेतन्मयका कृतम् । ममाजीव[1]निरेवास्तु, जीवितेशस्तु जीवतात् ॥ ८९ ॥ यथा मे वल्लभो गर्भः, स्वार्भको भूपतेस्तथा । मन्मनोल्लापपीयुषवर्षी यद्वा विशेषतः ॥ ७९० ॥ शाकिनीव कुमारं तं भक्षयित्वा सलक्षणम् । किं नैवास्मि मरिष्यामि, भावी गर्भोऽथ शाश्वतः ॥ ९१ ॥ यदीदं च नृपो विन्द्यात्, कदाचन कथंचन । अत्याहितं तदा भर्त्तुः, को नाम विनिवारयेत् ॥ ९२ ॥ यावन्न ज्ञायतेऽद्यापि, प्रियस्तावन्मनोरथं । मन्त्रयित्वा सूत्रयामि, किंचिदौपयिकं शिवे ॥ ९३ ॥ ततोऽसौ सत्त्वरं गत्वा, मनोरथनिकेतने । तं यथावृत्तवृत्तान्तमेकान्ते तत्पुरोऽवदत् ॥ ९४ ॥ स ब्रूते स्म हहा भद्रे ! त्वया चक्रे किमीदृशम् । प्राणाः प्रभाकरस्यैते, सत्यं तृणपणीकृताः ॥ ९५ ॥ तथापि धैर्यमाधाय, स्वैरं गच्छ गृहान्निजात् । अस्मि प्रतिकरिष्यामि, सर्वमेतद्यथा तथा ॥ ९६ ॥ गत्वा रतिविलासाथ, स्वमन्दिरमचिन्तयत् । आगस्कारिणमात्मानमाख्याय नृपतेः पुरः ॥९७॥ यद्ययं मत्प्रियं रक्षेत्, तदा स्यादस्य-

[1] निरे वा C D, निरि वा B ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पञ्चता । एतञ्चातिविरूपं स्यादमन्तोमृत्युरस्ति यत् ॥९८॥ ध्यात्वैवं यावदद्यापि, यात्ययं नोपपार्थिवम् । तावद्द्वारवधूर्भूपं, सा प्रविश्य व्यजिज्ञपत् ॥९९॥ अपहारः कुमारस्य, कृतः केन कथं छलात् । इति चिन्ताचिताचान्तं, चित्तं मा त्वं प्रभो ! कृथाः ॥८००॥ पापीयस्या मयाऽवश्यं, कुमारवधपातकम् । चक्रे केनापि कामेन, तत्प्राणान्निगृहाण मे ॥ १ ॥ कदा कुत्र कथं चेति, यावज्जल्पति भूपतिः । तावन्मनोरथोऽप्येत्य, विज्ञप्तिं भूभृतेऽकरोत् ॥ २ ॥ देव मन्मन्दिरे क्रीडन्, कुमारः सदनोपरि । प्रेर्य पुत्रेण मे भूमौ, पातितश्च मृतश्च सः ॥ ३ ॥ भीत्या तदैव नाख्यायि, त्वद्दुःखाद्वच्मि साम्प्रतम् । प्राणप्रहाणदण्डं मे, मा शङ्किष्ठाः कुरुष्व तत् ॥४॥ प्राप्तः प्रभाकरोऽप्याशु, स्वागः संगृणतोस्तयोः । नृपं विज्ञपयामास, मारितस्ते मया सुतः ॥ ५ ॥ अभूद्गर्भानुभावेन, कुमारपिशिताशने । प्रियाया दोहदः सोऽपि, मया पापेन पूरितः ॥ ६ ॥ अनेन कर्मणा किं स्यां, वयस्यस्ते द्विजोऽथवा । निष्ठा मे भूदियं विष्ठा, रे किष्ठा मा क्षणु क्षणात्(न्) ॥ ७ ॥ श्रेष्ठी श्रेष्ठः किमेषः स्यादालजालं जजल्प यः । आत्मन्यारोपयत्सत्यं, भ्रौणहत्यं मया कृतम् ॥ ८ ॥ पश्यन्नस्ति नृपो यावत् त्रयं चित्रीयितात्मना । तावत् , प्रभाकरेणोक्तमलं सन्देहदोलया ॥ ९ ॥ भ्रौणहत्यस्य मे हत्या, प्रायश्चित्तं न शुद्धिकृत् । राजन् यद्यप्यदो भाति(वि), तथाप्यन्यत्किमाद्रिये ॥ ८१० ॥ आगस्वानहमेवात्र, पुत्रः स्वस्थो मया कृतः । अत्रार्थे पार्थिवस्तेन, शपथैः सुस्थिरीकृतः ॥ ११ ॥ अथोवाच महीचन्द्रो, यद्यप्येवं तथापि ते । नापराधः सखे ! यस्मान्मया क्षान्तमिदं ध्रुवम् ॥ १२ ॥ "स्वामिमित्रकलत्राणां, बुद्धिबन्धुधनात्मनाम् । आपन्निकषपाषाणे, नरो जानाति सारताम् ॥१३॥" राजशब्दं स एवैकः, काममिन्दुर्निषेवताम् । कलङ्ककल्पमप्येणमाश्रितं न जहाति यः ॥ १३ ॥ पुनर्भूपः प्राह—यत्तदामलकं दत्तं, त्वया मे निर्जने वने । मृतस्येव तृषा मित्र !, तन्मे न खलु विस्मृतम् ॥ १५ ॥ स्यां तदा चेन्मृतस्तूर्णं, च्छत्रातिच्छत्रमैत्र्यभाक् । तदा भुञ्जीत राज्यं कस्तत्तवेदं ममाखिलम् ॥ १६ ॥ प्रोक्तं प्रभाकरेणाथ, यद्येवं देव ! तत्वतः । तदा मद्भवने भोक्तुं, प्रसादः क्रियतामिति ॥ १७ ॥ पार्थिवेन तथेत्युक्ते, प्रातस्तेन पुरोधसा । आह्वायि भवने भूपः, सपौरः सपरिच्छदः ॥ १८ ॥ भोजितो भोज्यलेह्यान्नैः, सुस्वादुस्वादसन्दरैः । रत्नसिंहासनासीनः, सत्कृतश्चन्दनादिभिः ॥ १९ ॥ साराऽलंकारवस्त्राद्यैः, परिस्कृत्य प्रभाकरः । साक्षा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मातापितादि-
सह दिक्षा ।

दशेषपौराणां, तं कुमारकमार्प्पिपत् ॥८२०॥ स्वयं चकार हर्षेण, नृपस्योत्संगसंगतम् । माणिक्यमौक्तिकाद्यं च, ढौकनीयमढौकयत् ॥२१॥ श्यामाधःकृतवक्त्रस्तु, क्षणेऽत्र क्षितिपोऽभवत् । पौरैरभाणि किं दुःखं, हर्षस्थानेऽपि ते प्रभो ! ॥ २२ ॥ अथ प्रोवाच भूपालः, कामं लज्जा दुनोति माम् । वैलक्ष्याद‌तिरुक्षात्मा, नास्मि शक्नोमि भाषितुम् ॥ २३ ॥ मूल्यं तुल्यं न यस्यैषाऽवश्यं कृत्स्नाऽपि काश्यपी । तन्मयामलकं प्राणनिर्याणैकनिवारकम् ॥ २४ ॥ कुमारमूल्यतां नीतं, कृतघ्नाध्वनि तस्थुषा । पीयूषवत्परार्थाय, सृष्टः एकः प्रभाकरः ॥ २५ ॥ " अपेक्षन्ते न च स्नेहं, न पात्रं न दशान्तरम् । सदा लोकहिते सक्ता, रत्नदीपा इवोत्तमाः ॥ २६ ॥ " ते बभूवुर्न मिथ्या च, सर्वथा शपथास्तव । इत्थं स्वस्थत्वनिर्वाहात्, साधु साधु प्रभाकर ! ॥ २७ ॥ चक्रे त्वया किमेवं चेत्युक्तोऽसौ भूभृदादिभिः । पितृशिक्षादिवृत्तान्तं, समस्तं स्वमवोचत ॥ २८ ॥ यथा दुष्टाशयाद्यैः प्राक्, प्रकामोपकृतैर्हतः । यथा चोत्तम-सांगत्य-परीक्षार्थमिहागतः ॥ २९ ॥ एवं चैषां परप्रीत्या, याति कालो मनस्विनाम् । उत्तमैः सह सांगत्यमित्यर्थे सुस्थिरात्मनाम् ॥ ८३० ॥ इत्थं दोषगुणप्रधानपरिषत्संपर्किणां प्राणिनां, स्युर्दोषाश्च गुणाश्च यद्ध्रुवमहोऽत्रस्यन्कुरङ्गीदृशः । तद्दोषैकसदो व्युदस्य भवती दीक्षां जिघृक्षुः क्षणात्, श्रेयः श्रीप्रणयार्प्पणप्रतिभुवस्तानाश्रये सद्गुरून् ॥ ३१ ॥ हे मातापितरौ कान्ताः, प्रोच्यतां प्रभवापि भोः । दीक्षमाणे मयि प्रातः, किं करिष्यथ कथ्यताम् ॥ ३२ ॥ [1]अङ्गारदाहकरपष्टदृष्टान्तेनाऽजनिष्टवः । सौहित्यं सत्यमद्यापि, किं न वैषयिके सुखे ॥ ३३ ॥ तथा—यथेह लवणाम्भोभिः, पूरितो लवणोदधिः । शारीरमानसैर्दुःखैरसंख्येयैस्तथा भवः ॥३४॥ यश्च कश्च न कस्यापि, जायते सुखविभ्रमः । मधुदिग्धासिधाराग्रग्रासवन्नैष सुन्दरः ॥ ३५ ॥ अपि च—सा बुद्धिः प्रलयं प्रयातु कुलिशं तस्मिन् श्रुते पात्यतां, वल्गन्तः प्रविशन्तु ते हुतभुजि ज्वालाकराले गुणाः । यैः सर्वैः शरदिन्दुकुन्दधवलैः प्राप्तैरपि प्राप्यते, भूयोऽप्यत्र पुरन्ध्रिगर्भनरकक्रोडाधिवासव्यथा ॥ ३६ ॥ इति निरवधिदुःखदुःसहे तदिह सुखं न भवेऽस्ति वास्तवम् । यदि सुखमभिलाषुकाः स्थ भो विरतिरमाऽद्य मया सहेष्यताम् ॥ ३७ ॥ तओ—अंसुपवायझलज्झल-विलोयणा मायतायकंताओ । पभणंति जुत्तं-

१ मधुबिन्द्वादि B ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुत्तं, वयंपि सह पव्वइस्सामो ॥ ३८ ॥ उवसंताओ कंताओ, ताउ जंपंति जंपियं जमिह। विरहदुहाओ पेम्माउ, अणुचियं अम्ह तं खमह ॥३९॥ पभवो अणुन्नवित्ता, पत्तो पल्लीए इय भणेऊण। लहु संवहिउं अहमेमि, लेमि सह अज्ज पव्वज्जं ॥८४०॥ सुमुहुत्ते संपत्ते, उदग्गसव्वंगचंगसिंगारो। सिवियारूढो अम्मा-पिऊहिं सह पट्ठिओ जंबू ॥ ४१ ॥ कंताउ अट्ठ ताउ, नियनिय-पेईहराउ नीहरिउ। परमाए रिद्धीए, सिवियारूढाउ पत्ताउ ॥ ४२ ॥ पभवो पभूयपहाण-पुरिसपरिवारपरिवुडो पत्तो। नरनाहा-णुन्नाओ, सिबियाए सहेव संचलिओ ॥ ४३ ॥ जंबूसामी सव्वाहिं, ताहिं सव्वाहिं अणुगमिज्जंतो। सयमागंतूणमणाढिएणमाढ-त्तसव्विड्ढी ॥ ४४ ॥ धरियधवलायपत्तो, ढलंतसियचारुचामरुप्पीलो। नमिरनिरंतरनच्चिर-नारीगिज्जंतजसपसरो ॥ ४५ ॥ सलहि-ज्जंतो मागहजणेण खयरेहिं कयकुसुमवुट्ठी। तूररवाडंबरभरियनहयलो काणणंमि गओ ॥ ४६ ॥ पंचमगणहारिसुहम्मसामिणा दिन्नपुन्नपव्वज्जो। जाओ सपरीवारो, महाजई उज्जयविहारो ॥ ४७ ॥ अहिगयसमत्थसुत्तत्थवित्थरो वित्थरंतवरकित्ती। छत्तीसगु-णागारं, गुरुणा ठविओ नियपयंमि ॥ ४८ ॥ पसरियलोयालोयाऽऽगासपयासासमाणनाणधरो। निव्वाणगए सोहम्मसामिए संघधुर-धवलो ॥ ४९ ॥ पभवं नियपट्टे ठाविऊणमुक्कंठिओ व्व मुत्तीए। पत्तो ओसप्पिणीचरमकेवली जंबूसामी गुरू ॥ ८५० ॥ चरमकेवलिता वाऽस्या गाथातोऽवसेया ॥ मण-परमोहि-पूलाए, आहारगखवगउवसमे कप्पे। संजमतिय केवलि-सिज्झणा य जंबुंमि वोच्छिन्ना ॥ ५१ ॥ संते वि संतविसए अवहाय सव्वे, जायं महाजइमहं पणमामि जंबुं। दट्ठूण तं विरइरज्जमुवागओ जो, लुंटंतओ वि तमहं पभवंपि वंदे ॥ ८५२ ॥

॥ इइ सिरिजंबूसामिचरियम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीजम्बूस्वामिचरित्रे अनुक्रमणिका ।

पत्रम्	विषयः
२	भवदेवदीक्षा ।
३	भवदेव–नागिलाप्रश्नोत्तराणि ।
४	महिषीभूतपुत्रप्रतिबोधः ।
५	उच्छिष्टभोजिदृष्टान्तेन नागिलया स्थिरीकरणं ।
६	भवदत्तस्य सागरदत्तत्वेनोत्पत्तिः ।
७	शिवकुमारस्य सागरदत्तमुनिसमागमः घोराभिग्रहश्च ।
१०	चतुर्गतिदुःखानि ।
११	अनादृतदेवोत्पत्तिः ।
१२	धारिणीदोहदपूरणम् ।
१३	जंम्बूकुमारब्रह्मनियमः ।
१४	जंबू–प्रभवचोरसंवादः ।
१५	मधुबिन्दुदृष्टान्तः ।
१६	कुबेरदत्त–कुबेरदत्ताज्ञातम् ।
१९	महेश्वरदत्तज्ञातम् ।
२१	मकरदाढावेश्याकथा ।
२४	भौताचार्यकथा ।
२५	अतिलोभे वानरमिथुनकथा ।
२६	कृतपूतना–द्यूतकारप्रसङ्गः ।
२७	सिद्धदत्तेन पुस्तिकाक्रयणम् ।
३०	सुंदरश्रेष्ठिकथा ।
३१	हेममयूरो वायसीकृतः ।
३२	विजयसुजयोर्निष्फला दीक्षाभिलाषा।
३५	ईर्ष्यालुस्थविरयोः कथा ।
३६	योगराजेन विसंवादिराज्यस्थितिप्रेक्षणम् ।
४१	कलिराज्यकथा ।
४४	मित्रत्रितयीकथा ।
४६	अमरसेनप्रवरसेनभ्रात्रोः कथा ।
४८	अतिलोभे लोहर्गलागणिकाकथा ।
५४	धर्मशास्त्रे स्त्रीणां स्वभावजा दोषाः
५५	साधुसमागमे प्रभाकरकथा ।
६१	सपरिवारेण जम्बू–प्रभवयोः दीक्षा

॥ इति अनुक्रमणिका ॥

छपाय छे !

उपदेशमाळानी अप्रसिद्ध दोघट्टी नामनी टीका के जे वादिदेवसूरिना शिष्य श्रीरत्नप्रभसूरिजीए रचेली छे. रचना काळ लगभग बारमा सैकानो छे. बारहजार श्लोक प्रमाण ४५ थी ५० फर्मानो आ ज प्रमाणे कागळ तथा छपाइमां ग्रंथ प्रसिद्ध थशे.

ली. प्रकाशक.

For Private And Personal Use Only